RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107
संयुक्त संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
प्रधान संपादक
राजीव कुमार, 9431210181
सहायक संपादक
प्रभाकर कुमार राय
प्रबंध संपादक
मुकेश कुमार सिंह, 9534207188
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
मगध प्रमंडल : ब्रजेश पांडेय, 9473031113
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
सहरसा : आशीष कुमार झा, 9430633262
समस्तीपुर : सुनील कुमार, 9709714252
कटोरिया : रविशंकर सिंह (विशेष संवाददाता) 9771697391
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
दरभंगा : जाहिद अनवर : 8541849415
बाराहाट : हेमन्त कुमार (संवाददाता)
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 9771654511
दिल्ली : नवल वत्स
ग्रेटर नोएडा : अरमान कुमार, 8920215318
प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी भाजपा

जय जयराम सिंह
समाजसेवी

अरुण कुमार सिंह
रिटायर कॉमेंडेंट

चर्चित बिहार

वर्ष : 6, अंक :1, सितम्बर 2018, मूल्य : 15/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

12 एलिट इंस्टीट्यूट ने शुरू की अटल ज्ञानोदय योजना

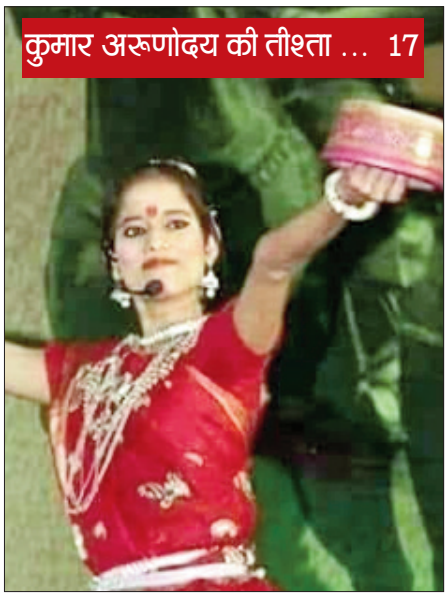

कुमार अरूणोदय की तीश्ता ... 17

हौसलों की उड़ान से ... 22

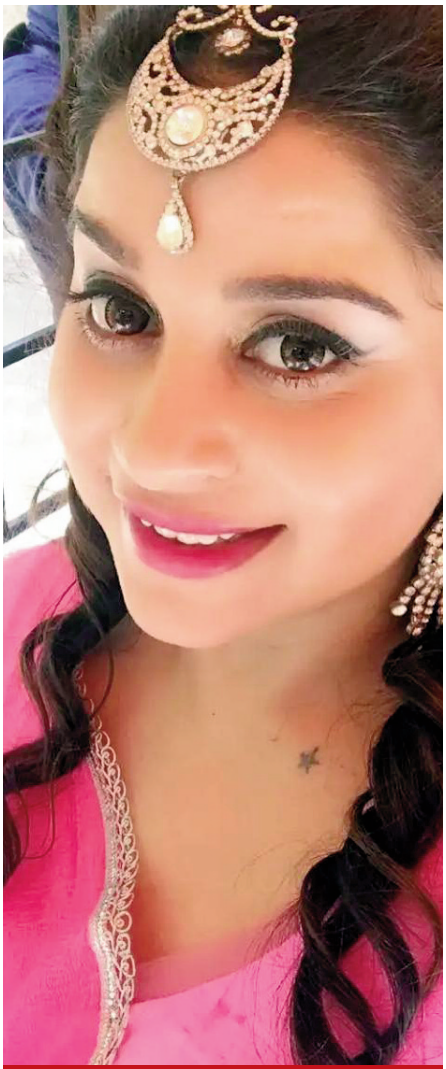

अनारा गुप्ता का ... 44

स्वर्णिम सफर जारी रहे

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

बीते दिनों सोशल मीडिया पर एक संदेश हंसने वाले इमोजी के साथ खूब फारवर्ड किया गया, कि रिक्शेवाली की बेटी ने स्वर्ण पदक जीता, रिक्शेवाले के बेटे ने परीक्षा में टाप किया, रिक्शेवाले का बेटा सीए बना तो मेरे बच्चे भी मुझे रिक्शा चलाने कह रहे हैं। हमारा हास्यबोध कितना गिर चुका है और पूंजी का अभिमान हममें किस कदर भर चुका है, यह उसका एक नमूना भर है। यह इस बात का भी उदाहरण है कि हम समाज में यथास्थितिवाद के पोषक हैं। रिक्शेवाले, कूड़ा उठाने वाले या मेहनत-मजदूरी करने वालों के बच्चे सारी विडंबनाओं को सहते हुए सुविधा-संपन्न बच्चों से आगे निकल जाते हैं, तो हमें कहीं न कहीं बुरा लगता है। क्योंकि हमारी मानसिकता यही बन चुकी है कि कामगार वर्ग के बच्चे कामगार ही बन सकते हैं, जबकि अपने बच्चों के लिए हम सारा आसमान चाहते हैं। सोशल मीडिया पर इस तरह के संदेश प्रसारित-प्रचारित करने के पीछे हैसियत की श्रेष्ठता ही छिपी होती है। बहरहाल, यह संदेश स्वप्ना बर्मन के हेप्टाथलॉन में स्वर्णपदक जीतने के बाद खूब चला। जकार्ता में हुए 18वें एशियाई खेलों में स्वप्ना ने यह इतिहास रचा, इससे पहले हेप्टाथलॉन में भारत ने यह कमाल नहीं किया था। हेप्टाथलॉन में सात प्रतियोगिताएं होती हैं - 100 मीटर बाधा दौड़, ऊंची कूद, शॉट पुट, लंबी कूद, 200 मीटर, भाला फेंक, और 800 मीटर। स्वप्ना ने इन सब में कमाल का प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक पर अपनी दावेदारी जताई। स्वप्ना के दोनों पैरों में छह-छह उंगलियां हैं, इसलिए साधारण जूतों में उन्हें तकलीफ होती है, फिर भी उन्होंने सामान्य जूतों से ही प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। अब शायद मशहूर कंपनी नाइकी उनके लिए खास जूते बनाएगी। स्वप्ना की इस उपलब्धि में बार-बार यह कहा जा रहा है कि उनके पिता रिक्शाचालक हैं, लेकिन फिर भी अभावों में उन्होंने यह कमाल कर दिखाया। सच यह है कि स्वप्ना के पिता पहले रिक्शा चलाते थे, लेकिन पिछले 5 सालों से वे लकवाग्रस्त होकर बिस्तर पर ही हैं। स्वप्ना के स्वर्णविजेता बनने में उनके कोच सुभाष सरकार की 7 सालों की कड़ी मेहनत और त्याग है। सोशल मीडिया के खिलाड़ी चाहें तो इस तरह के समर्पित लोगों का भी मजाक बना सकते हैं। क्योंकि संपन्न वर्ग दो-चार रुपयों के लिए रिक्शेवालों से झिकझिक कर सकता है, लेकिन उनके होनहार बच्चों के लिए कुछ करने का मौका आए, तो बहुतों के हाथ पीछे खिंच जाते हैं। बहरहाल, इस बार एशियाड में केवल स्वप्ना ने ही इतिहास नहीं रचा, बल्कि भारत का प्रदर्शन भी ऐतिहासिक रहा है। इन खेलों में भारत ने 15 स्वर्ण, 24 रजत और 30 कांस्य समेत कुल 69 पदक जीते। हालांकि भारत इस बार पदक तालिका में टॉप-5 में जगह नहीं बना पाया। उसे 8वां स्थान मिला। लेकिन एशियाड के 67 साल के इतिहास में सबसे ज्यादा स्वर्ण और कुल पदक जीतने के लिहाज से इस बार का प्रदर्शन सबसे बेहतरीन रहा। 1951 के एशियाड में भारत ने कुल 51 पदक जीते थे। तब भारत को 15 स्वर्ण, 16 रजत और 20 कांस्य पदक मिले थे। और पदक तालिका में उसका स्थान दूसरा था। 2014 में इंचियोन एशियाड में भी भारत 8वें स्थान पर रहा था, जबकि 1986 सियोल एशियाड में भारत को पांचवां स्थान मिला था। इस बार के एशियाड में टॉप-3 में चीन, जापान और दक्षिण कोरिया रहे। आबादी के लिहाज से भारत इन सब पर बीस है, फिर भी हमारे खिलाड़ी इनके मुकाबले क्यों पिछड़ जाते हैं, यह सवाल एक बार खड़ा हो गया है। इसका एक सीधा जवाब तो खेलसंघों में चल रही राजनीति और भ्रष्टाचार ही है, इसके अलावा सुविधाओं का अभाव, खेलों में करियर न बनाने की सोच, लिंगभेद, आर्थिक बदहाली जैसे कारण भी प्रमुख हैं। वैसे इस बार एशियाई खेलों में भारत ने एथलेटिक्स, रोइंग, निशानेबाजी, कुश्ती, टेनिस, ब्रिज, मुक्केबाजी इन सबमें कमाल कर दिखाया है। इनमें अधिकतर विजेता खिलाड़ी साधारण पृष्ठभूमि के ही थे। राष्ट्रीय खेल हाकी में भारत का प्रदर्शन उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। हालांकि महिला हाकी टीम ने फाइनल तक का सफर कर 20 सालों का पदकों का सूखा खत्म किया। उसकी कप्तान रानी रामपाल एशियाड के समापन में भारत की ध्वजवाहक बनीं। उम्मीद है भारतीय खिलाड़ी अपना स्वर्णिम सफर आगे भी जारी रखेंगे।

अलविदा अटलजी

भारत रत्न और तीन बार प्रधानमंत्री रहे अटल बिहारी वाजपेयी (93) शुक्रवार शाम 4:56 बजे पंचतत्व में विलीन हो गए। अटलजी की दत्तक पुत्री नमिता भट्टाचार्य ने उन्हें मुखाग्नि दी। अंत्येष्टि में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई देशों के नेता मौजूद रहे। अंतिम यात्रा के दौरान भाजपा मुख्यालय से स्मृति स्थल के पांच किलोमीटर रास्ते पर हजारों लोगों ने अटलजी को पुष्प चढ़ाए। इस दौरान नरेंद्र मोदी अंत्येष्टि स्थल तक पैदल साथ आए। उनके अलावा भाजपा अध्यक्ष अमित शाह, गृह मंत्री राजनाथ सिंह, शिवराज सिंह चौहान समेत कई वरिष्ठ भाजपा नेता भी साथ-साथ पैदल चले।

स्मृति स्थल पर तीनों सेना प्रमुख, रक्षा राज्य मंत्री सुभाष भामरे, रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण, लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन, नरेंद्र मोदी, उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामगेयाल वांगचुक, बांग्लादेश के विदेश मंत्री अबुल हसन महमूद अली, नेपाल के विदेश मंत्री प्रदीप कुमार, अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति हामिद करजई, श्रीलंका के कार्यवाहक विदेश मंत्री तिलक मारापना, लालकृष्ण आडवाणी, भाजपा अध्यक्ष अमित शाह, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने श्रद्धांजलि दी। अटलजी की नातिन निहारिका को सेना ने अटलजी की पार्थिव देह पर लिपटा तिरंगा सौंपा। स्मृति स्थल पर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और सभी दलों के प्रमुख नेता भी मौजूद थे। यमुना किनारे डेढ़ एकड़ जमीन पर अटलजी का स्मृति स्थल बनाया जाएगा।

सभी दलों के नेता भाजपा मुख्यालय पहुंचे

अंतिम दर्शन के लिए अटलजी की पार्थिव देह को सुबह 9 बजे उनके आवास से भाजपा मुख्यालय लाया गया था। यहां सभी दलों के नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। अटलजी ने गुरुवार शाम 5.05 बजे एम्स में अंतिम सांस ली थी। वे नौ साल से बीमार थे और 67 दिन से एम्स में भर्ती थे। पार्टी मुख्यालय में नरेंद्र मोदी, पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, भाजपा अध्यक्ष अमित शाह समेत पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने अटलजी को पुष्पांजलि दी। अन्य दलों के नेता भी भाजपा मुख्यालय आए। इनमें सपा नेता मुलायम सिंह यादव, शिवसेना अध्यक्ष उद्धव ठाकरे, माकपा महासचिव सीताराम येचुरी, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया आप सांसद संजय सिंह, द्रमुक नेता ए राजा, कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह शामिल थे। आडवाणी पूरे वक्त भावुक नजर आए।

मॉरिशस ने अपना राष्ट्रीय ध्वज आधा झुकाया

शुक्रवार को भूटान के नरेश जिग्मे खेसार नामगेयाल वांगचुक ने अटलजी को श्रद्धांजलि दी। नेपाल के विदेश मंत्री पीके ग्यावाल, बांग्लादेश के विदेश मंत्री अबुल हासन महमूद अली, श्रीलंका के कार्यकारी विदेशी मंत्री लक्ष्मण किरीला, अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति हामिद करजई और पाकिस्तान के कानून मंत्री अली जफर अंत्येष्टि में मौजूद रहे। मॉरिशस ने अटलजी के निधन पर गहरा दुख जताया। शोक स्वरूप मॉरिशस सरकार ने अपना राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका दिया।

राहुल गांधी और मोहन भागवत ने आवास पर जाकर श्रद्धांजलि दी

अटलजी के पार्थिव शरीर को गुरुवार शाम एम्स से लाकर अंतिम दर्शन के लिए कृष्ण मेनन मार्ग स्थित उनके आवास पर रखा गया था। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत और कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने इसी आवास पर पहुंचकर अटलजी को शुक्रवार सुबह श्रद्धांजलि दी। वहीं, राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, मोदी, यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी, मनमोहन सिंह समेत कई नेताओं ने गुरुवार देर रात श्रद्धांजलि दी।

12 राज्यों में शासकीय अवकाश

अटलजी के निधन पर 7 दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गई। शुक्रवार को देश के 12 राज्यों ने राजकीय शोक और अवकाश की घोषणा की। इनमें दिल्ली, उत्तरप्रदेश, गुजरात, मध्यप्रदेश, ओडिशा, पंजाब, बिहार, झारखंड, हरियाणा, तेलंगाना, तमिलनाडु और कर्नाटक राज्य शामिल हैं। इन राज्यों में सरकारी कार्यालय, स्कूलों और कॉलेजों में अवकाश रखा गया। सुप्रीम कोर्ट और दिल्ली हाईकोर्ट में भी शुक्रवार को एक बजे तक ही काम हुआ। दिल्ली में व्यापारियों ने भी

सभी बाजार बंद रखे।

अमेरिका, चीन, पाकिस्तान, ब्रिटेन और बांग्लादेश ने दुख जताया

पाकिस्तान तहरीक-इंसाफ के नेता और प्रधानमंत्री बनने जा रहे इमरान खान ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी राजनीति के एक बड़े व्यक्तित्व थे। भारत-पाक संबंधों में सुधार के लिए उनके प्रयासों को हमेशा याद किया जाएगा। चीन के राजदूत लुयो झाओहुई ने ट्वीट किया- "अटल बिहारी वाजपेयी के निधन से गहरा दुख पहुंचा है।" भारत स्थित अमेरिकी दूतावास ने कहा, "पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने शासनकाल में अमेरिका के साथ मजबूत रिश्तों पर जोर दिया।" ब्रिटेन और जापान के राजदूत ने कहा कि वे वैश्विक नेताओं में से एक थे। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कहा कि बांग्लादेश के लोगों में भी अटल बिहारी वाजपेयी काफी लोकप्रिय थे।

मोदी ने कहा- पिता का साया उठ गया

नरेंद्र मोदी ने अटलजी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनका जाना सिर से पिता का साया उठने जैसा है। इससे पहले उन्होंने ट्वीट में कहा- ह्यह्यमैं निःशब्द हूं, शून्य में हूं, लेकिन भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा है। हम सभी के श्रद्धेय अटलजी हमारे बीच नहीं रहे। यह मेरे लिए निजी क्षति है। अपने जीवन का प्रत्येक पल उन्होंने राष्ट्र को समर्पित कर दिया था। उनका जाना, एक युग का अंत है।

अटल बिहारी वाजपेयी की उस बेटी के बारे में, जिन्होंने दी मुखाग्नि

देश के तीन बार प्रधानमंत्री रहे अटल बिहारी वाजपेयी शुक्रवार शाम को पंचतत्व विलीन हो गए। वाजपेयी का अंतिम संस्कार दिल्ली के राजघाट के पास स्थित स्मृति स्थल में हुआ जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी से लेकर देश की कई जान-मानी हस्तियां मौजूद थीं। कई देशों के प्रतिनिधि और राष्ट्राध्यक्ष भी आखिरी विदाई में शामिल हुए। इस दौरान जब नमिता भट्टाचार्य ने अपने पिता अटल बिहारी वाजपेयी को मुखाग्नि दी तो सभी की निगाहें उन पर ही टिक गईं। अटल अविवाहित थे लेकिन नमिता को उन्होंने गोद ली हुई बेटी बताया था इसलिए उनका सब कुछ नमिता ही थीं। आखिरी वक्त तक नमिता उनके साथ रहीं और जब उन्होंने आखिरी सांस ली तो वह फूट-फूटकर रोने लगीं। नमिता भट्टाचार्य राजकुमारी कौल की बेटी हैं जिन्हें अटल बिहारी वाजपेयी ने 70 के दशक में दत्तक पुत्री माना था। नमिता के पिता ब्रिज नारायण के निधन के बाद अटल ही कौल परिवार के संरक्षक और अभिभावक बन गए थे। नमिता के साथ उनके पति रंजन भट्टाचार्य और बेटी निहारिका भी अटल बिहारी वाजपेयी के आवास में रहते हैं। रंजन भट्टाचार्य के माता-पिता नहीं थे इसलिए वह अटल जी को ही बापजी कहकर बुलाते थे । रंजन ने ओएसडी के रूप में भी कार्य किया था, जबकि उनके ससुर अटल बिहारी वाजपेयी उस वक्त भारत के प्रधानमंत्री थे।

बेटी निहारिका के साथ नमिता

रंजन दिल्ली के श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से इकॉनमिक्स ऑनर्स से ग्रैजुएट हैं। इसके बाद उन्होंने ओबेरॉय ग्रुप ट्रेनी के रूप में जॉइन किया और श्रीनगर के ओबेरॉय पैलेस में जनरल मैनेजर तक की रैंक हासिल की 24 साल की उम्र में। नमिता से वह कॉलेज में मिले थे। यह भी कहा जाता है कि वाजपेयी की अनुमति के बाद ही दोनों की शादी हुई थी।

अटल के दत्तक परिवार का हिस्सा थीं मिसेज कौल

नमिता की छोटी बहन भी हैं जिनका नाम नम्रता बताया जाता है। नम्रता पेशे से डॉक्टर हैं और लंबे समय से अमेरिका में हैं। नमिता के जिक्र के साथ ही उनकी मां राजकुमारी कौल का भी जिक्र आता है। वह भी नमिता के साथ ही वाजपेयी के आवास में रहती थीं और अटल बिहारी वाजपेयी के दत्तक परिवार का हिस्सा थीं।

'अटल की सेवा की, हमेशा उनके साथ रहीं'

उनके बारे में वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार कुलदीप नैय्यर ने टेलीग्राफ में लिखा था, ह्यसंकोची मिस कौल अटल की सबकुछ थीं। उन्होंने जिस तरह अटल की सेवा की, वह कोई और नहीं कर सकता था। वह हमेशा उनके साथ रहीं।ह्ल मई 2014 में जब मिसेज कौल का निधन हुआ तो एलके आडवाणी, राजनाथ सिंह, सुषमा स्वराज से लेकर सोनिया गांधी भी उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुई थीं। हालांकि अटल बिहारी वाजपेयी तब तक अल्जाइमर से पीड़ित हो चुके थे।

अटल बिहारी बाजपेयी की 6 अनकही कहानियां

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन से तमाम लोगों को बड़ा धक्का लगा है. राजनेताओं से लेकर फिल्म और खेल जगत के सितारें भी उन्हें श्रद्धांजलि देने से पीछे नहीं हट रहे हैं. आज उनकी अंतिम संस्कार किया गया और उनकी अंतिम यात्रा में मंत्री भी शामिल हुए. आज भले ही अटल जी हम सब के बीच नहीं हैं पर उनकी दूरगामी सोच, कविताओं और साहित्य हमेशा उनकी याद दिलाएगी। उनके जीवन में कई ऐसी घटनाएं घटीं, कई उतार चढ़ाव आए लेकिन वह कभी भी हार नहीं माने। वह हमेशा अपनी गलतियों को सीख की तरह माना है. आज हम आपको उन इतिहास के पन्नों की कुछ ऐसी ही घटनाए बताएंगे जो अटल बिहारी वाजपेयी के साथ घटित हुईं थीं.

1. एक घटना ऐसी है जब इंदिरा गांधी ने अटल बिहारी वाजपेयी की आलोचना करते हुए कहा था कि वो बहुत हाथ हिला-हिलाकर बात करते हैं। इसपर अटल जी ने जवाब दिया था 'वो सब तो ठीक है, आपने किसी को पैर हिलाकर बात करते देखा है क्या?'
2. यह घटना 1975 की है जब देश में आपातकाल लागू था और इंदिरा गांधी की खूब आलोचना हुई थी. 1977 में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस बुरी तरह हार गई थी और उसके अलावा देश में जनता पार्टी की सरकार बनी थी। तब कांग्रेस ने इंदिरा गांधी को पार्टी का नंबर वन नेता बताया था। इसी पर अटल जी ने कहा था 'इंदिरा गांधी नंबर एक, नंबर दो कौन है? नारी नंबर एक, बाकी सब दस नंबरी'।
3. तीसरी घटना 1979 की है जब अटल बिहारी वाजपेयी आगरा गए हुए थे। उस वक़्त देश में दाल का संकट छाया हुआ था। उस पर उन्होंने कहा था कि दाल भी मेरी ही तरह है। अगर घर में मेहमान आ जाएं तो 'तीन बुलाए तेरह आए, दे दाल में पानी' जैसी स्थिति हो जाती है।
4. 1999 में जब प्रधानमंत्री रहते अटल जी बस यात्रा करते हुए लाहौर पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने वहां के गवर्नर हाउस में जबरदस्त भाषण दिया था और पाकिस्तान को फटकार लगाते हुए कहा था 'आप दोस्त बदल सकते हैं, पड़ोसी नहीं। इतिहास बदल सकते हैं, भूगोल नहीं'।
5. 1985 में जब ग्वालियर में लोकसभा चुनाव में 45 हजार वोटों से पिछड़ गए थें. इसके बाद वह अपनी पराजय को स्वीकार करते हुए सिंधिया को बधाई दी थी और अपने समर्थकों से कहा था- भूखे भजन न होय गोपाला, चल चलें चंबल की शाला। साथ ही उन्होंने ये भी कहा था- बड़े बेआबरू होकर तेरे कूचे से निकले हम।
6. एक घटना 1980 की है. हरियाणा के मुख्यमंत्री रहे भजन लाल ने अपने समर्थकों सहित जनता पार्टी का साथ छोड़कर कांग्रेस का हाथ थाम लिया था। तब वाजपेयी जी ने उनपर चुटकी लेते हुए कहा था 'भजनलाल पूरी भजन मंडली सहित कांग्रेस में कीर्तन करने चले गए'।

आजीवन क्यों कुंवारे रह गए अटल बिहारी वाजपेयी?

भारत के राजनीतिक इतिहास में अटल बिहारी वाजपेयी का संपूर्ण व्यक्तित्व शिखर पुरुष के रूप में दर्ज है. उनकी पहचान एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रशासक, भाषाविद, कवि, पत्रकार व लेखक के रूप में है. उन्होंने राजनीति को दलगत और स्वार्थ की वैचारिकता से अलग हट कर अपनाया और उसको जिया. जीवन में आने वाली हर विषम परिस्थितियों और चुनौतियों को स्वीकार किया. नीतिगत सिद्धांत और वैचारिकता का कभी कत्ल नहीं होने दिया. राजनीतिक जीवन के उतार चढ़ाव में उन्होंने आलोचनाओं के बाद भी अपने को संयमित रखा. राजनीति में धुर विरोधी भी उनकी विचारधारा और कार्यशैली के कायल रहे. पोखरण जैसा आणविक परीक्षण कर दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका के साथ दूसरे मुल्कों को भारत की शक्ति का अहसास कराया.

जनसंघ के संस्थापकों में से एक अटल बिहारी वाजपेयी के राजनीतिक मूल्यों की पहचान बाद में हुई और उन्हें भाजपा सरकार में भारत रत्न से सम्मानित किया गया.

अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म मध्य प्रदेश के ग्वालियर में 25 दिसम्बर 1924 को हुआ था. उनके पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी शिक्षक थे. उनकी माता कृष्णा जी थीं. वैसे मूलतः उनका संबंध उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के बटेश्वर गांव से है लेकिन, पिता जी मध्य प्रदेश में शिक्षक थे. इसलिए उनका जन्म वहीं हुआ. लेकिन, उत्तर प्रदेश से उनका राजनीतिक लगाव सबसे अधिक रहा. प्रदेश की राजधानी लखनऊ से वे सांसद रहे थे.

कविताओं को लेकर उन्होंने कहा था कि मेरी कविता जंग का एलान है, पराजय की प्रस्तावना नहीं. वह हारे हुए सिपाही का नैराश्य-निनाद नहीं, जूझते योद्धा का जय संकल्प है. वह निराशा का स्वर नहीं, आत्मविश्वास का जयघोष है. उनकी कविताओं का संकलन 'मेरी इक्यावन कविताएं' खूब चर्चित रहा जिसमें..हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा..खास चर्चा में रही.

राजनीति में संख्या बल का आंकड़ा सर्वोपरि होने से 1996 में उनकी सरकार सिर्फ एक मत से गिर गई और उन्हें प्रधानमंत्री का पद त्यागना पड़ा. यह सरकार सिर्फ तेरह दिन तक रही. बाद में उन्होंने प्रतिपक्ष की भूमिका निभायी. इसके बाद हुए चुनाव में वे दोबारा प्रधानमंत्री बने. राजनीतिक सेवा का व्रत लेने के कारण वे आजीवन कुंवारे रहे. उन्होंने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लिए आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया था.

अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी राजनीतिक कुशलता से भाजपा को देश में शीर्ष राजनीतिक सम्मान दिलाया. दो दर्जन से अधिक राजनीतिक दलों को मिलाकर उन्होंने राजग बनाया जिसकी सरकार में 80 से अधिक मंत्री थे, जिसे जम्बो मंत्रीमंडल भी कहा गया. इस सरकार ने पांच साल का कार्यकाल पूरा किया.

अटल बिहारी वाजपेयी राजनीति में कभी भी आक्रमकता के पोषक नहीं थे. वैचारिकता को उन्होंने हमेशा तवज्जो दिया. अटलजी मानते हैं कि राजनीति

उनके मन का पहला विषय नहीं था. राजनीति से उन्हें कभी-कभी तृष्णा होती थी. लेकिन, वे चाहकर भी इससे पलायित नहीं हो सकते थे क्योंकि विपक्ष उन पर पलायन की मोहर लगा देता. वे अपने राजनैतिक दायित्वों का डट कर मुकाबला करना चाहते थे. यह उनके जीवन संघर्ष की भी खूबी रही.

वे एक कवि के रूप में अपनी पहचान बनाना चाहते थे. लेकिन, शुरूआत पत्रकारिता से हुई. पत्रकारिता ही उनके राजनैतिक जीवन की आधारशिला बनी. उन्होंने संघ के मुखपत्र पांचजन्य, राष्ट्रधर्म और वीर अर्जुन जैसे अखबारों का संपादन किया. 1957 में देश की संसद में जनसंघ के सिर्फ चार सदस्य थे जिसमें एक अटल बिहारी वाजपेयी भी थे. संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए हिंदी में भाषण देने वाले अटलजी पहले भारतीय राजनीतिज्ञ थे. हिन्दी को सम्मानित करने का काम विदेश की धरती पर अटलजी ने किया.

उन्होंने सबसे पहले 1955 में पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ा लेकिन उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। बाद में 1957 में गोंडा की बलरामपुर सीट से जनसंघ उम्मीदवार के रूप में जीत कर लोकसभा पहुंचे. उन्हें मथुरा और लखनऊ से भी लड़ाया गया लेकिन हार गए. अटल जी ने बीस सालों तक जनसंघ के संसदीय दल के नेता के रूप में काम किया.

इंदिरा गांधी के खिलाफ जब विपक्ष एक हुआ और बाद में जब देश में मोरारजी देसाई की सरकार बनी तो अटल जी को विदेशमंत्री बनाया गया. इस दौरान उन्होंने अपनी राजनीतिक कुशलता की छाप छोड़ी और विदेश नीति को बुलंदियों पर पहुंचाया. बाद में 1980 में जनता पार्टी से नाराज होकर पार्टी का दामन छोड़ दिया. इसके बाद

बनी भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में वह एक थे. उसी साल उन्हें भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष की कमान सौंपी गयी. इसके बाद 1986 तक उन्होंने भाजपा अध्यक्ष पद संभाला. उन्होंने इंदिरा गांधी के कुछ कार्यों की तब सराहना की थी, जब संघ उनकी विचारधारा का विरोध कर रहा था.

भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को आधुनिक भारत का निमार्ता कहा जाता है. उनकी छवि एक पढ़े लिखे और दूरद्दष्टा प्रधानमंत्री की रही है. भारतीय राजनीति में पिछले कुछ दशकों में नेहरू विरोधी विचारधारा के उभार के बाद उनकी एक नकारात्मक छवि को भी काफी प्रचार मिला है.

कहा जाता है कि संसद में इंदिरा गांधी को दुर्गा की उपाधि उन्हीं की तरफ से दी गई. उन्होंने इंदिरा सरकार की तरफ से 1975 में लादे गए आपातकाल का विरोध किया. लेकिन, बंग्लादेश के निर्माण में इंदिरा गांधी की भूमिका को उन्होंने सराहा था.

अटल हमेशा से समाज में समानता के पोषक रहे. विदेश नीति पर उनका नजरिया साफ था. वह आर्थिक उदारीकरण एवं विदेशी मदद के विरोधी नहीं रहे हैं लेकिन वह इमदाद देशहित के खिलाफ हो, ऐसी नीति को बढ़ावा देने के वह हिमायती नहीं रहे. उन्हें विदेश नीति पर देश की अस्मिता से कोई समझौता स्वीकार नहीं था

अटल जी ने लालबहादुर शास्त्री जी की तरफ से दिए गए नारे जय जवान जय किसान में अलग से जय विज्ञान भी जोड़ा. देश की सामरिक सुरक्षा पर उन्हें समझौता गवारा नहीं था. वैश्विक चुनौतियों के बाद भी राजस्थान के पोखरण में 1998 में परमाणु परीक्षण किया. इस परीक्षण के बाद अमेरिका समेत कई देशों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिया. लेकिन उनकी दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति ने इन परिस्थितियों में भी उन्हें अटल स्तंभ के रूप में अडिग रखा. कारगिल युद्ध की भयावहता का भी डट कर मुकाबला किया और पाकिस्तान को धूल चटायी.

उन्होंने दक्षिण भारत के सालों पुराने कावेरी जल विवाद का हल निकालने का प्रयास किया. स्वर्णिम चतुर्भुज योजना से देश को राजमार्ग से जोड़ने के लिए कॉरिडोर बनाया. मुख्य मार्ग से गांवों को जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री सड़क योजना बेहतर विकास का विकल्प लेकर सामने आई. कोंकण रेल सेवा की आधारशिला उन्हीं के काल में रखी गई थी.

एक दशक से अटल बिहारी वाजपेयी का एकांतवास

13 मई 2004. अटल बिहारी वाजपेयी अपनी कैबिनेट की आखिरी बैठक खत्म कर राष्ट्रपति भवन के लिए चल दिए थे. एनडीए चुनाव हार चुका था. पास ही में कांग्रेस के दफ़्तर में पार्टी के कार्यकर्ता जश्न मना रहे थे. कांग्रेस अगले प्रधानमंत्री के रूप में सोनिया गांधी की ताजपोशी को लेकर उत्साहित थे. इस्तीफा देने के बाद वाजपेयी ने टीवी पर दिए भाषण में कहा, "मेरी पार्टी और गठबंधन हार गया, लेकिन भारत की जीत हुई है." वाजपेयी को अगला विपक्ष का नेता बनना था, सुषमा स्वराज ने कैबिनेट की बैठक के बाद इस बाबत घोषणा भी की थी, लेकिन कोई यह नहीं जानता था कि वाजपेयी राजनीति छोड़ने की ओर बढ़ रहे हैं. जिसने देश को अपने भाषणों से मोह लिया था वो अब संन्यास लेने को तैयार था.

आपको ये भी रोचक लगेगा

'पाक-सऊदी के प्यार' में क्या मोदी ने खड़ी की दीवार?
कैसे होती है सीमा पार से भारत में ड्रग्स की तस्करी
विशेष विमान से यात्रा नहीं करेंगे इमरान खान
'कानून काम नहीं करेगा तो समाज सजा देगा'
अस्पताल में अटल बिहारी वाजपेयी, हाल लेने पहुंचे प्रधानमंत्री

अटल बिहारी वाजपेयी की लोकप्रियता को याद कर रहे हैं वरिष्ठ पत्रकार विजय त्रिवेदी.

भाषण देने की कला के माहिर, कवि और एक बड़े राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी पिछले 14 सालों से बीमार हैं. सोनिया गांधी ने महमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाया और लोकसभा में लाल कृष्ण आडवाणी ने विपक्ष के नेता की ज़िम्मेदारी संभाली.

वाजपेयी धीरे-धीरे सार्वजनिक जीवन से गायब हो रहे थे. हालांकि, सुषमा स्वराज ने कहा था कि बीजेपी के कद्दावर नेता वाजपेयी सार्वजनिक जीवन से रिटायर नहीं होंगे, लेकिन इसे लेकर राय अलग-अलग थी.

2005 में मुंबई के शिवाजी पार्क में भाजपा की रजत जयंती समारोह के दौरान एक रैली को संबोधित करते हुए वाजपेयी ने घोषणा की कि वो चुनावी राजनीति से रिटायर होंगे.

वाजपेयी ने इस रैली में सबसे छोटा भाषण दिया था. उन्होंने पार्टी में आडवाणी और प्रमोद महाजन को राम-लक्ष्मण की जोड़ी करार दिया था.

वाजपेयी उस वक़्त भी लखनऊ से सांसद थे. हालांकि खराब तबीयत की वजह से वो लोकसभा में नियमित रूप से शामिल नहीं हो पा रहे थे.

उन्होंने 2007 के उपराष्ट्रपति चुनाव में वोट दिया था. अटल व्हील चेयर पर वोट देने पहुंचे थे और उनकी इस तस्वीर को देखकर प्रशंसकों को भारी निराशा हुई थी.

वाजपेयी 2007 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए प्रचार करेंगे या नहीं, इस पर भी बहुत सी अटकलें थीं. आखिर में वो लखनऊ में एक चुनावी रैली में शामिल हुए.

आरएसएस के मुखपत्र पाञ्चजन्य ने बताया था कि वाजपेयी ने पहले ही राजनीति से संन्यास लेने की इच्छा व्यक्त की थी. वो उस साल वोट नहीं डाल सके.

वाजपेयी के 92वें जन्मदिन पर बीबीसी की खास पेशकश

2007 में वाजपेयी ने नागपुर के रेशिमबाग में आरएसएस एक कार्यक्रम में भाग लिया.

बीबीसी मराठी के रोहन नामजोशी याद करते हैं, "भारी भीड़ जुटी थी. व्हील चेयर से चलने वाले वाजपेयी को मंच पर लाने की खास लिफ्ट की व्यवस्था की गई थी. जब वो मंच पर पहुंचे तो लोग जबर्दस्त रूप से उत्साहित हो गए. मैंने देखा कि कई लोग अपने पैरों से चप्पल उतार कर उन्हें प्रणाम कर रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे वो देवी-देवताओं को करते हैं."

2009 में उन्होंने एक सांसद के रूप में अपना अंतिम कार्यकाल पूरा किया और फिर कभी चुनाव नहीं लड़े. क्या सोनिया गांधी साल 2004 में भारत की प्रधानमंत्री बन सकती थीं?

वाजपेयी की बीमारी क्या है?

2000 में प्रधानमंत्री रहते हुए मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में उनके दाहिने घुटने की सर्जरी हुई थी. इससे 2004 के बाद उनका घूमना फिरना सीमित हो गया.

लंबे समय से उनके दोस्त रहे एनएम घाटे कहते हैं, "2009 में वाजपेयी को स्ट्रोक पड़ा था, जिसके बाद से वो ठीक से बात नहीं कर सकते."

उन्हें एम्स में भर्ती किया गया जहां वो वेंटिलेटर पर रखे गए.

हमेशा इस पर अटकलें लगती हैं कि वाजपेयी अल्जाइमर या डिमेंशिया से पीड़ित हैं. हालांकि कोई इस बारे में आधिकारिक रूप से कुछ नहीं कहता है. 15 सालों से वाजपेयी का इलाज कर रहे डॉक्टर रणदीप गुलरिया ने भी वाजपेयी की डिमेंशिया की रिपोर्टों से इनकार किया था.

वाजपेयी को मीठा खाने का भी बहुत शौक है, लेकिन मधुमेह, गुर्दे की समस्या और मूत्रमार्ग के संक्रमण की वजह से इन व्यंजनों को उन्हें केवल खास मौकों पर ही परोसा जाता है और वो भी बहुत कम मात्रा में.

वाजपेयी ने जब नेहरू की तस्वीर मंगवाई

वो एक चूक, जिससे आडवाणी पड़ गए अलग थलग विवेचनाः आखिर क्या है सुब्रमणियन स्वामी और वाजपेयी की तल्खी का राज

जब लोगों ने भारत रत्न वाजपेयी को देखा

मार्च 2015 में वाजपेयी को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के हाथों दिल्ली स्थित उनके घर पर भारत रत्न से सम्मानित किया गया.

लोगों को एक बार फिर व्हीलचेयर पर बैठे, बीमार वाजपेयी की एक झलक मिली. लेकिन ये तस्वीर भी कुछ इस तरह से खींची गई कि इसमें उनका पूरा चेहरा नहीं दिखा.

वाजपेयी को भारत रत्न दिए जाने की लंबे समय से मांग उठ रही थी. कई लोगों ने टिप्पणी की कि यह सम्मान उन्हें तब दिया जाना चाहिए था जब उनकी सेहत ठीक थी.

अटल बिहारी वाजपेयी को भारत रत्न के सम्मानित करते तात्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी

वाजपेयी कहां हैं?

इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक वाजपेयी सालों से कृष्ण मेनन मार्ग स्थित आवास में अपनी दत्तक पुत्री नमिता भट्टाचार्य के साथ रहते हैं. 2014 में निधन से पहले तक श्रीमती राजकुमारी कौल भी यहीं रहती थीं.

कुछ नेता हर साल 25 दिसंबर को उनके जन्मदिन पर मिलने जाते हैं. इनमें एक नाम पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का भी है. एनएम घाटते ने एक दिलचस्प घटना का ज़िक्र किया है, "1991 में नरसिम्हा राव ने वाजपेयी को फोन किया और कहा कि आपने बजट की इतनी कठोर आलोचना की है कि मेरे वित्त मंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह इस्तीफा देना चाहते हैं. यह सुनकर वाजपेयी जी ने डॉक्टर मनमोहन सिंह को बुलाया और कहा कि आलोचना को व्यक्तिगत रूप से नहीं लेना चाहिए, क्योंकि यह एक राजनीतिक भाषण था. उस दिन से ही दोनों के बीच एक खास संबंध बन गया."

राष्ट्रीय लोक समता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं मुख्य प्रवक्ता माधव आनंद से 'चर्चित बिहार' की सीधी बातचीत

आप चकाचौंध भरी कॉपोर्रेट जगत से राजनीति में आयें, आप अपने इस सफर को कैसे देखते हैं?

सबसे पहले तो आपकी पत्रिका 'चर्चित बिहार' को तेजी से आगे बढ़ने के लिए बहुत बहुत बधाई

देखिये ! अभी तक जो मेरा सफर रहा है यह बहुत ही अनुभव वाला सफर रहा है। बिहार के एक छोटे से जगह से मैं कॉपोर्रेट की दुनिया में आया और बहुत मेहनत से यहाँ एक जगह बनायी` कॉपोर्रेट दुनिया में एक मुकाम बनाने के बाद मुझे यह एहसास हुआ की मैं जहाँ से आता हूँ वह क्षेत्र बहुत पिछड़ा है और वहां के लिए मैं कुछ करूँ। देश विदेश में मैंने कार्य के द्वारा जो अनुभव प्राप्त किया है, हर देश के आर्थिक और भौगोलिक तथा विदेश नीति को समझा है उस अनुभव के साथ मुझे लगा की अपने बिहार राज्य के लिए भी कुछ कर सकता हूँ। कहीं न कहीं यही बात मेरे लिए प्रेरणादायक रहा है जिसके कारण मैं आज सार्वजनिक जीवन में हूँ और चाहता हूँ की जो मेरा अनुभव है उसे बिहार के विकास के लिए सदुपयोग करूँ।

बिहार में बहुत सारी राजनीतिक पार्टियाँ हैं सभी को आप जैसे पढ़े लिखे युवा नेतृत्व की आवश्यकता है ऐसे में आपने रालोसपा को ही क्यों चुना?

राष्ट्रीय लोक समता पार्टी का जो नेतृत्व संभाल रहे हैं वह माननीय श्री उपेन्द्र कुशवाहा जी है और यह कहने में मुझे कोई हिचकिचाहट नहीं है की इस समय वह राज्य में सबसे बड़े नेता हैं। वह किसी एक समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करते बल्कि वह सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं, चाहे वह एससी, एसटी, अल्पसंख्यक हो या पिछड़ा और सामान्य वर्ग हो , आरएलएसपी के कार्यकर्त्ता सभी वर्गों से हैं। यह ऐसे नेता हैं जिनपर आज तक कोई दाग नहीं हैं। यह एक बहुत बड़े नेता है तथा इंटेलेक्चुअल क्लास से हैं , प्रोफेसर रहें हैं। कहीं न कहीं मेरे विचार से उनके विचार मिलते हैं जिसके कारण ही मैं रालोसपा से जुड़ने के लिए प्रेरित हुआ। मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ की मुझे माननीय श्री उपेन्द्र कुशवाहा जी ने साथ कार्य करने का मौका दिया।

राष्ट्रीय लोक समता पार्टी की विचारधारा समानता और समाजवाद को प्रदर्शित करती हैं आज के दौर में बिहार में इसे कितना कारगर मानते हैं?

देखिये आज के तारीख में जहाँ तक हमलोग समाजवाद की बात करते हैं तो विशेषतः बिहार के सन्दर्भ में हम लोग कहीं ना कहीं थोड़ा सा पीछे हैं और केंद्र के स्तर पर भी यही हाल हैं। आपने देखा होगा की न्यायपालिका में जो कोलेजियम व्यवस्था है, वह कहीं न कहीं दोषपूर्ण हैं। सुप्रीमकोर्ट और हाईकोर्ट में हमनें समाज के सभी वर्गों के उचित प्रतिनिधित्व की मांग की। वह चाहे अल्पसंख्यक वर्ग हो या पिछड़ा, दलित और आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग हो सबको प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। माननीय मंत्री जी द्वारा 'हल्ला बोल, दरवाजा खोल' अभियान चलाया जा रहा है जिसका उद्देश्य ही यही है की सभी वर्गों को उचित प्रतिनिधित्व मिले। जब दरवाजा खुलेगा तभी सबको मौका मिलेगा और हमारे लिए

यही समाजवाद की परिभाषा है की सभी वर्गों को मौका मिले। जब सभी वर्गों को सभी क्षेत्रों में बराबर मौका मिलेगा तो समाजवाद मजबूत होगा` हमारे पार्टी के अध्यक्ष और हमारी पार्टी निरंतर इसके लिए संघर्ष कर रही है और आगे भी हम लोग इसके लिए संघर्ष करते रहेंगे`

आज भी हमारे राज्य हैं शिक्षा, रोजगार की कमी हैं जो पलायन को बढ़ावा दे रही हैं इसे दूर करने के सम्बन्ध में आपके और आपकी पार्टी की क्या राय हैं?

आज हमें कहने में कोई परहेज नहीं है की बिहार की शिक्षा व्यवस्था बेपटरी हो चुकी है` हमलोगों ने विगत एक वर्ष में शिक्षा में सुधार हेतु अनेक कार्यक्रम चलायें हैं और चला रहे हैं` बिहार की शिक्षा व्यस्था की पोल वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट भी खोलती है जिसमें बिहार की शिक्षा व्यवस्था की तुलना सबसे पिछड़े अफ्रीकी देश मालाबी से की गयी है जहाँ की शिक्षा व्यवस्था सबसे ज्यादा पिछड़ी है` बिहार में ब्रेन ड्रेन और वेल्थ ड्रेन की स्थिति हो चुकी है` उसी बिहार के लोग वैश्विक स्तर पर भागीदारी बढ़ा रहे हैं , देश-विदेश में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहें हैं लेकिन उसका फायदा बिहार को नहीं मिल रहा है` इसे बिहार सरकार की विफलता के रूप में देख सकते हैं` कहीं न कहीं बिहार सरकार निवेश के नजरिये से नहीं सोच पा रही है` जो राज्य के पढ़े लिखे युवा है उनके लिए स्थानीय स्तर पर ही रोजगार मिले इसके लिए सरकार को कार्य करना चाहिए` और मैं समझता हूँ की इस मामले में सरकार संवेदनशील नहीं है , बहुत ही उदासीन रवैया है और इसी करण यहाँ ब्रेन ड्रेन और वेल्थ ड्रेन की स्थिति बन चुकी है`

महिला सुरक्षा आज बिहार में सबसे बड़ा मुद्दा हैं, एक समय था जब बिहार को जंगलराज का दर्जा दिया गया था और बीजेपी-जदयू की सरकार उसी के विकल्प के रूप में सुशासन के नारे के साथ उभरी थी? पर आज जो बिहार में स्थिति हैं वह भी जंगलराज से कम नहीं हैं? इस विषय में आपका क्या कहना हैं ?

बिहार में जो लॉ एंड आर्डर की स्थिति है वह आज के समय में बहुत ही खराब है` यह मैं नहीं बोल रहा हूँ माननीय सुप्रीमकोर्ट और माननीय पटना हाईकोर्ट ने ऐसे विभिन्न मुद्दों पर अपनी टिप्पणी किये हैं` मॉब लिंचिंग , महिलाओं पर अत्याचार , या अन्य आपराधिक गतिविधियाँ सरकार की विफलता को ही प्रदर्शित करती है` सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है की इस तरह की गतिविधियों को रोकने के लिए जरुरी कदम उठाये। हम लोग भी सरकार के ही हिस्सा हैं लेकिन मुखिया नीतीश जी है तो उनकी जिम्मेदारी बनती है की किस तरह वह राज्य में लॉ एंड आर्डर को सही करेंगे। मुझे लगता है की सरकार इस पर ध्यान दे रही है और बीजेपी, जेडीयू , एनडीए के दो बड़े सहयोगी है तथा उन्हें सोचना है की राज्य के कानून व्यवस्था को कैसे सही किया जाये।

कुछ दिन पहले हमने आजादी की 72 वीं वर्षगाँठ मनाई लेकिन आज भी बिहार के किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हैं, इसके पीछे किसे जिम्मेदार मानते हैं ? और आपकी पार्टी ने किसानों के हित में क्या कदम उठाये हैं ?

देखिये ! जहाँ तक किसानों की स्थिति की बात है तो माननीय प्रधानमंत्री इस विषय में बहुत ही संवेदनशील है और उन्होंने अनेक जगहों पर किसानों की आय दुगुनी करने की बात बार-बार दोहराई है। एमएसपी रेट बढ़ाया ही है साथ ही अनेक फसलों के उपज का दाम भी दोगुना कर दिया है इसलिए हम यह कह सकते हैं की केंद्र सरकार लगातार किसान हित को ध्यान में रखते हुए अनेक योजनायें शुरू की है और किसानों के किसी भी समस्या पर कोई समझौता नहीं कर रही है। सरकार ने किसान मंडी से बिचौलियों को हटाने का कार्य किया जिससे सीधे किसानों के खाते में ही पैसा पहुँचने लगा है। केंद्र के साथ साथ राज्य सरकार का यह उत्तरदायित्व बनता है की वह केंद्र की योजनाओं को किसानों तक पहुंचाएं। मेरा ऐसा मानना है की बिहार सरकार किसानों के मामले में केंद्र की तरह संवेदनशील नहीं है ।

आज भी बिहार में औधोगिक निवेश नाम मात्र हैं, आप कॉपोर्रेट जगत से आतें हैं तो इस सन्दर्भ में आप राज्य के लिए क्या सोचते हैं?

वर्तमान में अभी बिहार में जिस रूप में विकास होना चाहिए वह नहीं हो पाया है। मेरा ऐसा मानना है की सड़क बना देने मात्र से ही युवाओं को रोजगार नहीं मिलेगा। और यह भी केंद्र सरकार के द्वारा ही किया जा रहा है , मैं केंद्र सरकार को धन्यवाद देन चाहता हूँ की एनएचआई की जो भी परियोजना बिहार में गयीं वह सभी सफल रहीं हैं, लेकिन राज्य सरकार की यह जिम्मेदारी है की उद्योग धंधे बिहार में कैसे लायें जायें। जब तक प्राईवेट निवेश बिहार में नहीं आएगा तब तक युवाओं को रोजगार नहीं मिलेगा। बिहार कृषि प्रधान स्टेट है इसलिए फूड

> बिहार कृषि प्रधान राज्य है। इसलिए यहां फुड प्रोसेसिंग को बढ़ावा दिया जा सकता है। पेंटिंग, टूरिज्म क्षेत्र को बढ़ावा दिया जा सकता है। बीपीओ को स्थापित कर पटना, मुजफ्फरपुर इत्यादि बड़े शहरों को एक हब बनाया जा सकता है। सर्विस क्षेत्र को भी एक उद्योग के रूप में बढ़ाया जा सकता है। यदि हमारी पार्टी की सरकार बिहार में बनी तो बिहार का परिदृश्य ही बदल जायेगा। बिहार के युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रयास करेंगे।

प्रोसेसिंग को बढ़ावा दिया जा सकता है, पेंटिंग , टूरिज्म क्षेत्र को बढ़ावा दिया जा सकता है। बीपीओ को स्थापित कर पटना, मुज्जफरपुर इत्यादि बड़े शहरों को एक हब बनाया जा सकता है। सर्विस क्षेत्र को भी एक उद्योग के रूप में बढ़ाया जा सकता है, चूँकि इस ओर सरकार का ध्यान नहीं है इसलिए युवाओं का पलायन हो रहा हो।

आगामी लोकसभा के चुनाव में आपकी पार्टी की क्या रणनीति रहेगी? क्या आप एनडीए के साथ रहेंगे या विकल्प के रूप में महागठबंधन को भी देख रहे हैं?

आपकी पत्रिका 'चर्चिच बिहार' पुरे बिहार में पढ़ी जाती है और इस माध्यम से हम बताने चाहते हैं की -जहाँ तक रालोसपा की बात है तो आज यह पार्टी बिहार में एक बड़ी पार्टी के रूप में खुद को स्थापित कर चुकी है और हम लोगों के पार्टी का जो चेहरा हैं एवं केंद्र में मानव संसाधन राज्य मंत्री है वह बिहार में सबसे बड़े नेता हैं तथा उनकी स्वच्छ छवि है और अब बिहार की जनता यह चाहती है की उस स्वच्छ छवि को एक मौका दिया जाये। बिहार की जनता ने सभी को मौका दिया है । नीतीश जी को , लालू जी को मौका दिया है । बिहार की जनता इन लोगों के नेतृत्व को देख चुकी है और अब एक आशा के रूप में माननीय उपेन्द्र कुशवाहा जी की और देखने लगी है। जिस तरह सभी वर्गों का समर्थन मिल रहा है उससे यह साफ है की श्री कुशवाहा जी बिहार के मुख्यमंत्री पद के दावेदार हैं ` और वह जिस समाज से आते हैं वह पुरे बिहार में 14 % की हिस्सेदारी रखती है , 2019 में दुबारा नरेंद्र मोदी जी प्रधानमंत्री बनेंगे और हम सभी उनके हाथों को मजबूत करना चाहते हैं । हाँ , साथ ही यह भी चाहते हैं की बीजेपी भी हमारे नेतृत्व के लिए सोचे चाहे वह केंद्र हो या बिहार ।

बिहार के युवा पीढ़ी की राजनीती की बात करें तो तेजस्वी, चिराग के साथ आप भी एक बड़ा चेहरा हैं , बिहार के युवाओं के नाम आपका क्या सन्देश हैं?

जहाँ तक तेजस्वी और चिराग जी की बात है तो यह लोग चाँदी का चम्मच लेकर पैदा हुए हैं । मैं एक मध्यमवर्गीय और छोटे परिवार से आता हूँ और मेरा बैकग्राउंड गैर-राजनीतिक है । इसलिए मैं अपनी तुलना उन लोगों से करना उचित नहीं समझता हूँ ।उन लोगों को राजनीति विरासत में मिली है और मैं राजनीति में बिहार के विकास का सपना लेकर आया हूँ । इसलिए हमने रालोसपा से जुड़ना सही समझा क्योंकि पार्टी के अध्यक्ष माननीय उपेन्द्र कुशवाहा जी की सोच और सपना , मेरे सपनों से मिलती है । मतलब मैं भी बिहार के लिए वही सपना देख रहा हूँ जो श्री कुशवाहा जी देखे हैं । मुझे यह खुशी है की उन्होंने मुझे अपने साथ काम करने का मौका दिया। हम आपके पत्रिका 'चर्चित बिहार' के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि यदि हमारी पार्टी की सरकार बिहार में बनी तो बिहार का परिदृश्य ही बदल जायेगा। बिहार के युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रयास करेंगे। और अंत में मैं युवाओं से यही कहूँगा की बिहार का भविष्य आपके हाथों में है इसलिए इसे अपने कौशल और अपने मतदान के अधिकार द्वारा सुधारने का प्रयास कीजिये।

यदि आपको बिहार की कमान सौंपी जाती हैं तो आप बिहार को किस दिशा में लेकर जायेंगे?

जहाँ तक हमारी पार्टी को बिहार की कमान सौंपने की बात है (यह मैं अपने आप के लिए नहीं सोच रहा हूँ), यदि माननीय उपेन्द्र कुशवाहा जी को बिहार का नेतृत्व करने का मौका मिलता है तो हम लोगों के कार्य करने की शैली आंतरिक रूप से अलग होगी` हम लोग रोजगार, किसान, युवा की बात करते हैं` आपने पूछा की बिहार का विकास किस रूप में हो सकता है तो मैं यह बताना चाहता हूँ की बिहार का विकास इस रूप में हो सकता है। टूरिज्म क्षेत्र में बिहार को आगे ले जाया जा सकता है। आप साउथ ईस्ट एशिया के एक छोटे से देश थाईलैंड का उदाहरण ले लीजिये उसकी पूरी अर्थव्यवस्था सिर्फ टूरिज्म पर ही चलती है फिर बिहार जैसे राज्य को टूरिज्म हब के रूप में क्यों नहीं विकसित किया जा सकता है। आपके यहाँ बोध गया है , महात्मा बुद्ध , महावीर स्वामी की भूमि है बिहार , मधुबनी पेंटिंग को उद्योग का दर्जा दिया जा सकता है` मधुबनी पेंटिंग के लिए सिंगापूर में अलग स्टोर दिया गया है लेकिन भारत में कोई व्यवस्था नहीं है । स्माल स्केल इंडस्ट्री के तहत इस कला को आगे बढ़ाने की जरुरत है और भी अन्य उद्योग धंधे है जैसे खाद्य प्रसंस्करण इत्यादि बिहार में किसानों को आधुनिक खेती के गुर सीखा कर उनकी आय को बढ़ाया जा सकता है । बिहार में जिस फसल की पैदावार ज्यादा हो रही है उससे सम्बंधित इंडस्ट्री लगाकर रोजगार पैदा किया जा सकता है । इन सभी कार्यों के लिए सबसे जरुरी है निवेश और वह तभी आएगा जब निवेशकों की सुरक्षा का भरोसा होगा । कोई भी निवेशक व्यवसाय करने के लिए ही आएगा तो उनके निवेश और उनकी सुरक्षा राज्य को करनी पड़ेगी। यदि हम लोगों की सरकार बनती है तो हम निवेशकों , उनके निवेश, उनके कर्मचारी सबकी सुरक्षा करेंगे और यह हम दावे के साथ कह सकते हैं ।

बेगूसराय और कन्हैया कुमार

बेगूसराय की मिट्टी को प्रणाम...

मेरी मातृभूमि बेगूसराय है । अगर आप बेगूसराय या बिहार की राजनीति को भारत के परिदृश्य में बारीकि से समझते हैं या समझना चाहते हैं तो यह लेख आपको एक अलग दृष्टि दे पाने में समर्थ हो सकता है ।

मेरी व्यक्तिगत छवि और जीवन-शैली एक शिक्षक की है, परंतु वर्तमान परिस्थिति और राजनीति में नवागांतुक उन्माद को देखते हुए कुछ लिखने को अग्रसर हूँ । जेएनयू के छात्र-संघ के पूर्व-अध्यक्ष कन्हैया कुमार को लेकर लोगों के मतांतर के बीच यह लेख अपनी आवश्यकता प्रदर्शित करता है ।

बेगूसराय बिहार का ऐसा एक जिला है, जो पूरे विश्व में कम्युनिस्टो के गढ के रूप में दिखा और यही कारण है कि इसे लेनिन-ग्राद के रुप में जाना जाता रहा । एक ऐसा भारत-खंड, जिसकी बहुसंख्यक आबादी अखंडित ब्राह्मणों (ब्राह्मण और भुमिहार) की है, जो अपने बुद्धिबल, साहस और निडरता की ऐतिहासिक विरासत समेटे हुए है। बिहार-केशरी श्रीकृष्ण सिंह के द्वारा महात्मा गांधी आहुत नमक-सत्याग्रह आंदोलन की अगुवाई से लेकर स्वतंत्र भारत के सुलझे नेता के रुप में बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री होने और बार-बार निर्वाचित होने के बावजूद अपने प्रतिद्वन्दी श्री अनुग्रह नारायण सिंह की मुक्त-कन्ठों से प्रशंसा करने वाले शख्सियत के अतुलनीय प्रयास का फल रहा कि बरौनी रिफाइनरी, बरौनी फर्टिलाइजर, बरौनी थर्मल के साथ-साथ दर्जनो कारखानो की वजह से मिथिलांचल, अंगप्रदेश और मगध का यह सीमांचल-प्रदेश बेगूसराय बिहार की औद्योगिक-राजधानी के कारण भारत में अपना स्थान रखता है।

ठेकेदारी और रंगदारी के कारण आपसी रंजिश और अस्थिर माहौल के कारण बिहार के आपराधिक और राजनीतिक उठा-पठक में इसकी मुख्य-अक्ष की भूमिका रही, पर कम्युनिस्टो की अपनी पकड़ हमेशा रही, जिसका प्रमाण शत्रुधन प्रसाद सिंह सरीखे जमीन से जुडे नेता रहे ।

जब नब्बे के दशक के अंत में कम्युनिस्टो के अंत की आधारशिला हुई तो यादव, कुर्मी, दलित और मुसलमान को लेकर लालू और काँग्रेस के गठजोड़ ने भ्रामक वातावरण तैयार किया, जिसकी भेंट कम्यूनिस्टो के साथ बेगूसराय की अगड़ी जातियों का वर्चस्व भी हो गया और कालान्तर में अन्य पिछडी जातियों और मुसलमानों ने बेगूसराय को भाजपा और जदयू के नाम पर हथियाने की कोशिश की और बहुत हद तक सफल भी रहे । ये हथकंडा भूमिहारों को नागवार गुजरा और इन्होंने खुद को राष्ट्रीय दलों के अलावा क्षेत्रीय दलों में अपनी पैठ बनाकर अपनी विरासत को बनाकर रखना चाहा और बहुत हद तक कामयाब भी रहे, यही कारण है कि किसी भी दल के भूमिहार नेता बेगुसराय में

बिहार के किसी भी दूसरे प्रान्त की तुलना में ज्यादा अपनत्व अनुभव करते हैं ।

पिछले पन्द्रह वर्षों के राजनैतिक उठा-पठक में नीतिश कुमार को समर्थन देने के लिये अन्य जातियों के साथ मिलकर, खुद नीतिश कुमार को सत्तासीन और उसकी अगुवायी करने के बावजूद नरेन्द्र मोदी और भाजपा को एकमुस्त वोट देने वाला यह बौद्धिक-वर्ग 2015 बिहार विधान-सभा में आपसी कलह और क्षद्म-राजनैतिक दुराग्रहों के कारण सभी तरह के सियासी अटकलों के बीच यादवों और मुसलमानों को अनायास अभयदान देते हुए राजद और काँग्रेस को संजीवनी का काम करता है, जिसकी अपेक्षा किसी राजनीतिक-पंडितो को भी नहीं थी । दो साल पहले लगातार एनडीटीवी-इमेजिन पर ह्यबेगुसरायह्ल नामक एक धारावाहिक प्रसारित किया जा रहा था, जिसको देखने से बेगुसराय की जो छवि बनती है, वो फिल्मी है और वर्तमान से बिल्कुल अलग है, पर अतीत से अछूति नहीं है । कुछ महीनों पहले एवीपी न्यूज ने अपने प्राईम टाईम में बेगुसराय का जो आलेख प्रस्तुत किया, वो वर्तमान बेगूसराय को लेकर नहीं था, बल्कि पूर्वाग्रह-ग्रस्त था । जेएनयू विवाद में राष्ट्रद्रोह का आरोपी जेएनयू पूर्व-अध्यक्ष कम्युनिस्ट पार्टी का नेता कन्हैया कुमार बेगूसराय के बिहट गाँव का रहने वाला है, जो उमर खालिद और अरबान भट्टाचार्या के कार्यक्रम का समर्थक था, जिसमें भारत की अखंडता के विरुद्ध जो नारे लगे,वह अविस्मरणीय हैं। कन्हैया की गिरफ्तारी से बेगूसराय में पसरी उदासी और उसके अंतरिम जमानत पर जोरों की आतिशबाजी कम्युनिस्टो की बुझती आग को हवा तो देती ही है और साथ ही उन इरादों को बल भी देती है, जो नरेंद्र मोदी, भाजपा और हिंदुत्व जैसे मुद्दों को उठने से सशंकित हैं, ऐसे भाजपा-विरोधी ताकतो का एकजुट होना लाजिमी है.

न्यायालय के द्वारा अंतरिम जमानत देते हुए जज का वर्तमान स्थिति के प्रति दुख जताना और कन्हैया को हिदायत देना, फिर भी कन्हैया का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अभद्रतापूर्वक संबोधन करना एक गंभीर चिंता का विषय है.

राजनेताओं के द्वारा मनोबल के साथ-साथ धन और राजनीतिक सम्बल देना, वर्तमान में कन्हैया को ऊर्जा तो दे रहा है, पर अतीत की गलतियों से यही प्रतीत होता है कि कहीं ये सिर्फ भाजपा-विरोधी गुट के प्यादे के रूप में बनकर ना रह जाये। लेफ्ट-पार्टियों के साथ-साथ समाजवाद का झंडा उठाने का रसूख रखने वाली पार्टियाँ कन्हैया को शह सिर्फ इस कारण दे रही हैं या उसका लाभ उठाना चाहती है, क्योंकि इसमें दलित-मजदूर और अभावग्रस्त का नाम लेकर मोदीफोबिया से अलग करने की दवा दिखती है, जिससे उनलोगों का मार्ग निष्कंटक हो जाये । अगर 2019 के लोकसभा-चुनाव में कन्हैया कुमार को बेगूसराय से सांसद-उम्मीदवार बनाया जाता है तो यह भारतीय राजनीति का वह चेहरा होता है, जो राजनीतिक-धारा को प्रबल-वेग से अपनी मनमानी और खुदगर्जी से जोड़ने का प्रयास कहा जा सकता है । वैसे, कन्हैया मोदी-विरोधियों के लिये एक रामबाण है जो आज के उत्तेजक मोदी-महिमा को उसी भाषा में जवाब देता है । अभी तक के बेगूसराय के कम्युनिस्टों ने कभी भी अपनी मातृभूमि के दाँव पर कोई राजनीति नहीं चली, कन्हैया की इस पारी को गंभीरता से उनके गृह-क्षेत्र को लेना चाहिये ।

(लेखक बिहार के प्रसिद्ध शिक्षाविद्, सामाजिक चिंतक, कवि, साहित्यकार, भौतिकी के विख्यात शिक्षक और एलिट संस्थान के संस्थापक-निदेशक हैं)

लेखक : अमरदीप झा गौतम, बिहार

एलिट इंस्टीट्यूट ने शुरू की अटल ज्ञानोदय योजना

अटल बिहारी वाजपेयी को समर्पित सांस्कृतिक-कार्यक्रम, सम्मान-सामारोह, और श्रद्धांजलि पटना के श्रीकृष्ण-मेमोरियल हॉल में शनिवार की शाम एलिट इन्स्टिच्युट,पटना के द्वारा आयोजित किया गया। जहां राज्यसभा सांसद पदम श्री डॉक्टर सीपी ठाकुर बिहार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे विधायक नितिन नवीन अटल जी को श्रद्धांजलि देने पहुंचे। संस्थान के निदेशक अमरदीप झा गौतम ने इस अवसर पर एलीट संस्थान के द्वारा अटल ज्ञानोदय योजना की शुरूआत की उन्होंने कहा भारत रत्न अटल जी की याद में आर्थिक रुप से असहाय छात्रों को मेडिकल और इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षाओं के लिए एलिट इंस्टीट्यूट आज से ज्ञानोदय योजना की शुरूआत कर रहा है जिसके तहत आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी इससे पहले आयोजित कार्यक्रम में दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई को श्रद्धांजलि दी गई उसके बाद संस्थान के द्वारा पत्रकार अमिताभ ओझा चंदन झा कवि प्रफुल्ल मिश्रा समाजसेवी मुकेश हिसारिया भरत कौशिक उज्जवल श्रीवास्तव समेत बिहार के उभरते सितारों को सरस्वती व नागार्जुन सम्मान प्रदान किया गया ।इस अवसर पर अपने संबोधन में पद्मश्री डॉक्टर सीपी ठाकुर ने एलीट के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों का उल्लेख करते हुए संस्थान को बधाई दी। अपने संबोधन में स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे ने बिहार के छात्रों के लिए संस्थान के द्वारा इमानदारी पूर्वक किए जा रहे हैं कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा गया कि बिहार में प्रतिभाओं की कमी नहीं इस तरह के संस्थान उन प्रतिभाओं को गढ़कर निखारते है इसके लिए संस्थान के निदेशक अमरदीप झा गौतम बधाई के पात्र है।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में संस्थान के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया जहां गायिका मैथिली ठाकुर ने ठुमरी याद पिया की आए रे यह दुख सहा न जाए रे व मैथिली गीत परम पुनीत भूमि जनक नगरिया प्रस्तुत कर दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया गया इस अवसर पर मैथिली के भाई ऋषभ ठाकुर तबले पर साथ दे रहे थे। उसके बाद संस्थान के छात्र फैजल ने दिल यह क्यों मेरा शोर करे काजल ओझा ने देश रंगीला प्रियंका श्रीवास्तव ने राधा तेरी चुनरी सोनल ने आपकी नजरों ने समझा पर अपनी मनमोहक प्रस्तुतियां देकर दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया देर शाम तक दर्शक शास्त्रीय व भारतीय संगीत का आनंद उठाते रहे। आगत अतिथियों का स्वागत व मंच संचालन संस्थान के निदेशक अमरदीप झा गौतम ने किया।

भोजपुरी लोकगीतों की मधुर स्वर डॉक्टर नीतू नवगीत

अनूप नारायण सिंह

फूहड़पन और अश्लीलता के कारण लोकगीतों की काफी बदनामी हुई है । अनेक गायक इसी कारण लोकगीतों से मुंह मोड़ रहे हैं। लेकिन सच यह भी है कि लोकगीत हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा है और इसकी मिठास हमारे जीवन को रसमय बनाए रखती है । लोकगीत मां की लोरी जैसे होते हैं । यह कहना है बिहार के प्रसिद्ध लोक गायिका डॉ नीतू कुमारी नवगीत का जो कि मुंगेर महोत्सव में भाग लेने के लिए आई हुई हैं । हिंदी साहित्य से डॉक्टरेट करने वाली नीतू कुमारी नवगीत ने लोक गायकी के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है । दूरदर्शन और आकाशवाणी के कई कार्यक्रमों में शिरकत कर चुकी डॉ नीतू कुमारी नवगीत का जन्म वैसे तो रांची में हुआ है लेकिन वह पूरी तरह से बिहार के लोकगीतों के प्रति समर्पित हैं । लोकगीतों के कई एल्बम में उनकी भागीदारी रही है जिनमें बिटिया है अनमोल रतन, गांधी गान, स्वच्छता संदेश, पावन लागे लाली चुनरिया और मोरी बाली उमरिया शामिल हैं । लोकगीतों की पारंपरिक मिठास को बनाए रखने के लिए सदैव प्रयत्नरत डॉ नीतू कुमारी नवगीत ने इस संबंध में विस्तार से बताया कि एक लोक गायिका की क्या इच्छा होती है ? अपने देश की माटी की सोंधी महक से वातावरण सुवासित रहे, अपनी संस्कृति का परचम लहराता रहे और देसज धुनों और देसी गानों की गूंज से हमारा जीवन गुंजित होता रहे । जिन गीतों को हमारी दादी- नानी और उनकी दादी-नानी ने गाया, बड़े प्यार से सहेजा, उन गीतों की परंपरा जारी रहना चाहिए । हर पर्व, हर त्यौहार और जन्म, छठी, सतईसा, मुंडन,उपनयन, शादी-विवाह सहित जीवन के हर अवसर के लिए गीत हमारे गांव में मौजूद हैं, हमारी

जड़ों में हैं । कोई लाख कोशिश कर ले, आधुनिकता की चाहे कितनी भी लंबी चादर ओढ़ ले; अपनी जड़ों से कटकर ज्यादा दिन तक जी नहीं सकता । दुनिया का कोई भी बिस्तर मां की गोद की जगह नहीं ले सकता । बड़े-बड़े साहित्यकारों की रचनाएं भी दादी नानी की कहानियों से बड़ी नहीं हो सकती । उसी तरह से लोक संगीत है ।

पश्चिमी संगीत और फिल्मी संगीत का अपना महत्व है लेकिन लोक संगीत का जीवन में वही स्थान है जो दादी-नानी की कहानियों का है । जीवन के सबसे महत्वपूर्ण अवसरों पर और जीवन के सबसे चुनौतीपूर्ण मौकों पर हमारा अपना लोक संगीत हमारे साथ खड़ा होता है । हमारे मानस को बनाता हुआ, हमारे विश्वास को बढ़ाता हुआ । भिखारी ठाकुर और महेंदर मिसिर से लेकर विंध्यवासिनी देवी और शारदा सिन्हा तक ने बिहार के लोकगीतों पर काफी काम किया है और इसे विश्वस्तरीय पहचान दी है । एक युवा कलाकार के तौर पर मेरी कोशिश होती है कि लोक गायकी के इन महान कलाकारों ने जो समृद्ध विरासत तैयार की है, उसी को थोड़ा आगे मैं भी बढ़ाऊं । हमेशा कोशिश करती हूं कि लोकगीतों के गायन के समय इसकी आत्मा अक्षुण बनी रहे । इसकी पारंपरिक मिठास और कर्ण प्रियता पर कोई असर ना पड़े । भोजपुरी में हजारों लोकगीत है । अनेक लोकगीतों पर काम हुआ है, लेकिन अभी बहुत काम होना बाकी है । सस्ती लोकप्रियता के चक्कर में बहुत कुछ गलत भी हुआ है । द्विअर्थी बोल वाले गानों के प्रचलन के कारण भोजपुरी लोक संगीत को बदनामी भी काफी मिली है और स्वनामधन्य सुसंस्कृत लोग इसी आधार पर भोजपुरी गीतों से परहेज भी करने लगे हैं । लेकिन हकीकत तो यही है कि हर क्षेत्र में कुछ अच्छे लोग होते हैं और कुछ खराब लोग । भोजपुरी संगीत के मामले में भी ऐसा है । कुछ कलाकार भोजपुरी गीतों को सड़कछाप संगीत में बदलकर अपना हित साधने में लगे हैं । एक बड़ा श्रोता वर्ग भी ऐसे गीतों को पसंद करता है । लेकिन ऐसा साहित्य के मामले में भी होता है जब हम देखते हैं कि अश्लीलता से परिपूर्ण साहित्य नुक्कड़ की दुकानों पर ज्यादा बिकता है । लेकिन उस आधार पर पूरे साहित्य को गंदा तो नहीं कहा जा सकता है । वस्तुतः नुक्कड़ पर बिकने वाली अश्लील किताबें साहित्य की श्रेणी में रखी ही नहीं जाती है तो फिर लोक संगीत के मामले में भी ऐसा ही होना चाहिए । सड़क छाप एल्बमों के आधार पर भोजपुरी लोक गायन के संसार को खराब कह देना गलत है ।

इन दिनों व्यवसायिकता हर जगह हावी है । व्यवसायिकता की अंधी दौड़ में हमारा लोक संगीत थोड़ा पिछड़ रहा है । इसलिए हर स्तर पर इसे प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है । सरकारी कार्यक्रमों में बिहार के लोक कलाकारों को ज्यादा से ज्यादा मौका दिया जाना चाहिए । उसी तरह कंपनियों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को भी लोक संगीत को बढ़ावा देने के लिए आगे आना होगा । लोक संगीत से सामूहिकता का विकास होता है हम परिवार और समाज के साथ-साथ आगे बढ़ने की सोचते हैं । ढडढ और रॉक संगीत जीवन में एकाकीपन ला रहा है । यह अजनबीपन के एहसास को भी बढ़ाता है । लोक संगीत में भौजाई और ननद की चुहलबाजियाँ, सास और बहू का संसार और सुर-बेसुर की परवाह किए बिना साथ साथ मिलकर गाने की परंपरा से समाज में मजबूती आती है । हम अपने आसपास कैसा संसार बनाना चाहते हैं, हम अपनी अगली पीढ़ी को किस प्रकार की संस्कृति विरासत में देना चाहते हैं,इसका फैसला तो हमें ही करना होगा ।

जॉब कार्ड को हो रहा दुरूपयोग : योगेंद्र

बिहार में मनरेगा जॉब कार्ड में हो रही है बड़े पैमाने पर गड़बड़ी योगेंद्र पासवान असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की बढ़ाई जाए सुविधाएं अखिलेश आज सासाराम के ओझा टाउन हॉल में सेंट्रल रेलवे सोशल ट्रेड यूनियन के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अनुसूचित जाति जनजाति आयोग के राष्ट्रीय सदस्य योगेंद्र पासवान ने कहा कि मनरेगा जैसे महत्वकांक्षी योजना मैं बड़े पैमाने पर गड़बड़ी की बात सामने आ रही है और ऐसी शिकायतें मिल जाएगी जॉब कार्ड कुछ पूर्व मुखिया या दलाल किस्म के लोग अपने पास रखकर उसका दुरुपयोग करते हैं और सही मजदूरी जॉब कार्ड धारकों को नहीं मिल पाती है।

इसके लिए बिहार के 38 जिला के जिलाधिकारी और उप विकास आयुक्त को निर्देश दिया गया है कि वह इसका जांच कर उचित करवाई करें उन्होंने कहा कि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार के साथ बिहार सरकार अनुसूचित जाति जनजाति के हित में कई कल्याणकारी योजनाएं चला रही है और उसे धरातल पर उतारने का कार्य किया जा रहा है ।

उन्होंने कहा कि 1997 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई दलितों को प्रमोशन में आरक्षण की व्यवस्था किया था वहीं दूसरी तरफ जब सर्वोच्च न्यायालय ने दलित उत्पीड़न के मामले में नया दिशा निर्देश जारी किया तो केंद्र सरकार ने तत्काल अध्यादेश अध्यादेश लाकर उसे और मजबूत बनाने का काम किया श्री पासवान ने कहा कि समाज हर वर्गों को साथ चलने के बाद ही आगे बढ़ पाएगा और देश का विकास इसी में है।

इस अवसर पर समारोह के विशिष्ट अतिथि और सामाजिक संस्था पहल के अध्यक्ष अखिलेश कुमार ने कहा कि देश में असंगठित मजदूरों की बड़ी संख्या है और टोटल घरेलू उत्पाद का 50% अकुशल मजदूरों द्वारा ही उत्पादन किया जाता है , लेकिन इनके हित में कोई ऐसा कानून नहीं है जिससे उनका भविष्य संवार सके अखिलेश कुमार ने कहा कि असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के हित में इऋकी व्यवस्था होनी चाहिए साथी न्यूनतम 18000 मासिक वेतन के लिए कानून बनाए जाने चाहिए उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारों की न्यूनतम मजदूरी दर अलग-अलग है जो एक समान होना चाहिए समारोह को सामाजिक कार्यकर्ता वीरेंद्र पासवान अकोढ़ी गोला प्रखंड प्रमुख संतोष पासवान जनता दल यू अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष जमालुद्दीन सिद्दीकी आदि ने भी संबोधित किया जब की अध्यक्षता यूनियन के अध्यक्ष रामएकबाल राम ने की इस अवसर पर सभी आगत अतिथियों को सौर और बुके देकर सम्मानित किया गया इससे पूर्व योगेंद्र पासवान को मां तारा चंडी कमेटी द्वारा चुनरी और मां का फोटो भेंट किया गया तथा यदि अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष जमालुद्दीन सिद्दीकी ने भी सब को शॉल और बुके देकर सम्मानित किया इस अवसर पर भाजपा रोहतास जिला के पूर्व अध्यक्ष प्रमोद सिंह शशि भूषण प्रसाद सत्येंद्र सिंह भोला अंकित वर्मा भीम आर्मी के कृष्ण कुमार सहित कई लोग उपस्थित थे।

मैथिली ठाकुर ने मचाया धूम

फेसबुक पर एक दुबली-पतली सी लड़की मैथली गीत लाइव गा रही थी अपना मैथिली से कोई खास वास्ता नहीं फिर भी उसके मधुर स्वर ने सुनने पर मजबूर कर दिया गाने के बोल थे जेहन किशोरी मोरी तेहने किशोर हे, इस गाने को समझते समझते मिथिला मैथिली को भी समझने का मौका मिला फिर मैंने उसके कई गीतों को सुना जिसमें चारों दूल्हा के आरती उतारू रे सखी उसके बाद विगत 8 महीने से मैं नियमित बिहार की इस लोक गायिका को सुनता रहा इसलिए पता चला कि बिहार के ही मधुबनी बेनीपट्टी की रहने वाली है मैथिली ठाकुर। मैथिली ठाकुर हिंदी क्लासिकल संगीत की पाश्व गायिका है।

जो टी.वी. शो राइजिंग स्टार 2017 की पहली रनरअप रही थी।उनका जन्म 25 जुलाई 2000 को मधुबनी (बिहार) में हुआ था । उन्होंने 10 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मंच पर गाना शुरू किया। उन्होंने अभी तक लगभग 500 से ज्यादा शो में हिस्सा लिया है। मैथिली के पिता रमेश ठाकुर संगीत शिक्षक है वह दिल्ली में संगीत संस्थान चलाते है वर्ष 2011 में सारेगामा लिटिल चैंप्स में अंतिम 30 में मैथिली ने अपनी जगह बनाई थी फिर वर्ष 2015 में इंडियन आइडल जूनियर में अंतिम 20 में सिलेक्ट हुई। राइजिंग स्टार में उपविजेता भी बनी। फेसबुक पर मैथिली के 8 लाख जबकि इंस्टाग्राम पर 2 लाख फॉलोअर्स है मैथिली में बहुत सारी ऐसी विविधताएं हैं जो उन्हें भीड़ से अलग करती है। बातचीत के क्रम में मैथिली ने बताया कि वह बॉलीवुड में पार्श्वगायन करने जा रही हैं साथ ही साथ अपने पिता के सहयोग से मेरे बिहार की लोकभाषा खासकर मैथिली भोजपुरी अंगिका के पारंपरिक लोक गीतों को भी सहेजने में लगी हुई है और काफी हद तक इसमें उन्हें सफलता भी मिली मैथिली ने बताया कि उन्हें काफी सुकून मिलता है जब वह अपने पारंपरिक और वैसे वैसे गीत जो लोग भूल चुके हैं और हमारी संस्कृति से जुड़ी हुई है गाकर काफी सुकून मिलता है।

मैथिली के पिता रमेश ठाकुर संगीत शिक्षक है वह दिल्ली में संगीत संस्थान चलाते है वर्ष 2011 में सारेगामा लिटिल चैंप्स में अंतिम 30 में मैथिली ने अपनी जगह बनाई थी

बातचीत के क्रम में मैथिली ने बताया कि मैथिली के जानकार पूरी दुनिया में जब उनके गीतों को सुनने के बाद कनाडा अमेरिका फोन आता है तो उन्हें काफी सुकून मिलता है अपने भविष्य के बारे में उन्होंने बताया कि जो हमारी संस्कृति है उस को सहेजना उनका लक्ष्य है भोजपुरी को लेकर उनका कहना है कि पॉजिटिव और नेगेटिव हर जगह है सिर्फ पॉजिटिव चीजों पर ही ध्यान देती है। शास्त्रीय संगीत में किशोरी अमोनकर और पार्श्व गायकों में शंकर महादेवन तथा लता मंगेशकर को अपना आदर्श मानने वाली मैथिली गायकी के साथ ही साथ बॉलीवुड में अभिनय करने के प्रति भी संजीदा है।मैथिली ठाकुर ने अपनी उपलब्धियों की सूची में एक नया कीर्तिमान जोड़ा है.देश की पहली पंक्ति के शास्त्रीय गायक की टोली में मैथिली शामिल हो गयी है. दरअसल, आकाशवाणी ने मैथिली ठाकुर के शास्त्रीय संगीत को प्रसारित करने का 99 साल के लिए अनुबंध किया है, जिसकी रिकॉर्डिंग 10 जुलाई को की गयी. अब अगले 99 साल तक यह रिकॉर्डिंग बेगम अख्तर की तरह ही आकाशवाणी प्रसारित करेगी. इतनी कम उम्र के किसी भी गायिका से आकाशवाणी ने इस तरह का अनुबंध पहली बार किया है.

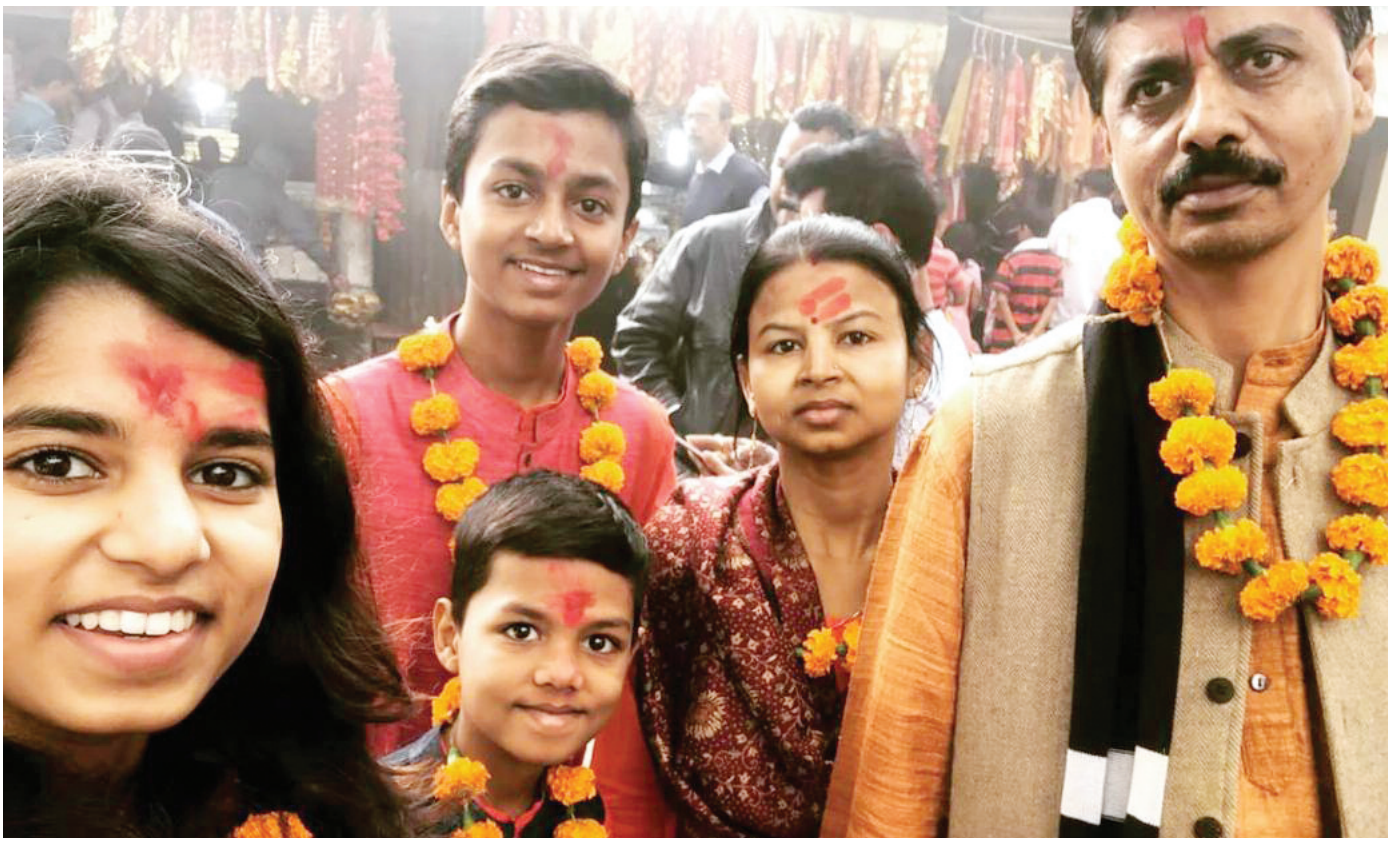

झारखंड में शिव मंदिर को टूटी झरना नाम से जाना जाता है

झारखण्ड के रामगढ़ जिले मे एक मन्दिर ऐसा भी है जहाँ भगवान शंकर के शिवलिंग पर जलाभिषेक कोई ओर नहीं स्वयं माँ गंगा करती है। मंदिर की खाशियत यह है कि यहाँ जलाभिषेक साल के बारह महीनें और चौबीस घण्टे होता है। यह पूजा सदियों से चली आ रही है। माना जाता है कि इस जगह का उल्लेख पुराणों मे भी मिलता है। भक्तों की आस्था है कि यहाँ पर मांगी गई हर मुराद पूरी होती है। अंग्रेजो के जमाने से जुड़ा है यह इतिहास।

झारखण्ड के रामगढ़ जिले स्थित इस शिव मन्दिर को लोग टूटी झरना के नाम से जाने जाते है। मंदिर का इतिहास सन 1925 से जुड़ा हुवा है और माना जाता है कि तब अंग्रेज इस इलाके से रेलवे लाइन बिछाने का काम कर रहे थे। पानी के खुदाई के दौरान उन्हें जमीन के अंदर कुछ गुम्बदनुमा चीज दिखाई पड़ा। अंग्रेजों इस बात को जानने के लिये पूरी खुदाई करवाये। और अंत मे ये मन्दिर पूरी तरह नजर आया। मन्दिर के अंदर भगवान भोले जी का शिवलिंग मिला और उसके ठीक ऊपर माँ गंगा की सफेद रंग की प्रतिमा मिली। प्रतिमा के नाभि से अपरुपि जल निकलता रहता है जो उनके दोनो हाथों के हथेली से गुजरते हुए शिवलिंग पर गिरता है। मन्दिर के अंदर माँ गंगा की प्रतिमा से स्वयं पानी निकलना अपने आप मे एक कौतुहल का विषय बना है।

माँ गंगा की जल धारा का रहस्य

सवाल यह है कि आखिर यह पानी अपने आप कहाँ से आ रही है ।यह बात अभी रहस्य बनी हुयी है।कहा जाता है कि भगवान शंकर के शिवलिंग पर जलाभिषेक कोई ओर नहीं स्वयं माँ गंगा करती है। यहाँ लगाए गए दो हैंडपंप भी रहस्यों से घिरे हुए है। यहाँ लोगों को पानी के लिये हैंडपम्प चलाने की जरूरत नहीं पड़ती है बल्कि इसमें से अपने आप हमेशा पानी निचे गिरता रहता है। वहीं मन्दिर के पास से ही एक नदी गुजरती है जो सुखी हुई है लेकिन भीषण गर्मी मे भी इन हैंडपंप से पानी लगातार निकलता रहता है।

दर्शन के लिये बडी संख्या मे आते हैं ।श्रद्धालु लोग बहुत दूर दूर से यहाँ पूजा करने आते हैं और सालभर मन्दिर मे श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।श्रद्धालुओं का मानना है कि टूटी झरना मन्दिर मे जो कोई भक्त भगवान के इस अदभुत रूप के दर्शन कर लेता है उनकी मुराद पूरी हो जाती है। भक्त शिवलिंग पर गिरने वाले जल को प्रसाद के रूप मे ग्रहण करते हैं और इसे अपने घर ले जाकर रख लेते हैं। इसे ग्रहण करने के साथ ही मन शांत हो जाता है और दुखो से लड़ने की ताकत मिल जाती है।

कुमार अरूणोदय की तीश्ता को मार्मिक श्रद्धांजलि

कुमार अरूणोदय पटना के प्रतिष्ठित कृष्णा निकेतन स्कूल के निदेशक है। भोजपुरी लोक कलाकार तीश्ता अनुभूति के निधन के बाद उनके द्वारा दी गई श्रद्धांजलि काफी मर्माहत करती है...
ऐ तिस्ता बिटिया.!

बात बहुत दिनों की नही, करीब डेढ़-दो सौ साल पहले की रही होगी। अंग्रेजो से मुक्ति के लिए पूरा देश छटपटा रहा था। कम उम्र के बागी नौजवान हो या, अधेड़ उम्र के सेनानी, सभी अपनी पूरी ताकत से, दमखम से अंग्रेजों को निकाल बाहर करने में दिनरात एक किये हुए थे। बागियों के लिए क्या दिन और क्या रात.! न तो परिवार का ठिकाना और न ही खुद के रहने-खाने का कोई समुचित जुगाड़.! बस, मन मे एक लगन और लौ लिए सभी चल पड़े थे, माँ भारती के कदमो को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने हेतु.!

मैं कोई बहुत बड़ा वीर-बाँकुरा नही था, और न ही कोई असामान्य दिखने वाला विशाल व्यक्ति था., मैं तो बस माँ भारती के गुलामी को तोड़ने वाले दीवानों की टोली का एक हिस्सा भर बन गया था। यह दूसरी बात कि, मेरे त्याग,वीरता, शौर्य को देखते-समझते हुए माँ भारती की कृपा से सभी देशवासियों ने मुझे स्वतंत्रता-संग्राम के अग्रणी सेनानियों में स्वीकार कर लिया था.!

उन दिनों मैंने कभी नहीं सोचा था कि, आने वाले स्वतंत्र भारत मे हममें से किसी भी माँ भारती-पुत्र की गाथा भी गायी जाएगी.! माँ भारती की कृपा हुई, हम गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने में सफल भी हुए और माँ भारती के स्वर्णिमता की नयी कहानी लिखी जाने लगी.!

ये देखो बिटिया.! तुम भी कहोगी कि, इतनी पुरानी कहानी मैं तुम्हे क्यो सुना रहा हूँ.?

मतलब है इसका, बिटिया.!

हम माँ भारती-पुत्रो ने बेड़ियों को तोड़ने में भले ही अपनी जान का उत्सर्ग किया है, पर क्या हमें इतना भी स्नेह-सम्मान-अधिकार नही मिलना चाहिए कि, हमारी वीर गाथाओं को स्वतंत्र भारत के नयी पीढ़ी के नौनिहालों को सुनाया जाए.?

बहुत दिनों से इसकी प्रतीक्षा थी बिटिया कि, कोई तो हो जो, हमारी जीवनी-कहानी-शौर्य गाथा को लयबद्ध कर के, माँ भारती के पूरे कुनबे को सुना सके.!

तेरे जन्म पर बड़े खुश हुए थे हम, कि जिस बिटिया की तमन्ना थी, आयी है और आने वाले दिनों में स्वर्णिम इतिहास को माँ भारती पुत्रो को बाँचने का काम भी सकल होगा.!

जिस कहानी को स्वतंत्रता के कई दशकों बाद भी जन मानस तक पहुँचने में काफी समय लगा, उसी बलिदानी

कहानी को तुमने इतनी सहजता-सरलता से और इतने कम समय मे ही अधिकांश को बाँच दिया, बिटिया.?

अभी तो तुम्हारी शुरूआत थी, माँ भारती के शौर्य-कथा को सरहदों के पार भी जाकर बाँचना था, और तो और मेरी कथा के साथ ही माँ सीता-माँ राधा की कहानी पर भी तो काम करना था.!

जो बिटिया इतनी जल्दी और कम समय मे इतने बड़े कथानक को नए प्रयोगात्मक रूप से पूरे देश के सामने बाँच सकती है, भला वह बिटिया तनिक शारीरिक आघात से कैसे हार गयी.?

मुझे तो विश्वास ही नही हो रहा कि, जिस वीरगाथा को बाँचते हुए देखना, देवलोक से भी हम देखते-सुनते नही अघाते थे, अब किससे यह उम्मीद करें, हम.?

तुमने तो अपना सर्वस्व झोंक दिया था, भारतीय संस्कृति और संस्कार को बचाने में., फिर यह घोर अन्याय कैसे हो गया.? निश्चित रूप से ईश्वर से कहीं न कहीं चूक हुई है, जब ईश्वर से मिलूँगा तो अपनी बात रखूँगा जरूर.! कहीं परमपिता ईश्वर यह न कह दें कि, तिस्ता बिटिया को सुनने और देखने की ईच्छा देवलोक में देवो और देवियों को हो गयी थी, सो बिटिया को बुलाना पड़ा.! मेरे हिसाब से यह गलत हुआ है, क्योंकि भू-लोक में सभी देव तो तुम्हे देख ही सकते थे, फिर बुलाने की क्या जरूरत थी.? नुकसान यह हुआ कि, भू-लोक के लोग अब तुम्हे नही देख पायेंगे.! डर तो यह भी है कि, तुमने जो संकल्प लिया था, माँ भारती-पुत्रों के संस्कार और संस्कृति को बचाने की कवायद की, कहीं उसकी आँच या लौ धीमी न पड़ जाए..!

तुम्हे बचाने में तुम्हारे पापा जी ने जो भी किया, हम नमन करते है, उनकी जिजीविषित बिटिया-स्नेह को., यह अद्भूत था। यह भी पता चला कि, इसी दशहरे समय, अरुणोदय भी पटना के बिटियाओं वाले विद्यालय में तुम्हारा एक बड़ा कार्यक्रम करवाने को नियत कर चुका था, पर ईश्वर की ईच्छा और होनी के सामने भला किसका चला है.!

अब अधिक नही लिख पा रहा हूँ, पर यह कह कर अपनी बात जरूर रखूँगा कि, अंग्रेजो की गोली से जख्मी हाथ को खुद ही काट कर माँ गंगा को समर्पित करने में भी मैं न तो हिचकिचाया था और न ही दर्द से कराहा था, पर तुझ जैसी बिटिया के देवलोक-वापसी से मन व्यथित भी है, आत्मा रो भी रही है.!

तुम्हे बहुत दूर जाना था अभी, दो-चार पगों में ही तुझसे हिसाब ले लिया गया.! तुम्हे ईश्वर अपने शरण मे रखे, इस विश्वास पर कि, भू-लोक में तुम्हारी वापसी फिर से हो, ताकि माँ भारती भी तुम्हे पुनः पाकर हर्ष कर सके.!

अपना ख्याल रखना बिटिया, शुभाशीष..!

(पुरखा बाबू वीर कुँवर सिंह जी, देवलोक)

और चली गई तीस्ता.....

अश्रुपूरित नैनों से लिखते हुए हाथ कांप रहें हैं मन विचलित है विचार शुन्य हूं कि हम अपने इस बहन को नहीं बचा सके और हमारी तीस्ता के साथ ही खामोश हो गई वीर रस कि वह बुलंद आवाज और वह भाव-भंगिमा जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बाबू वीर कुंवर सिंह की विजय गाथा के माध्यम से बिहार के माटी की मान बढ़ा रही थी 17 वर्ष की आयु कोई जाने की नहीं होती। तुम नहीं गई हो तीस्ता तुम्हारे साथ हम सबके सपने अरमान और वह सभी भावी योजनाएं भी विलीन हो गई जो हम सब ने सम्मिलित रूप से भोजपुरी के उत्थान के लिए देखा था। हम तुम्हारे दोषी हैं बहन कि हम सब सजग रहते हुए उस व्यवस्था के क्रूरता का शिकार हो गए जो तुम्हें मौत के आगोश तक ले गया। हम जब तक जगे तब तक तुमने आंखें मूंद ली। जब तुम इलाज के लिए आई थी और तुम्हारा गलत इलाज हो रहा था दवाओं का ओवरडोज दिया जा रहा था तब तक हम सभी सोए थे काश हम सब जग गए होते तो आज तुम्हें नहीं सोना पड़ता तुम नहीं जा सकती तुम हमेशा हमारे दिलों दिमाग और जेहन में जिंदा रहोगी।

लौटआओतिस्ता

तीस्ता ने 26 जुलाई को अपने फेसबुक वॉल पर बहुत ही मार्मिक पोस्ट अपने पिता और संगीत गुरु उदय नारायण सिंह के लिए लिखा था कि पिता के चेहरे की झुर्रियां बेटे-बेटियों की सफलता की कहानियां गढ़ती है मेरा सौभाग्य है कि मैं आपकी बेटी हूं और हर एक जन्म में मैं आपकी बेटी बनना चाहती हूं। मूल रूप से छपरा के रिविलगंज इलाके से आने वाली तीस्ता के पिता उदय नारायण सिंह भोजपुरी संगीत के मर्मज्ञ है व भिखारी ठाकुर और महेंद्र मिश्र की परंपरा को जिंदा रखा है तीस्ता के माध्यम से वह भोजपुरी को एक नई विधा बाबू वीर कुंवर सिंह विजय गाथा के रूप में दे चुके थे। 10 दिन पहले जिसका बुखार से पीड़ित हुई थी उसे बेहतर इलाज के लिए पटना के एम्स में भर्ती कराया गया था जहां उसकी बीमारी डॉक्टरों को समझ में नहीं आ रही थी डेंगू का इलाज चल रहा था दवाओं का ओवरडोज दिया जा रहा था जिस कारण से तीश्ता की स्थिति बिगड़ती गई और अंततः विगत 4 दिनों से जीवन और मौत की जंग में हार गई और साथ ही हार गई वह सभी संभावनाएं जो भोजपुरी को एक नई विधा एक नई परंपरा का सपना दिखाया था।

पटना प्रमंडल के लाइफ लाइन के गौरवशाली इतिहास का अवशेष !

ये फोटो सोन नद के डेहरी स्थित एनिकट का है जहां आज से करीब डेढ़ सौ वर्ष पूर्व बिहार के वर्तमान रोहतास, कैमूर, बक्सर, भोजपुर, औरंगाबाद, अरवल तथा पटना जिला के लिए भाग्य रेखा एक अंग्रेज फौजी अभियंता ने खिंची थी। और इसी भाग्य रेखा के बदौलत पटना, गया और शाहाबाद प्रक्षेत्र आज खुशहाल है।

दरअसल 1857 में शाहाबाद की धरती पर कुंअर सिंह एवं अन्य लोगों ने अग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह किया तो उनके बाद यहां के लोगों को रोजगार देने के लिए सोन नहर प्रणाली की नींव रखी गई। फौजी अभियंता लेफ्टीनेंट जनरल सी. एच. डिकेन्स ने 1857 के विद्रोह के बाद1860 में इस्ट इन्डिया कम्पनी के आदेश पर शाहाबाद क्षेत्र का सर्वे कराकर एक रिपोर्ट तैयार किया और वह रिपोर्ट 1861 में वह प्रस्तुत किया। उसी रिपोर्ट के आधार पर डेहरी के एनीकट में 12469 फुट लम्बा 120 फुट चौड़ा तथा सधारण जलस्तर से आठ फुट उच्चा बांध बनाकर1873 तक नहरों का निर्माण कर पानी भी छोड़ दिया गया था। इन नहरों से सिंचाई के अलावे यातायात एवं माल ढुलाई के लिए कोयला से संचालित स्टीमर को भी चलाया जाता था। उस समय यह विश्व का सबसे उत्तम नहर प्रणाली था जिसे देखने और अध्ययन करने के लिए अमेरिका के इंजीनियरों का एक दल यहां आया था।

इसके बेसिन में बालू जमने के बाद करीब दस किलोमीटर उपर इन्द्रपुरी में बराज बनाकर 1965 में संयोजक नहर के द्वारा एनीकट के नहरों को जोड़ा गया।

आज वही एनीकट डेहरी के लोगों के लिए घूमने का सबसे पसंदीदा स्थान बना हुआ है।

दुनिया से ग्लोबल विलेज तक का जो सफर है उसकी अहम कड़ी है डिजिटलाइजेशन

आज दुनिया को ग्लोबल विलेज कहा जाता है। दुनिया से ग्लोबल विलेज तक का जो सफर है उसकी अहम कड़ी है डिजिटलाइजेशन। आज विवाह से लेकर मृत्यु तक डिजिटलाइजेशन से प्रभावित है। बाजार और आर्थिक क्षेत्र तो लगभग डिजिटल हो चुके है। ऐसी परिस्थिति में अपराध की भी प्रकृति बदली है । अपराध का भी डिजिटलाइजेशन हो चुका है। लोग आनलाइन फ्रॉड कर रहे हैं। सबसे अधिक खतरा बैंक खाते पर और एटीएम के माध्यम से लेनदेन पर है। लिहाजा समाज को डिजिटल रूप से जागरूक करने की आवश्यकता है।

इस बाबत बिहार के किशनगंज एसपी कुमार आशीष बेहतर काम कर रहे हैं । प्रस्तुत है जनहित में जारी उनका संदेश

अपना एटीएम लेनदेन पूर्ण गोपनीयता से करें, अपनी व्यक्तिगत पहचान संख्या (एटीएम पिन पासवर्ड) दर्ज करते हुए उसे कभी भी किसी भी व्यक्ति को न देखने दें।

लेनदेन पूर्ण होने के बाद यह सुनिश्चित करें कि एटीएम स्क्रीन पर वेलकम स्क्रीन दिखाई दे रही है।

सुनिश्चित करें कि आपका वर्तमान मोबाइल नम्बर बैंक के पास रजिस्टर्ड है जिससे आप अपने सभी लेनदेनों के लिए अलर्ट संदेश प्राप्त कर सकें।

एटीएम के आसपास संदेहजनक लोगों की हलचल या आपको बातों में उलझाने वाले अजनबी व्यक्तियों से सावधान रहें।

एटीएम मशीनों से जुड़े हुए ऐसे अतिरिक्त यंत्रों को देखें जो संदेहस्पद दिखाई देते हों।

यदि एटीएम / डेबिट कार्ड गुम गया हो या चुरा लिया गया हो, तो इसकी सूचना तुरंत बैंक को दें, यदि कोई अनधिकृत लेनदेन हो, तो उसे रिपोर्ट करें।

लेनदेन संबंधी अलर्ट एसएमएस और बैंक विवरणों की नियमित रूप से जाँच करें।

यदि नकदी संवितरित नहीं की गई हो और एटीएम में ह्लनकदी खत्मह्व/ह्लूरँ ङ्क४३ह्व दशार्या नहीं गया हो, तो नोटिस बोर्ड पर लिखे टेलीफोन नम्बर पर उसकी सूचना दें।

आपके खाते से राशि डेबिट करने के लिए फोन पर आए एसएमएस की तुरंत जाँच करें।

क्या न करें

कभी भी फोन या २२ द्वारा बैंक एकाउंट/पिन न०/ओटीपी न० पूछे जाने पर बिल्कुल ना बताएं, फोन काट दें और नजदीकी थाने को लिखित सूचना दें। किसी भी बैंक द्वारा ऐसा फोन नहीं किया जाता है। छद्म रूप से फर्जी कॉल करनेवालों से सावधान रहें।

कार्ड पर अपना पिन नम्बर न लिखें, अपना पिन नम्बर याद रखें।

अजनबी व्यक्तियों की सहायता न लें। कार्ड का उपयोग करने के लिए अपना कार्ड किसी भी व्यक्ति को न दें।

बैंक कर्मचारियों एवं परिवार के सदस्यों सहित अपना पिन किसी भी व्यक्ति को न बताएं।

जब आप भुगतान कर रहे हों, तब कार्ड को अपनी नजरों से दूर न होने दें।

लेनदेन करते समय, आप मोबाइल फोन पर बात न करें।

इन सब सावधानियों के बाद भी अगर कभी ऐसी धोखाधड़ी या अवैध रूप से पैसे की निकासी हो जाती है तो तुरंत नजदीकी बैंक शाखा मैनेजर को कार्ड/एकाउंट ब्लॉक करवाते हुए लोकल थाने में ऋक्षफ दर्ज करवाएं।

सतर्क रहें, सुरक्षित रहें
निवेदक
किशनगंज पुलिस

2 अक्टूबर से अन्ना हजारे रालेगणसिद्धि में शुरू करेंगे आन्दोलन

कार्यकताओं से अपने-अपने गांव-जिले में आन्दोलन के लिये किया अनुरोध

लोकपाल एवं लोकायुक्त की माँगों को लेकर एक बार फिर अन्ना हजारे आगामी 2 अक्टूबर से आन्दोलन शुरू करेंगे। इस बार वे महाराष्ट्र स्थित अपने गाँव रालेगणसिद्धि में ही आंदोलन की शुरूआत करेंगे। अन्ना हजारे ने देश भर के अपने कार्यकताओं को भी अपने-अपने गाँव एवं जिले में ही आन्दोलन शुरू करने का अनुरोध किया है।

इस बाबत अन्ना हजारे ने अपने कार्यकताओं के नाम एक पत्र जारी करते हुये लिखा है कि उन्होंने 23 मार्च 2018 को किसानों को खर्चा पर आधारित कृषि पैदावारी के दाम के लिये एवं लोकपाल और लोकायुक्त की नियुक्ति के लिये दिल्ली के रामलीला मैदान में अनशन किया था। तब नरेंद्र मोदी सरकार ने उन्हें अनशन छोड़ने के लिए लिखित आश्वासन दिया था कि उनकी माँगों पर जरूर अमल होगा। आगे अन्ना हजारे लिखते हैं कि 29 मार्च 2018 को अनशन छोड़ते समय उन्होंने सरकार को बताया था कि छह माह में उन आश्वासनों की पूर्ति हो, अन्यथा उन्हें पुनः आन्दोलन के लिये मजबूर होना पड़ेगा।

अन्ना लिखते हैं कि। पाँच माह बीत गये, पर अब तक केन्द्र सरकार ने इस दिशा में कुछ भी नहीं किया। उन्होंने पिछले पाँच माह में छह बार प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखा लेकिन आश्वासन के बाद भी सरकार ने कुछ निर्णय नहीं लिया।

इसलिये 2 अक्टूबर 2018 को महात्मा गांधीजी के जयंती के अवसर पर किसानों को स्वामीनाथन आयोग के सिफारिशों के मुताबिक खेतीमाल का दाम मिले एवं लोकपाल और लोकायुक्त की नियुक्त हो, मुद्दों पर वे अपने गाँव रालेगणसिद्दि से आंदोलन शुरू करेंगे।

उन्होंने कार्यकताओं एवं आम जनता से विनती की है कि जिन-जिन लोगों को लगता है कि आंदोलन करना जरूरी है, वे अपने-अपने गाँव, तहसिल एवं जिलों में जिलाधिकारी कार्यालय के सामने आंदोलन करें।

उन्होंने आंदोलन करने के लिए रालेगणसिद्दी आने से कार्यकताओं एवं आम जनता से न आने का भी आग्रह किया है।

अन्ना हजारे ने कार्यकताओं के नाम यह पत्र 26 अगस्त को देर शाम जारी किया है।

हौसलों की उड़ान से क्षितिज पर चमकी बिहार की बेटी

सरिता बिहार की समाजसेवी बेटी सरिता राय करती है गरीब- गुरुवों की मदद.....**आशिष कुमार झा (सहरसा)** दृढ़ इच्छाशक्ति और कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो लक्ष्य तक पहुचने की राह आसान बन जाती है और आगे बढ़ने का रास्ता आसान हो जाता हैं। इस भागमभाग दौर में भी कुछ ऐसे भी लोग है जो जिन्हें अपने साथ- साथ समाज व देश की चिंता है। नारी कमजोर नहीं होती वह अगर ठान ले तो हर मुकाम को हासिल कर सकती हैं। ऐसा ही एक नाम है बिहार के हाजीपुर की सरिता राय की जो आज नारी सशक्तिकरण की मिसाल बन चुकी हैं। सरिता की हौसले ने उड़ान भरी और सफलता ने उनकी कदम छुई और आज उनकी कृति क्षितिज पर चमक रही है। अपने जीवन में कई चुनौती का सामना करते हुए बिहार की बेटी सरिता न केवल खुद पढ़ी बल्कि अशिक्षा, गरीबी, रोजी- रोजगार के लिए जुझनेवाले परिवारों के लिए बच्चों व महिलाओं के बीच शिक्षा का अलख जगा रही है। सरिता अपने जीवन के संघर्ष के शिखर पर चढाने से कभी नहीं हिचकी। गरीबों, वंचितों के बीच जातपात व धर्म समाज से ऊपर उठकर अपने दम पर आज वह नारी सशक्तिकरण के लिए कटिबद्ध है। प्रारंभिक दौर से विलक्षण प्रतिभा की धनी रही सरिता का लगाव शिक्षा से रहा है।

बालिकाओं, महिलाओं के उत्थान के प्रति इनका रुझान रहा है। ये दलित वे महादलित बालिकाओं, महिलाओं को जागरूक कर समाज के मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रयासरत रही हैं। बिहार की समाजसेवी बेटी सरिता राय ने हर परिस्थितियों में गरीब- गुरवो झुग्गी- झोपड़ी में रहने वाले बच्चों को अपनी टॉपर स्टडी पॉइंट उड़ान संस्था के बैनर तले शिक्षा देकर उन्हें शिक्षा की ओर जागृति पैदा कर रही है। जहां सैकड़ों बच्चे शिक्षा पा रहे है। शिक्षा जीवन के लिए एक उपहार है। इनकी संस्था बच्चों को स्कूल तक पहुचाने में मदद करते है। और विभिन्न तरीकों से वंचित बच्चों को शिक्षा की ओर जागरूक करने के लिए कार्यक्रम चलाती रहती है।और गांव की महिलाओं के मुद्दों, महिला शक्तिकरण एवं गरीब बच्चों के भविष्य को संवारने में लगी रहती है। सरीता राय ने महिला उत्पीड़न, भेदभाव और जन मुद्दों को रेखांकित करते हुए कहा कि महिलाओं के हित में कई कानून तो बना दिये गये लेकिन सरकार को उन्हें लागू करने की इच्छा शक्ति नहीं है आज भी महिलाओं, गरीब, दलितों, पिछड़े महिलाओं पर उत्पीड़न, भेदभाव जारी है। श्रीमती राय ने कहा कि जब चुनाव का समय आता है तो गरमा- गरमी माहौल में भी निस्वार्थ भाव से टॉपर स्टडी पॉइंट उड़ान उन गरीब और असाहय गरीब बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने के लिए पहल करती है। उन्होंने जनप्रतिनिधियों पर तंज कसते हुए कहा कि जब चुनाव का वक्त आता है तो चुनावी माहौल में प्रतिदीन वोट के लिए प्रचार करने हर कोई जनप्रतिनिधी आते है मगर जमीनी मदद कोई नहीं करता वोट सबको चाहिए लेकीन जज्बा किसी में नहीं शिक्षा का महत्व नही समझते इसलिए टॉपर स्टडी पॉइंट उड़ान की कोशिश है जो बच्चे स्कूल तक जा नही पाते उनको शिक्षा देने की टॉपर स्टडी पॉइंट उड़ान मुफ्त शिक्षा देने के लिए शुरूआत की। बच्चों को सही दिशा, वंचित बच्चों को शिक्षित करने के लिए शुरूआत की है। उन्होंने कहा कि उड़ान के माध्यम से बचपन को बचाने, सवारने और सजाने के लिए कार्य किया जा रहा है। बच्चें देश के भविष्य है और उनके भविष्य को बचाने के लिए हमलोगों को एकजुट होकर कार्य करने की जरूरत है। समाज के सभी लोगों को इस मुहिम में साथ देने के लिए तैयार रहना पड़ेगा।

आपको बता दें कि सरिता राय बचपन से एक शिक्षित परिवार में रही हैं। इसका उनपर काफी प्रभाव पड़ा हैं उन्हें बचपन से ही पढ़ाई का महत्व पता चल गया था उनके पिता के फारेस्ट अफसर होने के कारण उनके घर पर अक्सर गुणवान और ज्ञानी लोग घर पर आते थे। एक दिन जब उन्होंने कुछ बच्चों को स्ट्रीट लाइट के नीचे पढ़ते देखा तो उनका दिल दहल उठा। भले ही

हमारे लिए ये सामान्य बात हो पर ये दृश्य ने उनके दिल पर भारी प्रभाव डाला। तब उन्होंने यह ठान लिया कि इन असहाय बच्चों को पढ़ाई करने में मदद करेंगी। अजीब बात हैं जिस दृश्य को हम रोज देखते पर हमारे आंखों पर लालच की पट्टी लगी होती हैं उसे एक आम औरत अपना मिशन में कर बिहार की बेटी बन गई। अत्याचार सहने वाली छोटी- छोटी लड़कियों का भविष्य संवारने का काम सरिता ने शुरू किया लोगों के अन्दर जागरूकता लाकर। उन्हें ये भी पता था की ये इतना आसान नहीं है उनके लिए क्योकि घरवालों का विरोध और समाज की तीखी नजर। लेकिन इन सबका सामना करते हुए आखिरकार सरिता ने अपनी जिद पूरी कर ही ली। समाज ने तो हर उस चीज का जिम्मा उठा रखा है जिसके बारें में हम और आप शायद ही कभी सोचते होंगे। लड़की की शादी न हो तो पचास सवाल उठने शुरू हो जाते है, जरूर कोई चक्कर होगा, कोई कमी होगी तभी तो शादी नहीं होती। हाय बेचारी लड़की कैसे अकेले जीवन काटेगी। क्यों भाई शादी के बाद वो कौन सा एक सौ लोगों से घिरी रहने वाली है, कौन उसके पति के मरने के बाद उसका साथ देगा, वो भी छोड़ो पति क्या उसका उसके साथ जाएगा कौन उसके लिए जान देने को तैयार होगा। कुछ लोग और उनके परिवार नहीं चाहते थे की शादी के बाद हमारी बहु या पत्नी कही बाहर निकले।

सरकार के गलत नीतियों के खिलाफ लैब टेक्नोलॉजिस्ट का सड़को पर उमरा जनसैलाब, बात नही मानी गई तो आगे भी होगा आंदोलन

जाहिद अनवर (राजु) / दरभंगा

दरभंगा--आज एशोसियेसन ऑफ मेडिकल लैब टेक्नोलॉजिस्ट बिहार के दरभंगा शाखा की ओर से कैंडिल मार्च निकाला गया जिसमें करीब तीन सौ से ज्यादा लैब टेक्नोलॉजिस्ट शामिल थे। एशोसियेसन के प्रदेश सचिव राम कृष्ण शर्मा ने कैण्डिल मार्च के समापन के बाद कहा कि लैब टेक्नोलॉजिस्ट स्वास्थ्य विभाग का रीढ़ है। राज्य के अन्तर्गत 2100 से ज्यादा छोटे बड़े अस्पताल चल रहे है जिसमें सिर्फ 36 पैथोलोजिस्ट है वाकि सभी जगह लैब टेक्नोलॉजिस्ट ही जाँच कर रिपोर्ट देते हैं जबकि निजी लैब चलाने पर रोक लगाया जा रहा है। केंद्र सरकार की गजट संख्या 327 / 21 मई 2018 के द्वारा लैब को तीन कैटेगरी में बांटा गया है इसमें बेसिक लैब चलाने के लिए लैब टेक्नोलॉजिस्ट को अधिकार दिया गया है जिसे देश के कुछ राज्यों में लागू भी कर दी गयी है लेकिन बिहार में रोका जा रहा है। इससे लैब टेक्नोलॉजिस्टों में भारी आक्रोश है। इस कैंडल मार्च में एसोसिएशन के सचिव

रामकृष्ण शर्मा, उपसचिव ए. के. अमर, कोषाध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद और आकिफ मदनी, प्रवक्ता कृष्ण कुमार ठाकुर, मीडिया प्रभारी दयानंद सरस्वती, जिला अध्यक्ष राम प्रकाश कामत, जिला सचिव राजू कुमार यादव, जिला कोषाध्यक्ष चक्र वीर भारती फलिंदर, मनोहर, प्रमोद, परमेश्वर आदि अन्य सक्रिय सदस्य मौजुद थे।

मिथिला पेंटिंग को मिला और बढ़ावा, बिहार संपर्क क्रांति ट्रेन सुसज्जित होकर निकली दिल्ली के लिए रवाना

जाहिद अनवर (राजु) / दरभंगा

मिथिला पेंटिंग को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रेल ने अच्छी पहल की है। दरभंगा से नई दिल्ली जाने वाली बिहार सम्पर्क क्रांति आज दरभंगा जंक्शन पर नये रूप में नजर आयी। ट्रेन के 9 डिब्बे बिल्कुल नई नवेली दुल्हन की तरह सज-धजकर स्टेशन पर पहुंची। विश्व प्रसिद्ध बिहार के मधुबनी चित्रकला का स्वरूप आज बिहार संपर्क क्रांति के 9 डिब्बा में नजर आ रहा था। मधुबनी चित्रकला जो आज मिथिला चित्रकला के रूप में देश और विदेश में अपना अलग पहचान बना चुकी है उसको रेल मंत्रालय ने सम्मानित करने का काम किया है। इन बोगियों को मधुबनी चित्रकला से सजाने के लिए 50 से अधिक महिला चित्रकार दिन-रात काम कर रही थी। हलांकि इस ट्रेन की कुछ बोगियों को अभी नहीं सजाया जा सका है लेकिन इस संबंध में अधिकारियों की बात माने तो बहुत जल्द ही बिहार सम्पर्क क्रांति ट्रेन की सभी बोगियां मधुबनी चित्रकला से सुसज्जित होंगी। नये रूपसज्जा के साथ इस ट्रेन को आज समस्तीपुर के डीआरएम रविन्द्र कुमार जैन की मौजूदगी में रवाना किया गया। उन्होंने आज स्वयं इस ट्रेन में सफर किया। उन्होंने बताया कि वैसे तो मधुबनी चित्रकला पूरी दुनियां में प्रसिद्ध है लेकिन देश में अब यह ट्रेन जिस रूट से गुजरेगी इसका और ज्यादा प्रचार-प्रसार होगा। उन्होंने कहा कि रेलवे के इस पहल से मधुबनी चित्रकला देश में और अधिक लोगों तक पहुंचेगी।

जिलाधिकारी के स्वास्थ्य समीक्षा बैठक में कई पदाधिकारियों पर गिरी गाज, कई अधिकारी से स्पष्टीकरण

जाहिद अनवर (राजु) / दरभंगा

स्वास्थ्य विभाग की लचर स्थिति को देखते हुए जिलाधिकारी डॉ.चंद्रशेखर सिंह ने नाराजगी जताते हुए बहेड़ी प्रखंड के चिकित्सा प्रभारी को पदमुक्त करने का आदेश दिया है और एक दर्जन से अधिक चिकित्सा प्रभारी एवं स्वास्थ्य मैनेजर से स्पष्टीकरण पूछने का आदेश दिया है। जिलाधिकारी ने आधे दर्जन चिकित्सा पदाधिकारी को परफॉर्मेन्स में सुधार लाने की चेतावनी दी है। जिलाधिकारी आज समाहरणालय सभा कक्ष में स्वास्थ्य विभाग के क्रिया-कलापों की मासिक समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अस्पतालों में उपलब्ध संसाधनों से जरूरतमंद मरीजों का हरसंभव चिकित्सा सेवा प्रदान की जाए। ओपीडी एवं इंडोर में किए जा रहे ईलाज की समीक्षा में बताया गया है कि सभी प्रकार की दवाइयां सभी स्वास्थ्य केंद्रों में उपलब्ध हैं। इंडोर में मरीजों के ईलाज के संदर्भ में बहादुरपुर एवं बेनीपुर के चिकित्सा प्रभारी को और सुधार लाने का निर्देश दिया गया है। बैठक में सभी चिकित्सा प्रभारियों से कहा गया कि संस्थागत प्रसव को बढ़ावा दें एवं इसके लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चलाएं। इसमे पिछड़ रहे सदर प्रखण्ड, गौड़ा बौराम,-बेनीपुर एवं केवटी के चिकित्सा प्रभारी को संस्थागत प्रसव में और सुधार लाने के निर्देश दिया है। उन्होंने सिविल सर्जन को निर्देश दिया कि जाले, मनीगाछी एवं बेनीपुर अनुमंडलीय अस्पताल में सिजेरियन प्रसव की सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में ठोस कार्रवाई करें। जननी बाल सुरक्षा योजना में भुगतान करने में सबसे पिछड़े बहेड़ी के चिकित्सा प्रभारी से शोकॉज करते हुए उनकी जगह दूसरे प्रभारी को नियुक्त करने का भी निर्देश दिया। राष्ट्रीय बाल सुरक्षा कार्यक्रम में लक्ष्य से काफी कम उपलब्धि वाले बहेड़ी, बेनीपुर, बिरौल, कुशेश्वरस्थान पूर्वी एवं हनुमाननगर के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों से भी शोकॉउज किया गया। आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत डाटा कलेक्शन में पिछड़े जाले, हायाघाट, कुशेश्वरस्थान पूर्वी, बहादुरपुर एवं बेनीपुर के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी एवं हेल्थ मैनेजर से शोकॉउज किया गया। स्त्री बंध्याकरण में पिछड़े प्रखंड हनुमाननगर, बेनीपुर अनुमंडलीय अस्पताल एवं हायाघाट को अपना परफॉर्मेंस सुधारने को कहा गया। उन्होंने कहा कि परिवार नियोजन के लिए सरकार द्वारा सभी अस्पतालों में अंतरा गर्भनिरोधक सुई उपलब्ध करा दी गई हैं। सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों को लोगों में इसके बारे में व्यापक जागरूकता फैलाने को कहा गया। अंतरा के वितरण में पिछड़े कुशेश्वरस्थान स्थान एवं बेनीपुर के प्रभारी से शोकॉउज किया गया। टीकाकरण के कार्य में उदासीनता बरतने वाले बिरौल, बहादुरपुर, हायाघाट, मनीगाछी एवं बहेड़ी के चिकित्सा प्रभारियों से शोकॉउज किया गया तथा उन्हें अपना परफॉर्मेंस सुधारने की हिदायत दी गई। सिविल सर्जन को इस कार्य की मॉनिटरिंग करने की जिम्मेवारी दी गयी।

पुलिस कप्तान कुमार आशीष बने शिक्षक,बच्चों को दिए कई टिप्स

किशनगंज एस.पी.कुमार आशीष बने शिक्षक और अपने भ्रमण के बीच जिले के मध्य विद्यालय, टप्पू में बच्चों की क्लास लगाकर, उन्हे आगे बढ़ने के लिए कई टिप्स दिये।पुलिस अधीक्षक, कुमार आशीष को अपने बीच पाकर स्कूली बच्चे खुशी फूले नहीं समा रहे थे।यूं कह लिया जाय कि किशनगंज में पदस्थापना के बाद इनका इस प्रखंड में पहला दौरा था।जहां आते हीं इन्होने आदर्श म.वि.टप्पू का रुख किया।शिक्षक की भूमिका में एस.पी.ने छोटे छोटे बच्चों के बीच केवल एक शिक्षक हीं नहीं ,बल्कि एक दोस्त की भी भूमिकाओं को निभा रहे थे।जिसके लिए इन्होने पिछले दिनों लोगों से आह्वाहन भी किया था।खासतौर पर इनका स्कूल में आना एक तरफ जहां लोगों के लिए कौतोहुल का विषय बना हुआ था।वहीं स्कूली शिक्षकों में एक अतिरिक्त उर्जा का संचार हो रहा था।स्कूल से निकलकर एस.पी. ने कस्तूरबा गांधी विद्यालय को भी देखा और अपने तयशुदा कार्यक्रम,दिघलबैंक थाना के लिए कूच कर गये। गौरतलब है कि किशनगंज का दिघलबैंक दौरा अपने आप में एक अजूबा और अविस्मरणीय माना जा रहा है।दिघलबैंक थाना के निरीक्षण के बाद इन्होने जनप्रतिनिधियों से भी संवाद किया।उनकी समसस्यायों को सुना और निदान करने का भरोसा दिलाया।पर ये क्या एस.पी. कुमार आशीष थाना परिसर में उड़ते बाज की तस्वीर उतारने में एक सधे फोटोग्राफर की भूमिका में भी दिखे।बताते चलें कि थानासिरस्ता के सामने बना चबुतरा उस विशालकाय बटबृक्ष के स्थान पर बना है।जहां प्रवासी पक्षियों का बसेरा बना रहता था। तकरीबन सौ साल पुराने बट बृक्ष का अस्तित्व एक भयंकर आंधी ने मिटा दिया था।थाना

निरीक्षण के बाद किशनगंज एस.पी.का काफिला भारत नेपाल सीमा के एस.एस.बी.आऊट पोस्ट की ओर बढ़ चला।जहां एस.एस.बी.की चौकसी,सीमा की निगरानी को मौजूद ईसपेक्टर सह कमांडर विकास चंद्र विश्वास ने कई अहम् जानकारियां. दी।इस क्रम में एस.पी. ने नोमेंस लेंड से सटे नेपाली क्षेत्र का भी अवलोकन किया।इनके साथ थानाध्यक्ष अरविंद कुमार एवं अन्य पदाधिकारी चल रहे थे।फिर पुलिस अधीक्षक ने चलते चलते पांच किलोमीटर दूर कोढ़ोबाड़ी थाना का भी निरीक्षण किया और जिला मुख्यालय की ओर कूच कर गये।अपने भ्रमण के बीच बहादुरगंज एल.आर.पी.चौक पर मौजूद पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष बहादुरगंज इरशाद अहमद से वार्ता कर उन्हें आवश्यक निर्देश देते हुए किशनगंज की ओर चल दिये।

वास्तव में पुलिस अधीक्षक कुमार आशीष जिन्हें इनाम देने से लेकर दंड देने तक की त्वरित क्षमतावान कहा जाता है।वहीं जिले में पदस्थापना के बाद दिघलबैंक थाना निरीक्षण कार्यक्रम,एवं इससे जुड़े अविश्मरणीय क्षणों की तुलना इनके व्यक्तित्व और कर्तव्यों को एक साथ जोड़कर करते देखे जा सकते हैं।जहां लोग एक पुलिस अधीक्षक की कई भूमिकाओं से रु व रु हुए हैं।स्कूली बच्चों के साथ कई टिप्स शेयरकर उनसे मित्रता करने की कला इस भ्रमण कार्यक्रम को यादगार बनाते बीत गया ।

दरभंगा संसदीय क्षेत्र कीर्ति व संजय होंगे आमने-सामने या फातमी और गोपालजी में होगी टक्कर?

दरभंगा : क्या फिर कीर्ति और संजय आमने-सामने होंगे या फिर गोपालजी और फातमी के बीच मुकाबला होगा. जी हां! दरभंगा संसदीय सीट को लेकर यह यक्ष प्रश्न बना हुआ है. जहां तक 2019 के लोकसभा चुनाव का प्रश्न है, तो वर्तमान गठबंधन की राजनीति में यह सीट किस दल के पास जाएगा यह तय नहीं है, लेकिन पिछले चार दिनों के अंदर सुर्खियों में आई एनडीए में सीटों के समझौता की खबर के बाद राजनीतिक जोड़-तोड़ शुरू हो गई. यद्यपि उस खबर का खंडन दलों द्वारा किया जा चुका है. दरभंगा संसदीय सीट पर लगातार दो बार के साथ तीन बार कीर्ति आजद यहां का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं. वहीं राजद के मो. अली अशरफ फातमी चार बार यहां का प्रतिनिधित्व किये हैं, लेकिन लगातार दो बार उन्हें हार का स्वाद चखना पड़ा है. कीर्ति आजाद भाजपा से निलंबित चल रहे हैं. यही कारण है कि उनके टिकट कटने का कयास आम लोग लगा रहे हैं. जहां तक गठबंधन की बात है, तो दरभंगा सीट महागठबंधन में राजद के पास रहेगा या फिर कांग्रेस को मिलेगा पर यह स्पष्ट नहीं है पर कीर्ति आजाद द्वारा खुले रूप से यह कहने कि वे यहीं से चुनाव लड़ेंगे और किसी राष्ट्रीय दल के टिकट पर ही. जिसके कारण राजद में फातमी के एकछत्र राज पर सवाल उठने लगे हैं. भाजपा अगर यहां से चुनाव लड़ती है, तो यहां से गोपालजी ठाकुर का नाम संगठन के गतिविधि से लोगों के जुवान पर आ रहा है. अगर गठबंधन के तहत जदयू के खाते में यह सीट जाता है, तो जदयू के राष्ट्रीय महासचिव संजय झा का नाम सामने आ रहा है, लेकिन विधायक सुनील चौधरी भी चुनाव लड़ने की मंशा जता चुके हैं. वैसे पिछले बार जदयू ने संजय झा को अपना प्रत्याशी बनाया था, लेकिन मोदी लहर में फातमी तो उड़े ही संजय झा भी तीसरे नम्बर पर चले गये. वैसे संभावना कम है, लेकिन सूत्र बताते हैं कि केन्द्र स्तर पर यह भी प्रयास हो रहे हैं कि कीर्ति अगर माफी मांग लें, तो उनका निलंबन समाप्त कर दिया जाएगा और उन्हें फिर से पार्टी का प्रत्याशी बना दिया जाएगा. सूत्र यह भी बताते हैं कि कीर्ति अपने द्वारा लगाये गये आरोपों की जांच की घोषणा की मांग पर अड़े हैं. बहरहाल ये सभी बातें अभी भविष्य के गर्भ में हैं, लेकिन यह सच्चाई है कि कीर्ति आजाद ब्राह्मण बहुल्य क्षेत्रों में जाकर लोगों से राय-मशविरा करना शुरू कर दिया है. गांवों में जाने के बाद सीधा प्रश्न लोगों से करते हैं कि मेरा दोष क्या है, मैने तो सिर्फ भ्रष्टाचार का मुद्दा उठाया है. कहीं उनके मनोनुकूल आश्वासन मिलता है, तो कहीं उनके मन के विपरीत आवाजें सुनाई पड़ती है. जदयू नेता संजय झा भी लोगों से सम्पर्क कर रहे हैं और पिछले छः वर्षों में वे जो कार्य किये हैं, उसका जिक्र करते हैं और कहते हैं मै न तो एमपी और न एमएलए था. फिर भी हमने जो कार्य किया है उसका आकलन होना चाहिए. जहां तक गोपालजी का प्रश्न है, तो उनका पूंजी संगठन का कार्य और आम लोगों के बीच सम्पर्क और लोगों के दुःख-दर्द में शामिल होना मुख्य है.

रामधारी सिंह 'दिनकर' ऐसे कवि थे जो सत्ता के करीब रहकर भी कभी जनता से दूर नहीं हुए

रामधारी सिंह दिनकर हिंदी के उन गिने-चुने कवियों में से हैं जिनकी पंक्तियां आम लोगों के बीच कहावतों और लोक-श्रुतियों की तरह प्रचलित हुईं

रामधारी सिंह दिनकर (23 सितंबर 1908- 24 अप्रैल 1974) अपने समय के ही नहीं बल्कि हिंदी के ऐसे कवि हैं, जो अपने लिखे के लिए कभी विवादित नहीं रहे, जिंदगी के लिए भले ही थोड़े-बहुत रहे हों. वे ऐसे कवि रहे जो एक साथ पढ़े-लिखे, अपढ़ और कम पढ़े-लिखों में भी बहुत प्रिय हुए. यहां तक कि अहिंदी भाषा-भाषियों के बीच भी वे उतने ही लोकप्रिय थे. पुरस्कारों की झड़ी भी उनपर खूब होती रही, उनकी झोली में गिरनेवाले पुरस्कारों में बड़े पुरस्कार भी बहुत रहे - साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्मविभूषण, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार इस बात की तस्दीक खुद करते हैं. बावजूद इसके वे धरती से जुड़े लोगों के मन को भी उसी तरह छूते रहे. हिंदी साहित्य के इतिहास में कि ऐसे लेखक बहुत कम हुए हैं जो सत्ता के भी करीब हों और जनता में भी उसी तरह लोकप्रिय हों. जो जनकवि भी हों और साथ ही राष्ट्रकवि भी. दिनकर का व्यक्तित्व इन विरोधों को अपने भीतर बहुत सहजता से साधता हुआ चला था. वहां अगर भूषण जैसा कोई वीर रस का कवि बैठा था, तो मैथिलीशरण गुप्त की तरह लोगों की दुर्दशा पर लिखने और रोनेवाला एक राष्ट्रकवि भी. हालंकि दिनकर छायावाद के तुरंत बाद के कवि थे पर आत्मा से वे हमेशा द्विवेदीयुगीन कवि रहे.

हरिवंश राय बच्चन का कहना था, दिनकर जी को एक नहीं बल्कि गद्य, पद्य, भाषा और हिंदी के सेवा के लिए अलग-अलग चार ज्ञानपीठ मिलने चाहिए थे दिनकर और हरिवंशराय बच्चन दोनों समकालीन थे. समकालीनों के बीच की जलन और प्रतिस्पर्धा किसी के लिए भी छिपी हुई बात नहीं पर दिनकर ऐसे कवि थे जो अपने समकालीनों के बीच भी उतने ही लोकप्रिय थे. दिनकर को जब उर्वशी के लिए ज्ञानपीठ मिला तो किसी आग-लगाऊ पाठक ने बच्चन जी को पत्र लिखकर पूछा कि - क्या यह एक सही निर्णय था. बच्चन जी दिनकर को मिले इस पुरस्कार के सन्दर्भ में क्या सोचते हैं. इसपर बच्चन जी का जवाब था, दिनकर जी को एक नहीं बल्कि गद्य, पद्य, भाषा और हिंदी के सेवा के लिए अलग-अलग चार ज्ञानपीठ मिलने चाहिए थे. उनके समकालीन लेखकों में से एक और समकालीन रामवृक्ष बेनीपुरी जी की मान्यता थी कि - दिनकर ने देश के क्रांतिकारी आन्दोलनों को अपना स्वर बखूबी दिया. नामवर सिंह के अनुसार झ दिनकर अपने युग के सचमुच के सूर्य थे. यथार्थ और मध्यमवर्गीय समाज को अपनी रचनाओं के केंद्र में लेकर चलनेवाले लेखक राजेंद्र यादव कहते थे झ दिनकर

जी की रचनाओं से मैं किशोरावस्था से ही बहुत प्रभावित रहा. राजेंद्र यादव दिनकर से किस हद तक प्रभावित थे यह इस वाकये से समझा जा सकता है. दिनकर की बड़ी प्रसिद्ध पंक्तियां हैं - सेनानी करो प्रयाण अभय सारा इतिहास तुम्हारा है / अब नखत निशा के सोते हैं सारा आकाश तुम्हारा है. राजेंद्र जी ने जब अपने उपन्यास प्रेत बोलते हैं फिर से लिखना तय किया तो उसका शीर्षक दिनकर की इन्हीं पंक्तियों से लिया था. शीर्षक था - सारा आकाश

दिनकर के शब्दों की ही यह शक्ति थी कि लोगों के बीच वे कहावतों और लोक-श्रुतियों की तरह प्रचलित हुए. उन्हें अपनी बातों में उद्धृत करने वाले किसान और मजदूर तक होते हैं. इसका एक कारण जहां उनका किसानों के घर से आना था वहीं दूसरा सीधी सरल भाषा को भी बहुत प्रभावी ढंग से प्रयोग किया जाना भी था. तीसरी इसे लोकप्रिय बनानेवाली उनकी संबोधनात्मक शैली रही. 1933 में जब उन्होंने पहली बार किसी कवि सम्मेलन (बिहार हिंदी कवि सम्मलेन) में मच्छरों के काटने से जागने के कारण एक रात पूर्व लिखी हुई कविता झ मेरे नगपति, मेरे विशाल पढ़ी तो दर्शक जैसे उन्हें बार-बार सुनने के लिए पागल हो गए. उन्होंने भी आमलोगों की फरमाइश पर इस कविता को चार बार सुनाया.

स्वतन्त्रतापूर्व के इस विद्रोही कवि और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के इस राष्ट्रकवि ने देश में नवजीवन के संचार के लिए शुरू में परशुराम और कर्ण जैसे उपेक्षित पात्रों को चुना, पुरुषार्थ और वीरता जिनका निज स्वभाव थी स्वतन्त्रतापूर्व के इस विद्रोही कवि और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के इस राष्ट्रकवि ने देश में नवजीवन के संचार के लिए शुरू में परशुराम और कर्ण जैसे उपेक्षित पात्रों को चुना, वीरता और पुरुषार्थ जिनका निज स्वभाव थी. इनका कुरुक्षेत्र भी महाभारत की कहानी को केंद्र में लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध के परिप्रेक्ष्य में लिखा गया. कुरुक्षेत्र कहता है कि - युद्ध कोई नहीं चाहता, लेकिन जब युद्ध के सिवाय और कोई चारा नहीं हो तो लड़ना ही आखिरी विकल्प है. अंग्रेजी सरकार की नौकरी के बावजूद उनका रवैया सदा उस शासन के विरुद्ध रहा. सरकार को भी यह महसूस होने लगा था कि वे शासन विरोधी हैं. इसका उदाहरण चार साल के वक़्त के बीच हुए उनके 22 तबादले हैं और बार-बार उनकी पेशी भी. हुंकार के लिए जब उन्हें कहा गया कि उन्होंने इसे लिखने के लिए इजाजत क्यों नहीं ली, तो उनका साफ जवाब यह था झ मेरा भविष्य इस नौकरी में नहीं साहित्य में है और इजाजत लेकर लिखने से बेहतर मैं यह समझूंगा कि मैं लिखना छोड़ दूं.

दरअसल दिनकर का मुख्य सरोकार जनता के लिए था, उनके दुःख दर्द लिखने, उनकी पीड़ा कहने से था. उनके दुख और बदहाली उन्हें हर हाल में उद्वेलित करते रहे, आजादी के बाद अपने शासन काल में भी. वे जब राज्यसभा सदस्य बने तो संसद में जाने से पहले नेहरू जी ने उन्हें किसी कविता का पाठ करने को कहा था. निर्भीक दिनकर उस वक़्त भी अपनी बात कहने से नहीं चूके. भारत का रेशमी नगर दिल्ली और राजनीतिज्ञों को केंद्र में रखकर लिखी गई वही कविता थी, जिसमें इस शासन काल में भी किसानों मजदूरों और आम लोगों के दुख की बात कही गई थी. दिनकर वह पहले लेखक थे जो अपने लेखन के सबसे बड़े आलोचक थे. वे समय-समय पर अपने लिखे की विवेचना और पड़ताल करते रहते थे. यही कारण है कि उनकी शैली में समय-समय पर बदलाव आते रहें. एक लेखक अगर परिवर्तनजीवी न हो तो वह मरा हुआ लेखक होता है. दिनकर को देखकर इस बात की तस्दीक और ज्यादा होती है. शुरू के ओजस्वी कवि, उर्वशी के रचयिता बिलकुल नहीं लगते और उर्वशी का रचनाकार हारे को हरिनाम का कवि नहीं लगता.

दिनकर के अनुसार उन्होंने उर्वशी तंद्रा में ही लिखी थी. और यह कब और कैसे लिखी गई, जैसे खुद उनकी समझ के भी बाहर की बात थी

दिनकर का संस्कृति के चार अध्याय जहां देश से संबंधित सारगर्भित लेखों का जखीरा है, वहीं उन्होंने बच्चों के लिए भी कुछ अद्भुत मनोहारी कविताएं लिखीं. चांद का कुर्ता, सूरज की शादी, चूहे की दिल्ली यात्रा कुछ ऐसी ही बहुत मनोरंजक और प्रेरक बाल-कविताएं हैं. उनके समकालीनों में से शायद ही कोई हो जिन्होंने बाल रचनाएं भी इस लगाव से लिखीं -अगर सूर्य ने ब्याह किया, दस पांच पुत्र जन्मेगा / सोचो तब उन पुत्रों का ताप कौन सहेगा / अच्छा है सूरज कुंवारा है, वंशहीन अकेला है / इस

प्रचंड का ब्याह जगत के खातिर एक झमेला है. इन पंक्तियों से यह साबित तो होता है कि इस लेखक के दायरे से बाहर कोई नहीं था, उन्हें चिंता और लगाव था तो किसी एक से नहीं वरन सभी से.

उर्वशी की शैली तो दिनकर के लेखन से इतनी भिन्न थी कि खुद वे इसके लिखे जाने पर अचरज करते थे. इसके लिखे जाने के वक़्त तक वे काफी अस्वस्थ रहने लगे थे. डॉक्टरों ने उन्हें लिखने के लिए एकदम मना कर दिया था. मूर्छा आना इसका मुख्य कारण था. उनकी चिरौरी पर डॉक्टरों ने यह इजाजत दी कि जब मूर्छा छाने लगे वे थोड़ी शहद चाट लें इससे मूर्छा का असर कम हो जाएगा. पर यह बार-बार करके भी लिखना उनके स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक था. दिनकर जी के अनुसार उन्होंने यह पूरी किताब एक तंद्रा में ही लिखी थी. और यह कब और कैसे लिखी, जैसे खुद उनकी समझ के भी बाहर की बात थी. इस आश्चर्य को दिनकर जी की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है - मैं घोर चिन्तना में धंसकर, पहुंचा भाषा के उस तट पर / था जहां काव्य यह धरा हुआ / सब लिखा लिखाया पड़ा हुआ / बस झेल गहन गोते का सुख / ले आया इसे जगत सम्मुख.

दिनकर जिन्दगी में रूमानी और साफ दिल थे, जिसका उदहारण सिर्फ रसवंती, उर्वशी ही नहीं, वे सारी स्त्रियां भी हैं, जो क, ख, ग के नाम से उनकी डायरी में वर्णित हैं उर्वशी प्रेम, वासना और अध्यात्म का अद्भुत संगम है. यह पुरुरवा और उर्वशी की कहानी है जो महाभारत के शान्ति पर्व से उठाई गई थी. इसमें मानव होने को देवदूत और ईश्वर से बहुत ऊपर रखा गया. इस वक़्त तक दिनकर के जीवन में अध्यात्म का प्रवेश भी होने लगा था. वे महर्षि रमण और अरविंद आश्रम के चक्कर लगाने लगे थे. अध्यात्म का भी उनके जीवन में अकस्मात प्रवेश नहीं हुआ. जगत जीतते दिनकर दरअसल अपने निजी मोर्चे पर लगातार हार रहे थे. उनका पत्नी के साथ वैचारिक असामंजस्य था. 13 वर्ष की अल्पायु में हुई शादी इसका मुख्य कारण था (हालांकि इस रिश्ते को उन्होंने आजीवन फिर भी निभाया). फिर बेटियों, पोतियों के विवाह की चिंता, घर का अधिकतर भार सहकर उन्हें लेखन और लेखकीय यात्राओं के लिए तत्पर करनेवाले बड़े बेटे की असामयिक मृत्यु जैसे दुख लगातार उन्हें अध्यात्म की ओर धकेलते रहे.

दुख और तकलीफों के पहाड़ों के बीच उनकी हुंकार और ओज अब कहीं खोने लगी थी. अपने समय का यह सूर्य अब अस्ताचल में डूबने को ही था. हारे को हरिनाम की वह पराजित, दुविधाओं और द्वन्द से भरी आवाज कहीं से भी नहीं लगती कि इसी आवाज ने कभी हुंकार-भरकर जनजन के आक्रोश को स्वर दिया था और उसमें नई शक्ति का संचार किया था.

हालांकि जीवन अनुभव और यथार्थ यहां भी है और ये कवितायें जीवन के बहुत करीब की कविताएं हैं. ओजस्वी दिनकर जिन्दगी में रूमानी और साफ दिल थे, जिसका उदहारण सिर्फ रसवंती, उर्वशी ही नहीं, वे सारी स्त्रियां भी हैं, जो क, ख, ग के नाम से उनकी डायरी में वर्णित हैं. यह उनकी साफदिली ही थी कि डायरी के प्रकाशन के समय उन्होंने इसे हटाया नहीं, बल्कि वे तो चाहते थे स्त्रियों का असल नाम यहां दिया जाए पर उनके कुछ लेखक मित्रों के सुझाव से इन नामों को क, ख, ग की शक्ल अख्तियार करनी. वे मानते थे, जब हम और आप एक ही नाव के सवार हैं तो शर्म कैसी और झिझक कैसी?

गड़बड़ी करने वालो की अब खैर नही, पूर्ण हो चुके सात निश्चय योजना की होगी जांच

जाहिद अनवर (राजु) / दरभंगा

दरभंगा--जिलाधिकारी डॉ.चंद्रशेखर सिंह ने सात निश्चय के अंतर्गत चल रही योजनाओं की साप्ताहिक समीक्षात्मक बैठक में सभी प्रखंड विकास पदाधिकारियों को उक्त निर्देश देते हुए कहा कि सात निश्चय के अंतर्गत चल रही योजनाओं को अगस्त महीने के अंत तक हर हाल में पूरा करें। सितंबर के प्रथम सप्ताह में सभी पूर्ण योजनाओं का जिला स्तरीय अधिकारियों की टीम के द्वारा निरीक्षण किया जाएगा। उन्होंने सभी बीडीओ से कहा कि निर्धारित फॉर्मेट में ही प्रत्येक महीने जिला में रिपोर्ट भेजे।

हर घर नल का जल एवं पक्की नाली गली से संबंधित योजनाओं के निर्धारित मानक तथा गुणवत्ता के अनुरूप क्रियान्वयन के लिए जनप्रतिनिधि एवं इससे जुड़े पदाधिकारी एवं कर्मियों का सघन प्रशिक्षण आयोजित होना है। जिलाधिकारी ने सभी प्रखंड विकास पदाधिकारियों से कहा कि इस प्रशिक्षण को पूरी गंभीरता से अपने-अपने प्रखंडों में क्रियान्वित कराएं। इन योजनाओं के क्रियान्वयन से संबंधित अभिलेखों के उचित रख-रखाव पर भी विशेष जोर देने को कहा गया। ऑन लाईन म्युटेशन के लिए जमाबंदी माइग्रेशन जहां-जहां हुए हैं वहां के अंचलाधिकारियों को इससे संबंधित आने वाली त्रुटियों के निराकरण के लिए भी सजग रहने को कहा गया।

प्रधानमंत्री आवास योजना की समीक्षा में पाया गया कि 59441 लाभुकों का अबतक इसके लिए रजिस्ट्रेशन

हुआ है तथा 53148 आवास स्वीकृत हुए हैं। जिलाधिकारी ने बचे हुए आवासों को भी संबंधित लाभुकों के लिए स्वीकृत करने तथा संबंधित शतप्रतिशत लाभुकों के खाते में प्रथम किस्त की राशि भेजना सुनिश्चित करने के निर्देश दिया। इस कार्य में पिछड़ रहे प्रखंड किरतपुर एवं कुशेश्वरस्थान से विशेष मेहनत करने को कहा गया। पंचायत के जिन वार्डों के आधे लाभुकों ने अपने शौचालय का निर्माण पूर्ण कर लिया है उन्हें तुरंत भुगतान करने के निर्देश जिलाधिकारी ने दिया। उन्होंने कहा कि मानक के अनुरूप शौचालय बना लेने वाले लाभुकों के भुगतान में कोई विलंब नहीं होना चाहिए। लोगों के व्यवहार परिवर्तन के लिए सभी स्तरों पर जागरूकता कार्यक्रम चलाते रहने को कहा गया। बैठक में उप विकास आयुक्त कारी प्रसाद महतो, जिला पंचायत राज पदाधिकारी शत्रुघ्न कामत, सभी अनुमंडल पदाधिकारी, प्रखंडों के वरीय प्रभारी पदाधिकारी, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अन्य संबंधित पदाधिकारी व कर्मी उपस्थित थे।

जोड़ों के दर्द से निजात पाना हो तो अपनाएं ये नुस्खे: डॉ. लक्ष्मण पंडित

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

सर्दी का मौसम आने ही बाला है ऐसे मे शरीर केजोडो में दर्द होना आम बात है इसके लिए चर्चित बिहार ने डा० लक्ष्मण पंडित सर्जन व नस रोग स्पेशलिष्ट से आम पाठको के लिए ऐहितयात एव इसके उचित निदान हेतु जानकारी बटोरिहै जो इसप्रकार है।

डा० लक्ष्मण पंडित ने चर्चित बिहार को बताया कि धमनियों में सिकुडन आ जाने की बजह से शरीर में खून का प्रवाह बाधित होने लगता है ,फलतःदर्द की समस्या उत्पन्न होने लगती है.यह समस्या ५० बर्ष सेअधिक उम्र बाले ब्यक्तियो के शरीर में पाई जाती है बैसे किसी अन्य कारणो से किसी भी उम्र बाले युवा या अन्य को यह परे शानी आ सकती है.

जिम्मेदार कौन?

जोडो.में दर्द की समस्या के लिए असंयमित जीवनशैली,आहार मे कैलशियम की कमी और बिटामीन डी की कमी मूख्य रूप से जिम्मेदार होता है.

एहेतियात व उचित डाक्टरी सलाह

मांस पेशीयो मे दर्द की कोई निश्चित बजह नही होती है.लेकिन कोशिकाओ केखिचाव से दर्द होता है.ऐसे मे नियमित ब्यायाम,शारीरिक गतिवियों के बरकरार रखनी चीहिएआहार मे कैलशियम एवं पोषक सेभरा आहार का सेवन करना अतिआवश्यक है। गुनगुनेधूप का सेवन नियमत करने से शरीर मे बिटामिन डी की मात्रा अधिक प्राप्त होती है.क्योकि अनियमित जीवन शैली और कैल शियम की कमी इसके मूख्य बजह है.

महिलाओं मे हार्मोन में गडबडी,अनियमित महावारी, मेनोपॉज व तनाव प्रमुख बजह है.

डाक्टरी सलाह व नियमित व्यायाम दोनो जरूरी

नियमित डाक्टरी सलाह व उनके द्वारा बताए गए दवा का सेवन व नियमित व्यायाम ये सभी जरूरी नुस्खे है.डा० द्वारादिए गए उचित सलाह व जांच जैसै एक्स रे,एम आर.आई. व रक्त की जांच से जोडो के दर्दो के कारणो का पता चलता है. बैसे अत्यधिक दर्द होने पर तुरंत चिकित्सक की राय लें आम तौर पर दर्द को कम करने में सवसे कारगर दवा का उपयोग ही माना जाता है.लेकिन कुछ मामलों में डा. दवाओ के दुष्प्रभावो को देखते हुए इसकी बजाय दर्द बाले स्थानो पर गर्म पट्टी बाधने और दस्ताने वजुराव पहनने की सलाह देते हैं*लेकिन उपचार के किसी नुस्खे को अपनने से पहले एक बार संबंधित डॉक्टर से सलाह मशबरा जरूर लेलें.

डॉ. लक्ष्मण पंडित
सर्जन
सदर अस्पताल बांका

भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर आसीन हुई पूर्व सांसद पुतुल कुमारी

स्थानीय दोकानिया अतिथिशाला में उपाध्यक्ष का स्वागत करते महिला मोर्चा के अधिकारीगण

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका की पूर्व सांसद पुतुल कुमारी कोभाजपा केन्द्रीय टीम के नेतृत्व के निंदेश सेप्रदेश अध्यक्ष नित्या नन्द राय के द्वारा इन्हे उपाध्यक्ष पद पर आसीन किया गया .पिछले कई ऐसे क्षणो मे केन्द्रीय भाजपा की टीम ने इनके द्वारा की गई पहल पार्टी के प्रति सर्मपण काभाव,एव हर छोटे बडे कार्यक्रमों मे अपनी भागीदारी सू निश्चित करना ,क्षेत्रीय भ्रमण के कार्यक्रम को नियमित रखना आदि कई ऐसी गतिविधियां थी जिसके लिए केन्द्रीय भाजपा की टीम ने इन्हे इस पद के लिए उपयुक्त समझा,फलतः इन्हे यह पद प्राप्त हुआ.

बतौर सांसद रहते हुएभी इन्होने कई ऐसे श्रृजनात्मक कार्य किये जिस कारण आम जनता के सामने इनकी एक अलग पहचान बन गई. ३० जुलाई १८ को इन्हे उपाध्यक्ष पद प्राप्त कर ने के बाद बांका आगमन पर पाटी कार्यकर्ताओएवंसंगठन के अधिकारीयो जिलाध्यक्ष महांत्रीयों के द्वारा स्थानीय डोकानिया अतिशाला में एक कार्यक्रम आयोजित कर इनका भव्य स्वागत किया गया.अपने स्वागत भाषण मे नव नियुक्त उपाध्यक्ष पुतुल कुमारी ने अपने सभी संगठन के अधिकारीयो ,कार्यकर्ताओ एव आम जनो का धन्यवाद करते हुए कहा कि जिस तरह देश का बिकास प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्व मे निरंतर हो रहा है .उसी तरह उनके ही नेतृत्व मे आप सवो के सहयोग से अपनी जवावदेही समझ कर पाटी के लिए जनता के हित मे काम करूंगी जिस उदेश्य से आप सवो के सहयोग से पाटी ने जो हमे पद दिया है उसकी गरिमा बरकरार रखुंगी.

इस अवसर पर जिला अध्यक्ष बिकास सिंह पूर्व जिलाध्यक्ष अनिल सिंह महिला मोर्चा की अध्यक्ष नीलम सिंह ,संगठन केअन्य पदाधिकारीगण के साथ भारी संख्या मेपूरे जिले सेआए कार्यकर्ता एव बुद्धिजीवि उपस्थित थे.

मैं भाजपा के सभी अधिकारियों, सभी पूर्व व वर्तमान प्रखंड अध्यक्षों, पूर्व व वर्तमान जिला अध्यक्षों एवं महिला मोर्चा के अधिकारियों एवं संगठन से जुड़े सभी प्रदेश कार्यकर्ताओं एवं भाई वंधुओं का आभार प्रकट करती हूं. जिनके सहयोग एवं सच्ची निष्ठा के कारण हमें यह जवाबदेही प्राप्त हुई है. मैं अपने पद की गरिमा पार्टी के नेतृत्व एवं जनता के हित में करते हुए इसका निर्वहन करूंगी.

पुतुल कुमारी

प्रदेश उपाध्यक्ष सह पूर्व सांसद, बांका

क्षेत्रीय दौरे के क्रम में पुतुल कुमारी

कुपोषण जागरूकता अभियान के तहत निकाली गई रैली

हेमंत कुमार

प्रखंड अंतर्गत संचालित आंगनबाड़ी केंद्रों के पोषक क्षेत्र में कुपोषित बच्चों की पहचान करने एवं उनके इलाज एवं बचाव को लेकर शनिवार को बाल विकास परियोजना कार्यालय में कार्यरत कर्मियों एवं अधिकारियों के द्वारा जागरूकता रैली निकाली गई रैली में शामिल सेविकाओ अपने वजन से बचाव को लेकर कई जानकारियां पट्टी लिखे हुए बैनर एवं पोस्टर के साथ रैली में हिस्सा लिया इसके पूर्व बाल विकास परियोजना पदाधिकारी विभा कुमारी एवं इंडिया केयर के विभय कुमार ने कार्यक्रम में मौजूद सेविकाओं को पोषण से बचाव की विस्तृत जानकारी दी वही मौके पर मौजूद सभी कर्मियों को कुपोषण से लड़ने के लिए शपथ भी दिलाई गई मौके पर महिला पर्यवेक्षिका कुसुम भारती सुप्रीया कुमारी सावित्री कुमारी आंगनवाड़ी सेविका सरिता देवी बेबी देवी कंचन देवी मणिमाला कुमारी रंजू कुमारी सुनीता कुमारी पुष्पा कुमारी रेखा कुमारी रंजना कुमारी बबीता कुमारी सहित कई अन्य लोग मौजूद थे।

कुपोषण अभियान का शपथ दिलाती सीडीपीओ विभा कुमारी

रैली में शामिल सीडीपीओ विभा कुमारी व सेविकागण

सरकारी विद्यालय में शिक्षा के साथ मूलभूत सुविधा का अभाव

जमीन पर बैठकर पढ़ाई करती छात्र

आमोद कुमार दुबे

चांदन प्रखण्डे के उच्च विद्यालय ओर एकाध मध्य विद्यालय को छोड़ कर सभी प्राथमिक एंव प्रोन्नत मध्य विद्यालय के सभी बच्चे जमीन पर बैठ कर ही अपनी पढ़ाई करते है। इसके लिए बच्चो ओर बच्चीयों को अपने ही घर से किताब के साथ जमीन पर बैठने के लिए चट या बोरा लेकर स्कूल जाना पड़ता है।इसके अलावे शिक्षको ओर छात्रों के बीच का अनुपात भी नियमानुकूल नही होने से पढ़ाई पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है ।इस प्रखण्ड में देखा यह जा रहा है कि यहाँ के अधिकतर शिक्षक और शिक्षिका अपना आवास देवघर में रखते है। जिस कारण वे रोजाना देवघर से अपने स्कूल आते है।इसमें से अधिकतर पक्की सड़क के किनारे वाले स्कुलो में कार्यरत है।इस सुविधा को पाने के लिए बड़ी संख्या में पैरवी होती है।जिसके लिए छात्रो का अनुपात नही देखकर शिक्षक की सुविधा का पदाधिकारी अधिक ध्यान रखते है। यहां के कई दर्जन विद्यालय ऐसे है।जहाँ 12 से 30 तक छात्र होने के बाबजूद 4 से 5 शिक्षक कार्यरत है। जबकि कई विद्यालय ऐसे भी है जहाँ छात्रो की संख्या 100 से 300 के बीच है जहां शिक्षको की 1 या 2 है।जिससे कुछ बच्चो को ही शिक्षक बन कर पढाई करानी पड़ती है। इतना ही नही प्रखण्ड के लगभग 80 प्रतिशत सरकारी विद्यालय में कागज पर शौचालय कार्यरूप में दिखाया गया है।पर सच्चाई कुछ और ही है।एकाध दर्जन विद्यालय को छोड़ कर किसी विद्यालय का शौचालय उपयोग के लायक नही है। इतना ही नहीं कई विद्यालय ऐसे हैं जहां ठळढउ से बने शौचालये लगाए गए हैं लेकिन उसमें भी व्यवस्था और पानी के अभाव के चलते उसका उपयोग नहीं हो रहा है कई ऐसे विद्यालय भी हैं जहां कई वर्ष पूर्व शौचालय का निर्माण किया गयो लेकिन आज तक उपयोग नहीं होने के बावजूदे उसकी स्थिति एक चर चर भवन की तरह है जो कभी भी धराशाई हो सकता है इसलिए भी छात्र और छात्राएं वहां जाने से घबराते हैं जिससे छात्र छात्राओं को काफी परेशानी होती है।जबकि अधिकतर स्कुलो में पेयजल की समुचित व्यवस्था है।पर कुछ विद्यालय जिसमे गौरीपुर सिलजोरी ओर कोरिया और बिरनिया के कुछ विद्यालय में अभी भी पानी का अभाव है। इस प्रकार इस प्रखण्ड के सरकारी विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं के साथ शिक्षा की स्थिति भी भगवान भरोसे चलने वाला है। सरकार के निदेर्शानुसार सभी विद्यालय में मध्यान्ह भोजन के लिए गैस का उपयोग अनिवार्य कर दिया गया है लेकिन इसके बावजूद कुछ एक विद्यालय को छोड़ सभी जगह मध्यान्ह भोजन में कोयला और लकड़ी के चूल्हे का ही उपयोग किया जाता है जिससे वातावरण दूषित होने के साथ-साथ स्कूल स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे के स्वास्थ्य पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता है और कुछ स्कूल तो ऐसे हैं जिसके गैस सिलेंडर शिक्षक अपने घरों में भी उपयोग कर रहे हैं इस प्रकार चांदन प्रखंड में शिक्षा के नाम पर गार्ड जी खानापूर्ति अधिक और बच्चों को शिक्षा देने में काफी पीछे चल रहा है इस कारण कई विद्यालय ऐसे हैं जहां बच्चे सिर्फ मध्यान्ह भोजन के लिए ही स्कूल आते हैं और भोजन करने के बाद वापस घर चले जाते हैं जिससे उनकी पढ़ाई कभी भी पूरी नहीं हो सकती इस और स्कूल के शिक्षक भी ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं क्योंकि कम शिक्षक होने के कारण मध्यान्ह भोजन के अलावे जिला की मीटिंग और अन्य कागजी खानापूर्ति में भी समय समाप्त हो जाता है।

बदहाल शैक्षणिक व्यवस्था

चांदन प्रखंड में सरकारी योजनाओं में करोड़ों का घोटाला उजागर

आमोद कुमार दूवे (चांदन)

चांदन प्रखंड कार्यालय में एक बार फिर योजना की राशि लगभग एक करोड़ का बहुत बड़ा घोटाला सामने आया है। इसमें दक्षिणी वारने के पंचायत समिति सदस्य द्वारा जिला अधिकारी, सहित सभी वरीय पदाधिकारियों और मुख्यमंत्री को अलग-अलग आवेदन देकर इस घोटाले के जाँच की मांग किया है ।दक्षिणी वारने पंचायत समिति के सदस्य अशोक प्रसाद यादव का आरोप है कि पंचम वित्त आयोग की बर्ष 16-17 ओर 18-19 की पूरी राशि से सम्बंधित योजना के लिए कभी भी किसी भी पंचायत समिति की बैठक में न तो इस योजना की किसी राशि की जानकारी दी गयी है। और न ही कभी योजना से सम्बंधित कोई योजना ही पास करायी गयी है। सिर्फ 17-18 की योजना के लिए पंचायत समिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि प्रत्येक पंचायत में एक-एक योजना पर काम किया जाएगा। जिसके लिए राशि भी प्रत्येक पंचायत के लिए दर्शा दिया गया था। लेकिन किसी भी पंचायत में वह योजना आज तक पूरी नहीं हुई ।इस प्रकार तीनों वित्तीय वर्ष की योजनाओं की राशि हड़पने की नीति से यह काम किया गया है ।यह सारी योजना अगर किसी पिछले दरवाजे से पंचायत समिति की बैठक में पास करा ली गई हो तो वह पूरी तरह गलत है। क्योंकि बैठक में ली गई सभी प्रस्ताव को बैठक के बादे लिखा जाता है। इसलिए यह भी शंका जताई जा रही है कि उसी दौरान किसी अन्य पंचायत समिति की बैठक में इस लूट की योजना बनी हो। इसमें पूर्व के प्रखंड विकास पदाधिकारी श्याम कुमार और वर्तमान प्रमुख रवीश कुमार पूरी तरह से सम्मिलित हैं ।जबकि प्रमुख रवीश कुमार का कहना है कि यह आरोप पूरी तरह निराधार है, और पंचायत समिति की बैठक में लिए गए हर निर्णय का पालन करते हुए योजना पर काम किया जा रहा है। और जो योजना पूरा नहीं हुआ है उसके लिए भी जल्दी काम पूरा करने का दबाव बनाया जा रहा है ।वही प्रखंड विकास पदाधिकारी दुगार्शंकर ने बताया कि उनके कार्यकाल की यह शिकायत नहीं है, इसलिए आवेदन आने के बाद उस पर समुचित जांच करते हुए जो भी मामला सामने आएगा उस पर समुचित कार्यवाही की जाएगी।

इंडिया पोस्ट पेमेन्ट बैंक की शरूआत से गांव गांव मे होगी बैंकिंग सुबिधा

मुख्य डाकघर बांका

कार्यक्रम का शुभारंभ करते माननीय मंत्री, जिलाधिकारी, पूर्व सांसद व डाक विभाग के अधिकारीगण

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

समय के साथ बदलाव के साथ भारतीय डाक बिभाग जो सदियों से उपेक्षा कादंश झेल रहा था अव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर एक नई सुबह कीशुरूआत हुई हैं इसके तहह समस्तभारत मे इंडिया पोस्ट पेमेन्ट बैंक का शुभारंभ किया गया.अव बैंको जैसी सुविधा गांव गांव तक बहाल हो गई है बैंक आपके द्वार के तहत डाक कर्मी फोन कॉल पर घर आकर लोगो के जमा निकासी की सुविधा प्रदान करेगे .आम लोगो को बैंको को जोडने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा डाकघरो में अव बैंकिग सुबिधा बहान कर दी है. जिससे आम जन को इसका लाभ प्राप्त होगा.इसके तहत १ सितम्बर को दिल्ली मे प्रधानमंत्री के द्वारा इस सुविधा का विधिवत शुभारंभ किया गया इसके साथ ही सम्पूर्णभारत के डाकघरो मे यह सेवा बहाल हो गई है. इसीक्रम में स्थानीय नगर भवन में इस सेवा काशुभारंभ दीप प्रज्वलित कर रामनारायण मंडल मंत्री राजस्व व भूमि सुधार बिहार सरकार व जिला धिकारी कुंदन कुमार उपाध्यक्ष पुतुल कुमारी व डाक विभाग के अधिकायों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया. मंत्री रामनारायण मंडल ने अपने संवोधन मे कहा कि आधुनिकता के दौर मे हम लोग पत्र लिखनाभूल भूल गए हैं मोवाईल एव सोशल मीडिया को अपनाने लगे हैं ऐसी स्थिति मे डाक बिभाग को गतिशील करने हेतु प्रधानमंत्री का यह कदम सचमुच सूदूर गां गां व मे बैंकिग सेवा बहाल करने मे सहायक होगा.इसके उपरान्त भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष सह पूर्व सांसद पुतुल कुमारी ने अपने संबोधन मे कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व मे देश प्रगति के नित्य नए आयामों कोछू रही है इसी क्रम मे डीजीटल डंडिया से देश मे निरंतर बदलाव दिख रहा है इसका जीता जागता प्रमाण इंडिया पोस्ट पेमेन्ट बैंक की शुरूआत है.जिससे गांव गांव के लोग लांभाविंत होगें. जिलाधिकारी कुंदन कुमार ने अपने संबोधन मे कहा कि इंडिया पोस्ट पेमेन्ट बैंक की शुरूआत एक अनोखी पहलहै जिससे सूदूर गांव गांव मे इस सुविधा से लोगो को लाभ मिलेगा .परन्तु इसमें साकारात्मक सोच कीआवश्यकता है.मंच से किन्ही बक्ता के द्वारा बांका को पिछडा जिला शब्द का संबोधन का जवाव देते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि बांका को पिछड़ा नही बल्कि महत्वाकाक्षी जिला कहें.देश मे ११५ जिला है ,जो महत्वाकांक्षी है,इसमें बांकाभीशामिल है.उन्होने आगे कहा कि बांका जिला बिकास की नित्य नई उंचाई को छू रही है.जरूरत हैकि आमलेगो को साकारात्मक सोच रखते हुए इसे आगे बढने मे सहयोग करें. डाक बिभाग के सहायक डाक अधीक्षक नीरज कु चौधरी ने चर्चित बिहार को बताया कि इस सुविधा के तहत बचत खाता खोला जाएगा ,राशी की जमा निकासी लोग धर बैंठे कर सकेगें,म्युचल फंड की सुविधा भी ग्राहको को मिलेगी,बीमा सुविधा,ऑन लाइन ट्रांसफर सुविधा,एनईएफटी सुविधा,आरटीजीएस की भी सुबिधा आम लोगो को प्राप्त होगी. इसअवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष रौनक सिंह भाजपा जिला ध्यक्ष बिकास सिंह पूर्व जिला ध्यक्ष अनिल सिंह,अजय दास के साथ डाक बिभाग के अधिकारी व कर्मचारी व कई गण्यमाण्य उपस्थित थे.

कार्यक्रम में उपस्थित जनप्रतिनिधि व डाक विभाग के कार्मचारीगण

किन वजहों से होती है दांतो में बीमारी, क्या हैं इसके उपचार

बांका स्माईल क्लिनिक की दंत चिकित्सक डा० पुष्पम प्रियदर्शनी बताती है कि हमारे शरीर की सुन्दरता में दांतो की अहम भूमिका है दांतो की स्वच्छता बार रिक सुन्दरता के साथ साथस्वस्थ्य शरीर के लिएभीआवश्यक है.

डॉक्टर पुष्पम प्रियदर्शिनी

दांतो में होने बाली बीमारी की वजह

खाना खाने के बाद दांतो को अच्छी तरह से साफ न करने के कारण दांतो में फसे भोजन के कणो पर किटाणु अपना घर वना लेते हैंइस का□ण दातों मे कई बीमारियां पनपने लगती है.जिन्जिवाईटिस*का इलाज ठीक प्रकार से नही किया जाता है तो यह बीमारी##पेरियोडॉन्टाईटिस*##जो दांतो कीएक घातक बीमारी है जैसी बीमारी के रूप मेंउभर कर सामने आ सकती है.

क्या है?

पेरियोडॉन्टाईटिस नामक बीमारी

इस बीमारी में हमारे दांतो को सहारा देने बाले टिशु जो दांतो सेजुडे होते है वह नष्ट हो जाते हैंजिससे दात अपनी जगह नही रह पाते हैं.इस कारण दांतो मे संक्रमण पैदा होने लगता है.और दातों को आवरण मे रखने बाले नर्व हट जाते हैं इस कारण हमारे दांतो मे ढंढा गरम , कनकनाहट, झझनाहट महसूस होने लगता है,जिसे सेंसेविटि कहा जाता है.दांतो मे खाना फसा रह जाने के कारण दर्द महसूस होने लगता है साथ ही मुँह में दुर्गंध आने लगता है.साथ ही पायरिया से दातों का रंग पीला पडने लगता है

निदान एवं परहेज

खाना खाने के बाद दिन मे दो बार दांतो की सफाई हेतु ब्रश करे.साथ ही मेडीकेटेड टुठ पेस्ट का ही इस्तेमाल करे लाल और निकोटीन युक्त दंत मंजन या पेस्ट से बचना चाहिए इस प्रकार के टुश पेस्ट या मंजन मे कायेटिक एसीड की मात्रा ज्यादा रहती है जिससे दांतो का परत कमजोर पडने लगता है.दांतो की सफाई के समय फ्लास भी करे जिससे प्लेक की संभीवना कम होती है.प्लेक जैसी बीमारी पर अविल्व ध्यान दे जिससे दांतो के सडन से बचा जा सके .टुथ ब्रश अपने दातो की बनावट के अनुसार इसका चयन करे मूख्यतह मुलायम अव सरल ब्रश का उपयोग सुरक्षित माना जाता है.

रोगी का जांच करती डॉक्टर

समय साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मान समारोह सह कवि सम्मेलन का हुआ भव्य आयेजन

हेमंत कुमार

समय साहित्य सम्मेलन पुनसिया और कविता कोश के द्वारा चंगेरी, मिजार्पुर इण्टर स्तरीय विद्यालय के प्रांगण में अंगिका महोत्सव का आयोजन दौ सत्रों में हुआ।उद्घाटन लोकार्पण सम्मान सत्र की अध्यक्षता रामचन्द्र घोष ने की और संचालन अश्विनी जी ने किया।मुख्य अतिथि डा0 ताराचन्द्र खबारे ,विशिष्ट अतिथि डा0 शंकर मोहन झा,डा0 श्री मोहन सिंह, आमोद कुमार मिश्र,अचल भारती आदि ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

स्वागत भाषण के बाद महामंत्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल ने कहा कि लोकार्पण,पुस्तक चर्चा और सम्मान समारोह के बाद दूसरे सत्र में विराट कविसम्मेलन भी होगा। मंचस्थ अतिथियों ने अनिरुद्ध प्रसाद विमल रचित "अपने हिस्से का महाभारत" और "स्मृति सुधा" ,नरेश जन प्रिय रचित"किरण चिड़ैया"और "अनिल कुमार झा रचित "बिसहा तोरा बोलै ले' लागथौं " का लोकार्पण किया। लोकार्पित पुस्तकों पर चर्चा करने वालों में आमोद कुमार मिश्र,डा0शंकर मोहन झा,ताराचंद खबारे,कैलाश झा किंकर,बी0एन0सत्यम,सुधीर कुमार प्रोग्रामर,सर्वेश्वर दत्त द्वारे,प्रदीप प्रभात,अचल भारती,कथाकार रंजन आदि प्रमुख थे। कोशिकी के संपादक खगड़िया से आए कैलाश झा किंकर ने कहा एहनो' विकराल समय,जै मे लोगें अप्पन डफली,अप्पन राग अलापतें रहे छै,अपने' के' बड़का विद्वान, बड़का साहित्यकार घोषित करी रहलो' छै,साहित्य मे भी सबके' हित के' बात अनदेखी करै छै,बड़का बड़का सरकारी सम्मान पुरस्कार हड़पी रहलो' छै,स्वार्थ केरो' घेरा में फँसलो' छै मतुर समय साहित्य सम्मेलन के'पुरोधा आदरणीय अनिरुद्ध प्रसाद विमल सृमृति तर्पण करै के' वास्ते "स्मृति सुधा " के' प्रणयण करी रहलो' छै,यें खुशी के' बात छै।कार्यक्रम में माधवी चौधरी को प्रतिभा चतुर्वेदी स्मृति सम्मान, राहुल शिवाय को भवप्रीतानंद स्मृति सम्मान, प्रेम प्रभाकार को धर्मवीर भारती स्मृति सम्मान, धीरेन्द्र छतहारवाला को श्यामसुंदर घोष स्मृति सम्मान, नरेश जनप्रिय को बुद्धिनाथ झा कैरव स्मृति सम्मान, गौतम सुमन को जय प्रकाश स्मृति सम्मान, विद्यापति झा को राम शर्मा अनल स्मृति सम्मान, आमोद कुमार मिश्र को अनुपलाल मंडल स्मृति सम्मान, श्री मोहन सिंह को गुरेश मोहन घोष 'सरल स्मृति सम्मान, अनिल कुमार झा को आनंद शंकर माधवन स्मृति सम्मान, दयानंद जायसवाल को राजेन्द्र यादव स्मृति सम्मान, प्रदीप प्रभात को भुवनेश्वर सिंह भुवन स्मृति सम्मान, दिनेश तपन को डोमन साहु समीर स्मृति सम्मान, अशोक शुभदर्शी को परमानंद पाण्डेय स्मृति सम्मान, हीरा प्रसाद हरेन्द्र को नरेश पाण्डेय चकोर स्मृति सम्मान, कैलाश झा किंकर को महाकवि सुमन सूरो स्मृति सम्मान, सुधीर कुमार प्रोग्रामर को महेश्वरी सिंह महेश स्मृति सम्मान, योगेंद्र केशरी को सत्यनारायण मेहता स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

समय साहित्य सम्मेलन के इस कार्यक्रम में करीब 5 दर्जन से अधिक कवियों ने काव्य पाठ किया।

पुस्तक का विमोचन करते कविगण

सोलर लाईट घोटाले का हुआ पदार्फाश प्रधान सचिव ने दिया कार्यवाही के आदेश

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले का शंभुगंज प्रखंड हमेशे सुर्रखियों मे रहा है चाहे धोटले का मामला हो या प्रशासनिक गतिविधियो का बिरोध करमें हो १९ पंयायतो से युक्त यह प्रखंड जिले के मान चित्र मे नक्सल प्रभावित क्षेत्र भी माना जाता है.यहां धार्मिक न्याय पार्षद के जमीन पर भी दवंगो द्वारा अबैध कब्जा का मामला भी कुछ दिनो पहले काफी चर्चित रहा था जहा चटमाडीह गांव में राम जानकी एवं राधाकृष्ण मंदिर ट्रस्ट की करीव २० एकड जमीन पर यहां के स्थानीय दंबगो द्वारा कब्जा कर लिये जाने का ममला भी प्रकाश मे आया था. जिसका खुलासा आर.टी.आई.कार्यकर्ता सतीश आनंद ने सूचना के अधिकार के तहत यह मामला उजागर किया था.

अवएक बार पुनः शंभुगंज प्रखंड सुर्र खियों मे है.यह मामला बर्ष २००७ से २०१४ तक प्रखंड के १९ पंचायत में मुखिया एवं पंसस की अनुशंसा से तेहरवीं बित्त आयोग एवं बीआरजीएफ योजना से ५०० सोलर लाईट लगाया गया था.

प्राप्त जानकारी के अनुसार जिसमें बृहत पैमाने पर घटिया सोलर लगा कर एक करोड से अधिक की सरकारी राशी का बंदर बाट हुआ था.जिसमें सूचना के अधिकार के तहत आर .टी.आई कार्यकर्ता सतीश आनंद ने मामले का खुलासा किया था.बताया जाता है कि प्रत्येक सोलर लाईट जो बियाडा कंपनी का लगाना था जिसके लिए निर्धारित राशी २८,२४० थी परन्तु मिलीभगत से ४८ हजार तक की राशी की अबैध. निकासी की गई.तत्क लिना जिलाधिकारी के आदेश से प्रारंभिक दौर मेंआठ पंचायतो में जांच पड़ताल की गई.जिसमे भारी अनियमितता पाई गई. इसी आलोक में पंचायती राज बिभाग के प्रधान सचिव ने जिलाधिकारी को एक पत्र निंगत कर सोलर लाईट घोटालों में शामिल मुखिया, पंसस पर कार्यबाही करने का निंदेश जारी किया है.

क्रमवार कन किन पंचायतों मे कितनी लाईट लगी थी

बिरनौधा- 29,पडरिया- 39,कुर्मा-29, बैदपुर-35, रामचुआ-39, कामतपुर-22,कसवा-37,_ पकरिया-20,परमानंदपुर -18, गुलनी कुशाहा-44,झखरा-41, करसोप-37, चुटिया वेलारी-20, पौकरी-14,मिंजापुर-18, भरतशिला-34,सहित अन्य पंचायतो में राशी की हेरा फेरी की गई है। शंभुगंज प्रखंड में सोलर लाईट मामले की जानकारी प्राप्त हुई है. इस संबंध मे जिला प्रशासन के निंदेश की प्रतिक्षा है. इस मामले से संबंधित जो भी निंदेश प्राप्त होगा . उसकेअनुरूप दोषीयो पर त्वरित कार्यवाही की जाएगी.

शंभुगंज प्रखंड के बिभिन्न पंचायतो मे कुछ साल पहले जो सोलर लाईट का मामला उजागर हुआ था उसपर स्थानीय प्रशासन की नजर होनी चाहिए सरकारी योजना का लाभ आम जनता को मिल सके यह हमेशे पदाधिकारियो के नजर मे होनी चाहिए .अगर इसमे गडबडी हो तो दोषीयों पर उचित कार्यवाही होनी चाहिए.

भानू प्रताप सिंह

प्रखंड कॉग्रेस अध्यक्ष
शंभुगंज जिला- बांका

सरकार कीयोजना के तहत गांव -गांव सोलर लाईट लगाकर रौशन करने की थी .लेकिन सरकारी कमीर्यो एवं पंचायत प्रतिनिधियों की मिली भगत से सरकारी योजनाओ मेंभारी लुट हुई है.सरकारी कर्मी एवं पंचायत प्रतिनिधियो ने मिलीभगत से गांव की बजाय अपने पौकेट को ही रौशन कर लिया .जिससे आम जनता को सरकारी योजना का लाभ नही मिल सका.प्रशासन के द्वारा दोषीयों पर कड़ी कार्यवाही होनी चाहिए.

बालेश्वर गाँधी

प्रखंड अध्यक्ष
जदयू-शंभुगंज जिला- बांका

शंभुगंज प्रखंड में सोलर लाईट मामले की जानकारी प्राप्त हुई है. इस संबंध मे जिला प्रशासन के निंदेश की प्रतिक्षा है. इस मामले से संबंधित जो भी निंदेश प्राप्त होगा . उसकेअनुरूप दोषीयो पर त्वरित कार्यवाही की जाएगी.

सुरेन्द्र प्रसाद

प्रखंड बिकास पदाधिकारी
शंभुगंज जिला - बांका

पर्यावरण के दुश्मन हैं प्लास्टिक व पॉलिथिन

विकास की दौड़ ने दुनियां को बहुत कुछ दिया है पर बहुत से बहुत ज्यादा उससे छीना भी है। जहां इस विकास ने उसे उत्पादन की नई से नई तकनीकें दी हैं। विज्ञान के उपहार दिए हैं, भारी संख्या में उद्योग दिए हैं, वहीं उससे प्रकृति की निकटता, शांत रम्य वातावरण, चैन की नींद और स्वच्छ वातावरण के वरदान छीन लिए हैं।

प्रगति व प्रदूषण

आज के मानव ने भौतिक विकास के नए आयाम स्थापित कर दुनिया को मुट्ठी में कर लिया है। आज दुनिया भर में विमानों, रेलों,बसों, कारों, और दूसरे संसाधनों के साथ मोबाइल फोन के जरिये घूमना व संपर्क करना आज बहुत ही आसान हो गया है। हर पल कारखाने तरह - तरह के उत्पाद उगल रहे हैं, विकास और विनाश दोनों के लिए हमारे पास आणविक और परमाणविक के साथ ही इससे भी बड़ी ऊर्जा शक्तियां हैं। रहना, खाना, पीना, घूमना आसान हो गया है पर इतनी प्रगति के बावजूद मुश्किल हुआ है तो चैन से जीना, स्वस्थ रहना और अपने पर्यावरण को बचाना। इसकी सबसे बड़ी वजह है लगातार बढ़ता प्रदूषण का स्तर। आदमी ने खुद की तरक्की के
लिए सबसे ज्यादा प्रहार पर्यावरण पर ही किया है।

बस नारा न रहे 'पर्यावरण बचाओ

हालांकि 'पर्यावरण बचाओ का नारा मानव की चिंता को जाहिर करता है और बताता है कि जो कुछ हो रहा है उससे वह अनभिज्ञ नहीं हैं। उसके ऊपर पर्यावरण का जो भीषण संकट मंडरा रहा है उससे वह वाकिफ है पर मजे की बात यह है कि नारा अपनी जगह कायम है और पर्यावरण को बिगाड़ा, प्रदूषित करना अपनी जगह जारी है।

कितने खतरे

उद्योग, परिवहन, संचार, विज्ञान के नाम पर लगातार होता प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, वृक्षों का बढ़ता अंधाधुंध कटान, बनती ऊंची - ऊंची इमारतें, बढ़ती सड़कें, उद्योग व फैक्ट्रियां, हर हाथ में आता मोबाइल, हर घर एक न एक वाहन, शान की प्रतीक बनती बड़ी गाडि□ां शहरों में असहनीय स्तर तक जाता शोर और जल,वायु और आकाशीय प्रदूषण ने तो जीना मुहाल कर दिया है औरे सौ में से करीब 7० लोगों के जीवन पर कैंसर जैसी घातक बीमारी का खतरा भी मंडरा रहो है। इन सारी वजहों से आज।

चिंता व चिंतन का विषय

आज पर्यावरण दिवस के बहाने से गौर करने की जरुरत है कि आज पर्यावरण इतना प्रदूषित क्यों हो रहा है और उसे बचाने के लिए मई के महीने में भी ओला वृष्टि के समाचार हैं तो दिसंबर में भी तापमान 4० डिग्री तक जा रहा है। मौसम चक्र, जलवायु, मानसून, वर्षा, गर्मी, सर्दी सब के सब गड़बड़ा गए हैं और हम हर सांस के साथ जितना जहरे पीने के लिए बाध्य हैं। चिंतन का विषय है कि आखिर उससे कैसे बचा जा सकता है। आज यदि महानगरों में रहने वालों के जीवन पर नजर डालें तो वह कितनी बीमारियों से ग्रस्त व त्रस्त मिलते हैं, सब्जियां, फल, भोजन, हवा,पानी सबके सब इतने प्रदूषित हो गए हैं कि यह तय कर पाना मुश्किल हो गया है कि क्या खाया जाए व क्या छोड़ा जाए। शहरों ही नहीं गांवों में भी अब शुद्ध हवा व पीने योग्य पानी मिलना दूभर है, लगातार बढ़ते जल व वायु प्रदूषण से वहां का जीवन नारकीय हो गया है।

इस प्रवृत्ति को रोकें

वायु मंडल में सी एफ सी गैसों का उत्सर्जन लगातार बढ़ रहा है,वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, मिथेन, नाइट्रोजन, धुआं, धूल व वाहनों से निकला हुआ पेट्रोल व डीजल मिश्रित उत्सर्जन बढ़ रहा है, सरकार जब एक खास किस्म के वाहनों पर रोक लगाती है तो कंपनियां उसी वाहन को घटे दामों में बेच खुद को तो बचा लेती हैं पर पर्यावरण को खतरे में डाल देती हैं। इस प्रवृत्ति को रोकना होगा।

प्रदूषण के कारण

पर्यावरण प्रदूषण के कारणों पर जब एक नजर डालते हैं तो तेजी से बढ़ता औद्योगीकरण, बढ़ती हुई जनसंख्या, रासायनिक पदार्थों का अतिशय प्रयोग, रेडियोधर्मी विकिरण,पराबैंगनी किरणों का वायुमंडल में प्रवेश, ओजोन परत का क्षय, 'एसिड रेन , वाहनों से निकलता धुआं, फैक्ट्रियों के अपशिष्ट, हवा में जहरीली गैसों का सम्मिश्रण,एटामिक रिएक्टरों की बढ़ती संख्या, लगातार बढ़ते मोबाइल फोन नोन बायोडिग्रेडेबल उत्पाद च प्लास्टिक तथा पोलिथिन को बढ़ता प्रयोग,शोर आदि न जाने कितने ही कारण मौजूद हैं जो कि स्वयं मानव ने ही तैयार किये हैं यानी हमने खुद ही अपने लिए जाल बुन रखा है पर्यावरण प्रदूषण के रूप में।

आफ्टर इफेक्ट्स

मगर जब बात आती है समाधान की तो आम आदमी सरकार पर और सरकार एक्सपर्ट पर निर्भर हो जाते हैं, न आम आदमी अपना दायित्व निभाने को तैयार है और न ही सरकार कुछ ज्यादा करने की इच्छा शक्ति दशार्ती है।

जब पर्यावरण प्रदूषण के 'आफ्टर इफेक्ट्सइकी बात करते हैं तो एक भयावह मंजर सामने खड़ा नजर आता है। पर्यावरण प्रदूषण की वजह से ग्रीनहाउस गैसों की मात्र बढ़ रही है, ग्लोबल वार्मिंग का खतरा चारों ओर से मंडरा रहा है और यदि इस संदर्भ में पुख्ता इंतजाम न किये गये तो वह दिन भी बहुत दूर नहीं मानना चाहिए जब सारी दुनियां जल प्रलय का सामना कर रही होगी क्योंकि लगातार बढ़ते हुए धरती के तापमान के चलते ग्लेशियर्स के पिघलने का खतरा सर पर है और यदि यह हो गया तो पूरी धरती को जलमग्न होने कोई नहीं रोक पायेगा।

क्या है समाधान ?

जहों पर्यावरण प्रदूषण पूरी की पूरी सृष्टि को निगलने की ताकत रखता है और हम खुद ही उसे ताकत देने में लगे हैं। वक्त की मांग है कि हम पर्यावरण प्रदूषण को तो रोकें ही, स्वयं भी पर्यावरण की रक्षा के प्रति सजग रहें। खुद भी उसे हानि न पहुंचाएं और दूसरों को इस सम्बन्ध में जागरुक करें क्योंकि पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तभी तो हम सब सुरक्षित रह पाएंगे।

आज से ही पर्यावरण संरक्षण की शुरूआत कर दें और इसके लिए सब लोग एक एक पौधा रोप कर उसकी देखभाल करें, हरे वृक्ष न काटें और न ही काटने दें, पशु पक्षियों व जीव जंतुओं का ख्याल रखें क्योंकि ये हमारे पर्यावरण के सबसे बड़े शुभेच्छु हैं, कछुए, मछली, सुअर, बाज, गिद्ध, चील, आदि वातावरण को लगातार साफ करने वाले जीव हैं। वाहन के प्रयोग में 'पूलइ सिस्टम का प्रयोग करें, साइकिल या पैदल चलने को प्राथमिकता दें, प्लास्टिके व उससे बने रैपर, थैलियों, पॉलिथिन का प्रयोग न करें, खरीदारी के समय घर से थैला लेकर जाएं, पॉलिथिन को 'नइ कहना सीखें। अगर इतना भी हम कर पाये पर्यावरण के संरक्षण में हम भारी योगदान दे सकते हैं।

दो दुश्मन प्लास्टिक व पॉलिथिन

और हां, पर्यावरण के सबसे बड़े दुश्मनों से एक है प्लास्टिक। यह फेंका जाता है तो जल, धरती वायु सबको प्रदूषित करने में यह सबसे आगे रहता है न यह गलता है, न ही आसानी से नष्ट होता है तथा जीव जंतुओं के साथ ही मनुष्यों के स्वास्थ्य व जीवन के लिए बहुत ही घातक सिद्ध होता है। प्लास्टिक का ही दूसरा भाई है पॉलिथिन। पॉलिथिन के उपयोग को रोकने में सरकार का हर प्रयास विफल ही हो रहा है क्योंकि यह अपेक्षाकृत सस्ता उपयोग में सरल है। पॉलिथिन बैग्स यानी थैलियां तो आज हमारे जीवन की अभिन्न अंग बन गई हैं। बाजार से अधिकांश सामान लेकर ये घर आती हैं और बाद में जी का जंजाल सिद्ध होती हैं। नालियां चोक करने से लेकर मवेशियों का जीवन लेने तक, भूमि की उर्वरा क्षमता को खत्म करने व शरीर में कैंसर तक पैदा करने में पॉलिथिन जिम्मेदार है। अब कैसे भी हमें इसका उपयोग बंद नहीं तो कम तो करना ही होगा।

चलते - चलते एक बात और पर्यावरण की चिंता करना या प्रदूषण को खत्म करना केवल एक दिन की ही बात नहीं रहनी चाहिए अगर हमें मानव व मानवता के इस सबसे घातक शत्रु से लड़ना व इसे खत्म करना है तो हर रोज ही सजग रहना होगा और आने वाली पीढ़ी को भी इस हेतु प्रशिक्षित व तैयार करना होगा।

हाथों में मेहंदी का रंग गहरा करने के 5 टिप्स

मेहंदी से रचे हाथ किसे अच्छे नहीं लगते! जिनके हाथों में मेहंदी लगती है वे उसके रंग को गहरा होने के इंतजार में लंबे समय तक बिना हाथ-पैरों को धोए इंतजार करते हैं। पतियों को भी अपनी पत्नी के मेहंदी से

सजे भीनी-भीनी महक लिए हुए हाथ बेहद सुंदर लगते हैं और ये माहौल को सुहाना कर देते हैं। शादी-ब्याह हो या तीज-त्योहार मेहंदी के बिना हर खास अवसर अधूरा सा लगता है। मेहंदी यदि गहरी रचे तो उसे गहरे प्यार की निशानी तक माना जाता है। ऐसे में हर लड़की व महिला यही चाहती है कि उनकी मेहंदी का रंग सबसे गहरा हो।

1. मेहंदी लगाने से पहले हाथों को अच्छी तरह से साफ करें और नीलगिरी या मेहंदी का तेल जरूर लगाएं। यह तेल बाजार में आसानी से उपलब्ध होता है।
2. मेंहदी को आप जितना अधि?क समय हाथों में लगाए रख सकते हैं लगाएं, लेकिन कम से कम 5 घंटे तक मेहंदी उसी तरह लगी रहने दें। उसे निकालें नहीं।
3. मेहंदी जब हल्की-हल्की सूख जाए, तो उसे पर नींबू और शक्कर का मिश्रण लगाएं, ताकि वह सूखने के बाद निकले नहीं। इस मिश्रण का प्रयोग मेहंदी को अपने स्थान पर चिपकाए रखने के लिए होता है।
4. जब भी मेहंदी को अपने हाथ से निकालें, हाथों पर पानी न लगनें दें, अन्यथा मेहंदी का रंग गहरा होने की संभावना कम हो जाएगी।
5. मेहंदी का रंग हल्का होने पर आप इसपर बाम, आयोडेक्स, विक्स या सरसों का तेल लगा लें। यह सभी चीजें हथेली को गर्माहट देती हैं, जिससे मेहंदी का रंग धीरे-धीरे गहरा हो जाता है।

रंगबिरंगा आहार, सेहत का आधार

क्या आप जानते हैं कि संतुलित आहार प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि आप अलग-अलग रंगों का भोजन खाएं? जी हां, वैज्ञानिकों ने यह पाया है कि अलग-अलग रंगों के खाद्य पदार्थ आपके शरीर के अलग-अलग हिस्सों को फायदा पहुंचाते हैं... आइए देखें कौन-सा रंग शरीर के किस अंग का मित्र है :

लाल

यदि आप दिल की रक्षा करना चाहते हैं तो लाल रंग की चीजें खाइए। लाल तथा गुलाबी रंग के फल-सब्जी में फायटोकेमिकल्स पाए जाते हैं। तरबूज, अमरूद, टमाटर आदि इस श्रेणी में आते हैं। स्ट्रॉबेरी, रसबेरी तथा बीटरूट में एंथोसायनिन पाए जाते हैं। यह फायटोकेमिकल्स का ही एक समूह है, जो उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है और डायबिटीज से जुड़ी समस्याओं से बचाव करता है।

हरा

हरे फल-सब्जियों में लूटीन व इंडोल नामक फायटोकेमिकल्स होते हैं, जो लीवर की रक्षा करते हैं। अतः हरे रंग की चीजें खूब खाएं।

जामुनी

यदि आप अपने मस्तिष्क की सलामती चाहते हैं तो जामुनी फल-सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। इनमें अंगूर, प्याज, जामुनी रंग की पत्तागोभी, बैंगन आदि शामिल हैं।

काला

काला रंग लोगों को कम ही पसंद होता है, खास तौर पर खाने-पीने के मामले में, लेकिन यकीन मानिए, काले रंग का आहार आपके गुर्दों के लिए बहुत लाभकारी होता है। अतः मुनक्का, काली चवला फली, काले जैतून आदि खाया करें।

सफेद

आलू, लहसुन, सफेद मशरूम आदि आपके फेफड़ों के लिए फायदेमंद होते हैं।

नारंगी

प्लीहा की सलामती के लिए नारंगी रंग की चीजें खाना फायदेमंद होता है। संतरों में विटामिन-सी तो होता ही है, कुछ मात्रा में विटामिन-ए भी होता है, जो प्लीहा के लिए अच्छा होता है।

स्वरोजगार

नमकीन उद्योग : कम लागत में अच्छा मुनाफा

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की बड़ी समस्या है। ग्रामीण युवा शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। यदि उनको ग्रामीण क्षेत्रों में ही रोजगार मिले तो अपने परिवार के साथ आसानी से खा कम सकते हैं। कुछ ऐसे उद्योग धंधे हैं जिनको ग्रामीण स्तर पर कम लागत में शुरू करके अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। आज के समय में खाने की चीजे हर किसी की जरुरत है। खाद्य उत्पाद की मार्केट में भारी मांग है। कई सारी कम्पनियां भारतीय बाजार में अलग-अलग तरह के खाद्य उत्पादों का प्रोडक्शन कर अच्छा खासा पैसा कमा रहे हैं। खाद्य उत्पादों की जरुरत लगभग हर घर में है। सबकुछ बिकना बंद हो सकता है लेकिन खाद्य उत्पादों की बिक्री कभी बंद नहीं हो सकती। नमकीन उद्योग एक ऐसा ही लघु उद्योग है जिससे कि ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगो को अच्छा फायदा मिल सकता है। इस उद्योग को आप अपने घर बैठे या बड़े स्तर पर शुरू कर सकते हैं। नमकीन एक ऐसा उत्पाद है जो भोजन के साथ-साथ हर घर में खाया जाता है। नमकीन भोजन का स्वाद चार गुना बढ़ा देती है। इतना ही नहीं जब घर मेहमान आते हैं तो नाश्ते आदि में भी नमकीन परोसी जाती है। शादी हो या बर्थ डे पार्टी हर प्रोग्राम में नमकीन उत्पाद को शामिल किया ही जाता है। इस उत्पाद की मांग जितना बाजार में बहुत है। ज्यादा तो आप खुद इसकी वास्तविकता से परिचित होंगे। ये बिजनेस शुरू करने के लिए आपको सरकार से लोन भी मिल जाता है।

कैसे शुरू करें नमकीन उद्योग

इस बिजनेस को शुरू करने के लिए सबसे पहले आपको कुछ जरूरी रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया पूर्ण करनी होती है। आपको अन्य बिजनेस की तरह इसमें भी रजिस्ट्रेशन कराना है साथ ही स्नस्र्द्ध से आपको लाइसेंस लेना अनिवार्य होगा। इसके बाद लगभग 1000 स्क्वायर फीट की जगह की आपको जरूरत होगी। अगर आपके घर इतनी जगह अवेलेबल हैं तो अच्छी बात है बाकि आपको जगह किराये लेनी होगी।

नमकीन बनाने की मशीन

इसके बाद आपको दो मशीनों की जरूरत होगी। पहली मशीन नमकीन बनाने के लिए जिसका नाम सेव मैकिंग मशीन होता है कि जरूरत होगी। दूसरी मशीन फ्राय करने के लिए जिसका नाम फ्रायर मशीन होता है कि जरूरत होगी। ये मशीन आपको आपके नजदीकी बाजार या ऑनलाइन मार्केट इंडिया मार्ट पर आसानी से मिल जाएगी। ये दोनों मशीन आपके 50 से 60 हजार रुपये तक आ जाएगी। इसके बाद यदि आप इसे एक बड़े स्तर पर करना चाहते हैं तो कमर्शियल बिजली कनेक्शन ले ताकि आपको बिजली खर्च में कुछ फायदा हो सके। इसके बाद आपको नमकीन बनाने के लिए रॉ मैटेरियल की आवश्यकता होती है। इसके बाद आपको 3 से 5 वर्कर्स की आवश्यकता होगी। यदि आप अपने घर के सदस्यों के मदद लेते हैं तो भी ले सकते हैं या कुशल वर्कर्स को काम पर रख सकते हैं। इसके बाद आपको कुछ पात्रों की जरूरत होगी जिनमें आपको नमकीन निकालनी होगी और नमकीन निकालने के लिए एक बड़ा जार जो होता है उसकी जरूरत भी होगी। कुछ पात्र आपको बड़े आकार के रखने होंगे जिनमें ज्यादा मात्रा में नमकीन सेफ रख सके।

रॉ मैटेरियल क्या होगा और कहां से मिलेगा

नमकीन बनाने के लिए आपको जिस रॉ मैटेरियल की जरूरत पड़ेगी उसमें बेसन, नमक और रिफाइन आयल आदि की जरूरत पड़ती है। ये रॉ मैटेरियल आपको कहीं भी मिल जाएगा। आपके नजदीकी किराना स्टोर से लेकर हर दुकान पर ये माल होता है। आपको ये रॉ मैटेरियल किसी बड़ी होलसेल की दुकान से खरीदना होगा। आप रिफाइन ओइल किसी ऑइल की कम्पनी से सीधे भी कम कीमत में खरीद सकते हैं। बेसन आपको 35 रुपये किलो और रिफाइन ओइल अलग-अलग रेट में मिल जाएगा 50 लीटर का डिब्बा आपको 500 रुपये के हिसाब से मिल जाएगा।

प्रोडक्शन कैसे होगा

सबसे पहले आपको बेसन लेना है उसमें आपको निर्धारित मात्रा में ओइल और नमक मिलाकर पानी से गूथना होता है। इसके बाद इसे आपको सेव मैकिंग मशीन के अंदर निश्चित मात्रा में डालना होता है जो फ्राई मशीन में लगी कड़ाई में डाले ओइल में जाकर फ्राइ होने लगते हैं इसके बाद फ्राइ होते ही आप इसे निकाल ले आपकी नमकीन बनकर तैयार हो जाएगी।

मार्केट में कहां और कैसे बेचे

आपकी नमकीन बनने के बाद आप या तो इसे बिना पैकेजिंग के सीधे मार्केट में होलसेल रेट में बेच सकते हैं और दूसरा आप अपनी नमकीन के पैकेट बनाकर अपनी कम्पनी का लेबल लगाकर इसे अपने शहर या गांव की नजदीकी दुकानों पर बेच सकते हैं। सबसे पहले आपको जितना हो सके अपने उत्पाद का प्रचार करना होगा। आप चाहे तो अपने आस-पास के लोगों को नमकीन कम रेट में रोजाना सेल कर सकते हैं। शहरों में नमकीन की दूकानें अलग से होती है आप उन दुकानों पर अपना उत्पाद ज्यादा मात्रा में सेल कर सकते हैं।

मुनाफा कितना होगा

नमकीन बनाकर बेचने में आपको लागत 1 किलो प्रति पर यदि 65 रुपये लगते हैं और आप इसे 85 रुपये प्रतिकिलो के हिसाब से बेचते हैं तो एक किलो पर 20 रुपये कमाते हैं। यानि एक दिन में यदि आप 100 किलो का प्रोडक्शन करते हैं तो एक दिन के 2000 रुपये अर्थात एक महीने के कम से कम 60000 रुपये कमाते हैं।

इन बातों का ध्यान रखना होगा

नमकीन बनाने के उद्योग में आपको कई बातों का ध्यान रखना होता है।सबसे पहले सरकार द्वारा बनाए गए सभी नियमों का पालन कर अपनी कम्पनी का रजिस्ट्रेशन कराकर लाइसेंस प्राप्त कर ले।मशीन की नियमित देखभाल और उसकी सर्विसिंग पर ध्यान दें।मार्केट से रो मेटेरियल शुद्ध और साफ खरीदें। रो मेटेरियल हमेशा अपने प्रोडक्शन के हिसाब से ही खरीदे।इसके साथ ही हमेशा अपने प्रोडक्शन के हिसाब से ही नमकीन बनाए।नमकीन बनाते समय ध्यान रखें कि उस मैटेरियल में कुछ गिरे नहीं। साथ ही ध्यान रखें कि नमकीन बनाने के लिए ओइल अच्छी क्वालिटी का हो।नमकीन बनाते समय गंदे हाथों का इस्तेमाल न करें। हमेशा स्वच्छता का ध्यान रखते हुए नमकीन बनाए।सही मात्रा में मापकर ही पैकेजिंग करें।यदि आप खूली नमकीन बेच रहे हैं तो जिस दिन आपने नमकीन का प्रोडक्शन किया है उसी दिन उसे मार्केट में बेच दे।नमकीन में स्वाद के लिए आप कुछ और मसाले भी मिला सकते हैं, जिनमें अजवाइन,पौदिना आदि हो सकता है।इन सभी बातों का ध्यान रखते हुए आप नमकीन बनाने का उद्योग शुरू कर पाएंगे।

'भारत' में काम करने को लेकर रोमांचित हैं

कैटरीना कैफ

बॉलीवुड की बार्बी गर्ल कैटरीना कैफ फिल्म भारत में काम करने को लेकर रोमांचित हैं। बॉलीवुड निर्देशक अली अब्बास जफर फिल्म भारत बनाने जा रहे हैं। फिल्म में सलमान खान के अपोजिट प्रियंका चोपड़ा का चयन किया गया था लेकिन उन्होंने अब यह फिल्म छोड़ दी है। कहा जा रहा है कि कैटरीना अब फिल्म भारत में मुख्य भूमिका निभायेंगी। कैटरीना ने कहा अली अब्बास जफर मेरे काफी अच्छे दोस्त हैं। हमने सबसे पहले फिल्म मेरे ब्रदर की दुल्हन में काम किया था जिसके बाद टाइगर जिंदा है में काम किया। दोनों ही फिल्में बड़ी हिट थीं और उससे भी ज्यादा अहम यह था कि अली के साथ करने में मुझे बहुत मजा आया। उन्होंने जब भारत को लेकर मुझसे संपर्क किया तो कहा, कटरीना... वह मुझे गोल्डफिश बुलाते हैं। उन्होंने कहा, गोल्डफिश मैं तुम्हें स्क्रिप्ट भेज रहा हूं। उसे पढ़कर बताना कि तुम क्या सोचती हो। मैं किरदार को लेकर काफी एक्साइटेड थी और फिल्म का हिस्सा बनकर खुश थी।' कैटरीना से सवाल किया गया कि क्या वह फिल्म में प्रियंका चोपड़ा को रिप्लेस करने को लेकर चिंतित हैं। इस पर उन्होंने कहा, 'मैं जिस तरह फिल्मों का चुनाव करती हूं, वैसे ही मैंने भारत का भी चुनाव किया। ऐसे में मेरे लिए टीम के साथ फिर से काम करना काफी अच्छा एक्सपीरियंस होगा। स्क्रिप्ट शानदार है और मुझे अपना किरदार काफी पसंद है।'उल्लेखनीय है कि फिल्म 'भारत' साउथ कोरिया की फिल्म 'एन ओड टू माई फादर' का ऑफिशल रीमेक है। इस फिल्म को सलमान खान के जीजा अतुल अग्निहोत्री प्रोडयूस कर रहे हैं। यह फिल्म अगले साल ईद के अवसर पर रिलीज होगी।

एक सुनहरा मौका

CB News

चर्चित बिहार

दिल्ली से प्रकाशित हिंदी राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

www.charchitbihar.com

ऑनलाइन वेब न्यूज़ चैनल

9431006107,
9999357107,
9939815347

The Project is conceptualised keeping in mind all the necessary facilities required to have a pleasant stay. Looking for space,comfort a touch of luxury?This is the perfect place for you!The Property is well designed with modern architecture situated in a peaceful residential area,yet you are only a few short minutes drive from shopping complex,Restaurant,schools and the rest part of the city.Inside you will find plenty of luxurious touches and all necessary facilities required for a good experience.

- Rajesh singh CMD

HOTEL/GUEST HOUSE
HAPPY JOURNEY

HAPPY JOURNEY

HOTEL / GUEST HOUSE

RAJIV NAGAR ROAD N.-14,
NEAR V MART MALL, PATNA

Chandrabhan Singh :- 7979877330

Sudhansu Shekhar :-8210429512

अनारा गुप्ता का धमाकेदार भोजपुरी वर्ल्ड में वापसी

जम्मू कश्मीर में जन्मी मुंबई को बनाया कर्मस्थली और बिहार यूपी की सुपर स्टार अनारा गुप्ता हिन्दी और भोजपुरी फिल्मों की अभिनेत्री हैं. लेकिन उन्हें मुख्य तौर पर भोजपुरी फिल्मों में अभिनय के लिये जाना जाता हैं. उनका जन्म 29 अगस्त 1986 को जम्मु मे हुआ था. उन्होंने साल 2001 में मिस जम्मू का खिताब जीता.

अनारा ने 2005 में फिल्मों में कदम रखा. उन्होंने खुद की जिंदगी पर बनी फिल्म 'मिस अनारा' में काम किया. फिल्म 2007 में रिलीज हुई, लेकिन इसे ज्यादा सफलता नहीं मिली. बॉलीवुड में सफल ना होने पर अनारा ने भोजपुरी फिल्मों की तरफ रूख किया. उन्होंने हमसे बढ़कर कौन, राम लखन, अंतिम तांडव जैसी फिल्मों में नजर आई. दो दर्जन से ज्यादा सुपरहिट भोजपुरी फिल्मों में नजर आ चुकी अनारा गुप्ता भोजपुरी में 50 से ज्यादा फिल्में की हैं साथ ही साथ स्टेज शो के माध्यम से देश और विदेश तक में फैंश की चहेती है। विगत 2 वर्षों के लिए भोजपुरी सिनेमा सेपरेट ले चुकी भोजपुरी के सुपरस्टार अदाकारा अनारा गुप्ता ख्याति सिंह की फिल्म बलमुआ तोहरे खातिर से भोजपुरी फिल्मों में वापसी कर रही है बातचीत के क्रम में अनारा ने बताया कि भोजपुरी में उनके लाखों चाहने वाले फैंस है। व्यक्तिगत कारणों से उन्होंने भोजपुरी सिनेमा से ब्रेक लिया था अपने चाहने वालों के अनुरोध पर भोजपुरी सिनेमा में वापसी कर रही है। अपने साथ समय-समय पर जुड़ने वाले विवादों के सवाल पर उन्होंने कहा कि वह साफ दिल की है पर दुनिया ऐसी नहीं मतलबी लोग उनके चेहरे और नाम का इस्तेमाल पर साजिश रचते रहते है पर ईश्वर उनके साथ है। बिग बॉस में जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि बहुत से अवसर आया था पर उन्होंने मना कर दिया क्योंकि शौहर के साथ एक सेल्फी बिग बॉस के घर के अंदर शादी करनी पड़ेगी पर वह फिलहाल मानसिक रूप से शादी के लिए तैयार नहीं है। भोजपुरी सिनेमा में वापसी पर अनारा ने कहा कि उनके पास कई बड़े बजट की फिल्में हैं पर अब वह सशक्त किरदार वाली फिल्मों का ही चयन कर रही हैं। भोजपुरी सिनेमा में एक कमी पहचान बना चुकी अलार्म में स्वीकार किया कि भोजपुरी फिल्मों में अभिनेत्रियों के साथ न्याय नहीं हो पाता नायकों के लिए निमार्ताओं के पास जो बड़े बजट

होते हैं पर अभिनेत्रियों की हकमारी हो जाती हैं आपको इंडस्ट्री में रहना है इस कारण आप चाहकर भी आवाज नहीं उठा पाते अश्लीलता के सवाल पर उन्होंने कहा कि एल्बम गाने वाले लोग और सस्ती लोकप्रियता के बल पर जल्दी सफलता के मुकाम आने का ख्वाब देखने

वाले लोग ही गंदगी फैलाते हैं उन्होंने कहा कि सेंसर बोर्ड का काम है फिल्म पर कैसे चलाना पर कुछ तथाकथित लोग भोजपुरी सिनेमा के बारे में अनाप-शनाप प्रचारित-प्रसारित कर भोजपुरी के खेवनहार बनने का ख्वाब देखते है भोजपुरी काफी समृद्ध भाषा है। बिहार में सिनेमाघरों की स्थिति बेहद दयनीय इस कारण से चाहकर भी भोजपुरी के दर्शक भोजपुरी फिल्मों को देखने सिनेमाघरों तक नहीं आ पाते सरकार को भोजपुरी फिल्मों के विकास के लिए बिहार यूपी में भोजपुरी फिल्मों को टेक्स फ्री करना चाहिए तथा सिनेमाघरों की स्थिति भी सुधारनी चाहिए। अपने नए लुक के बारे में अनारा ने कहा की उन्होंने वजन कम किया है अब वह एक नए रूप में भोजपुरी सिनेमा में नजर आएंगी ।